परमेश्वर की रचना - आपका चुनाव

God's Design - Hindi

परमेश्वर की योजना– आपका चुनाव

लेखक
जे० लॉवैल हारुप

अनुदित
डॉ० विश्वास नाथ 'प्रशान्त'
आई० सी० आई० इन्टरनेशनल ऑफिस स्टाफ
के सहयोग से तैयार किया गया अध्ययन

अनुदेशात्मक विशेषज्ञः मार्सिया मुन्गर
चित्र निर्देशन जॉन लिन्डसे बीडमैन

प्रकाशक
इन्टरनेशनल कॉरेसपोन्डेन्स इन्स्टीट्यूट
पोस्ट बैग नं० 1, एन्ड्रूज गंज
नई दिल्ली-110 049

CL 1310-HV

© 1992 सर्वाधिकार सुरक्षित
इन्टरनेशनल कॉरेसपोन्डेन्स इन्स्टीट्यूट

विषय-सूची

	पृष्ठ
आइए, पहिले कुछ बात करें	5
पाठ	
1. क्या परमेश्वर के पास वास्तव में कोई योजना (रूपरेखा) है?	10
2. क्या परमेश्वर मुझे बताएगा कि आगे क्या करूं?	29
3. क्या परमेश्वर बहुत अधिक अपेक्षा करता है?	49
4. क्या मैं परमेश्वर की योजना (रूपरेखा) से अलग हूं?	72
5. क्या मसीही होना ही पर्याप्त है?	92
6. परमेश्वर मुझसे कैसे बात कर सकता है	112
7. क्या यीशु परमेश्वर की योजना (रूपरेखा) को जानता था?	134
8. मैं भविष्य में कैसे पहुंचूं?	151

आइए पहिले कुछ बात करें

आपकी अध्ययन पुस्तक के लेखक की ओर से.....

क्या इस बात के लिए आप कभी आश्चर्यचकित हुए कि परमेश्वर ने आपके जीवन के लिए कोई योजना बनाई है? शायद आप एक नए विश्वासी हैं। हो सकता है कि आप अनेक वर्षों से मसीही हैं। परन्तु जैसे-जैसे आप प्रभु की संगति करते जाते हैं आपके मन में नीचे दिए गए जैसे प्रश्न उठे होंगे:

अब मैं एक मसीही हूँ और अब परमेश्वर मुझसे क्या चाहता है कि मैं करूँ? इसके बारे में वह मुझे कैसे बताएगा? जब मैं यह जान लेता हूँ कि परमेश्वर मुझ से क्या चाहता है तो मैं उसे करना आरंभ कैसे करूँ? जब कठिनाइयाँ और संकट आते हैं तो क्या मैं यह समझूँ कि मैं उसकी योजना से अलग हो गया हूँ? भविष्य के विषय में कौन सी बातें हैं? क्या वह मुझे इसके बारे में भी बताएगा? परमेश्वर जो कुछ मुझ पर प्रकट करता है उसे मैं किस प्रकार करूँ?

यह पाठ्यक्रम इस रूप में तैयार किया गया है कि इन प्रश्नों के उत्तर पाने में यह आपकी सहायता करे। जब आप प्रत्येक पाठ का अध्ययन करते हैं तब आप अपने लिए परमेश्वर की योजना को और अच्छी तरह से मालूम करते हैं और यह भी जान लेते हैं कि इस पर चलने के लिए कैसे चुनाव करें। आप यह भी खोज करेंगे कि आप भी उसकी योजना के भाग हैं। आप यह भी मालूम करेंगे कि परमेश्वर आपको यह भी बताना चाहता है कि वह आपसे क्या चाहता है। आप जिन सच्चाइयों के विषय में सीखते हैं उन्हें आप अपने मसीही जीवन में प्रतिदिन लागू कर सकेंगे।

यह पाठ्यक्रम, सिखाने के लिए आधुनिक तरीके का उपयोग करता है। जिससे कि आप सिद्धांतों को सरल ढंग से सीखकर तुरन्त व्यवहार में ला सकेंगे।

आपकी अध्ययन पुस्तक :

'परमेश्वर की योजना—आपका चुनाव' एक छोटे आकार की पुस्तक है जिसे आप कहीं भी ले जा सकते हैं; और जब भी समय मिले अध्ययन कर सकते हैं। प्रत्येक दिन कुछ समय निकालकर इसका अध्ययन किया करें।

आप देखेंगे कि पाठ के आरम्भ में ही पाठ की **विषयवस्तु** दे दी गयी है। **विषयवस्तु** या उद्देश्य शब्द का प्रयोग इस पुस्तक में इसलिए किया गया है कि अपेक्षित अध्ययन को समझने में आपकी सहायता करे। विषयवस्तु एक प्रकार से लक्ष्य या एक अभिप्राय का द्योतक है। यदि आप पाठ की विषयवस्तु अथवा उद्देश्यों पर ध्यान देकर मन में रखेंगे तो आपका अध्ययन वास्तव में लाभदायक होगा।

प्रत्येक पाठ के पहले दो पृष्ठों का अध्ययन करना न भूलें। इन्हीं के अध्ययन से आगे की पाठ्य-सामग्री मालूम हो सकेगी। फिर, आप पाठ के एक-एक भाग का अध्ययन करें और **आपके लिए कार्य** में दिए गए निर्देशों का पालन करें। यदि अध्ययन के प्रश्नों के उत्तर लिखने में स्थान कम पड़े तो एक अलग कापी में लिख लें। ताकि जब आप पाठ को दोहराते हैं तो ये उत्तर आपके लिए सहायक हों। यदि आप इस पाठ्यक्रम का अध्ययन एक समूह में कर रहे हैं तो समूह के अगुवे के निर्देशों का पालन करें।

अध्ययन के प्रश्नों के उत्तर कैसे दें :

इस अध्ययन पुस्तक में विभिन्न प्रश्न दिये गये हैं। नीचे विभिन्न प्रकार के प्रश्नों के नमूने और उनके उत्तर दिये जा रहे हैं।

एक से अधिक चुनाव वाले प्रश्न में आपको प्रश्न के साथ दिये गये उत्तरों में एक सही उत्तर चुनना है।

एक से अधिक चुनाव वाले प्रश्न का उदाहरण :–

1 बाइबल में कुल–
(अ) 100 पुस्तक हैं।
(ब) 66 पुस्तक हैं।
(स) 27 पुस्तक हैं।

सही उत्तर है (ब) 66 पुस्तक। आप अपनी इसी अध्ययन पुस्तक में (ब) के चारों ओर गोला बनाइये या रेखांकित कीजिए। नमूना देखिये :

1 बाइबल में कुल–
(अ) 100 पुस्तक हैं।
(ब) 66 पुस्तक हैं।
(स) 27 पुस्तक हैं।

[एक से अधिक चुनाव वाले कुछ प्रश्नों में एक से अधिक उत्तर भी सही हो सकते हैं। इस स्थिति में आप प्रत्येक सही उत्तर वाले अक्षर पर गोला बनायें या रेखांकित करें।]

एक **सही-गलत** प्रश्न में आपको दिये गये अनेक कथनों में से यह बताना है कि कौन से कथन **सही** हैं।

सही-गलत प्रश्न का उदाहरण :–

2 निम्न दिये गये कथनों में से कौन से कथन सही हैं?
(अ) बाइबल में कुल 120 पुस्तक हैं।
(ब) बाइबल आज विश्वासियों के लिए एक सन्देश है।
(स) बाइबल के सब लेखकों ने इब्रानी भाषा में ही लिखा।
(द) पवित्र आत्मा ने बाइबल के लेखकों को प्रेरित किया।

(ब) और (द) कथन सही हैं। आप इन दोनों अक्षरों के चारों ओर गोला बनाकर या रेखांकित करके अपने चुने हुए उत्तर को दर्शा सकते हैं, जैसा कि आपने ऊपर देखा है।

मिलान करने वाले प्रश्न में आपसे पूछा जाएगा कि जो दो बातें एक सी हैं उनका मिलान करें जैसे कि नाम व उससे सम्बन्धित वर्णन अथवा बाइबल की पुस्तकें और उनके लेखक।

मिलान वाले प्रश्न का उदाहरण :–

3. अगुवा के नाम का अंक प्रत्येक उस कार्य के सामने रिक्त स्थान में लिखें जो उस अगुवे ने किया था।

1. (अ) सीनै पर्वत पर व्यवस्था को प्राप्त किया 1) मूसा
2. (ब) यर्दन के पार जाने तक इस्राएलियों की 2) यहोशू अगुवाई की।
2. (स) यरीहो के चारों ओर चक्कर लगाया
1. (द) फ़िरौन के राज दरबार में रहा

(अ) और (द) वाक्य मूसा के लिए दर्शाते हैं। तथा (ब) और (स) यहोशू के लिए दर्शाते हैं। आप (अ) और (द) के सामने अंक 1 लिख सकते हैं तथा अंक 2 (ब) और (स) के सामने, जैसा कि ऊपर लिख दिया गया है।

आपकी विद्यार्थी रिपोर्ट पुस्तिका

यदि आप प्रमाण-पत्र प्राप्त करने हेतु अध्ययन कर रहे हैं तो आपको **विद्यार्थी रिपोर्ट प्रश्न पुस्तिका अर्थात् परमेश्वर की योजना–आपका चुनाव** अलग से भेजी जाएगी। इस पुस्तिका में दो भाग हैं। आपकी अध्ययन पुस्तिका यह बताएगी कि इसके दोनों भागों को कब भरना है।

इस पुस्तक के पीछे पृष्ठ 173 से 180 तक आपका उत्तर पृष्ठ दिया गया है। जब आप **परमेश्वर की योजना—आपका चुनाव** पाठों के अध्ययन को पूरा करेंगे। इसके बाद इसके पीछे दिया गया उत्तर पृष्ठ भर कर आई.सी.आई. में भेज दीजिए, फिर आपको एक आकर्षक प्रमाणपत्र प्राप्त होगा। फिर हम आपका नामांकन आगामी पाठ्यक्रम में कर सकेंगे।

लेखक के विषय में

रेव्हरेन्ड जे० लॉवैल हारूप वर्तमान में ब्रुसल्स, बेल्जियम के क्रिश्चयन सेन्टर में पास्टर हैं। ब्रुसल्स में आने से पूर्व आप वाशिंग्टन डी.सी. के पास एल्केज़ेन्ड्रिया, वर्जिनिया में तेरह वर्ष तक पास्तरीय सेवा में रहे। आपने धर्म विज्ञान की शिक्षा-दीक्षा एसेम्बलीज़ ऑफ गॉड के साउथ ईस्टर्न कॉलेज, लेकलैन्ड, फ्लोरिडा से अर्जित की।

रेव्हरेन्ड हारूप की विशेष प्रचार सेवा, परिवारिक-शिविरों (कैम्पस), सेवकगण सभाओं तथा अगुवा प्रशिक्षण सेमीनारों में रही। आपने सेकेण्डरी स्कूलों व विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों के मध्य भी सेवकाई की। आपने अपने लम्बे अनुभव और परमेश्वर के वचन के लगातार अध्ययन के परिणामस्वरूप यह पाठ्यक्रम लिखा है। विभिन्न स्तरों के लोगों को परामर्श देते रहने का अनुभव भी इसके प्रस्तुतीकरण में सहायक सिद्ध हुआ है।

अब आप पाठ I का अध्ययन आरंभ करने के लिए तैयार हैं। आपके अध्ययन पर और आपको परमेश्वर आशीष दे।

पाठ–एक

क्या परमेश्वर के पास वास्तव में कोई योजना है?

"ऐसा प्रतीत होता है कि अनेकानेक बातें संयोग से हुआ करती हैं?

मिस्र में बड़े-बड़े स्मारक हैं जिन्हें पिरामिड कहते हैं। ये विशाल पिरामिड हज़ारों वर्ष से स्थिर खड़े हैं। इनके पत्थर आपस में मज़बूती से जोड़े गए हैं कि इन्हें खड़े रहने के लिए गारे (मसाले) की अक्सर आवश्यकता ही नहीं। क्या इनका निर्माण पत्थरों का ढेर लगाकर ही कर दिया गया था? नहीं, हम जानते हैं कि ऐसा नहीं हुआ।

कहीं न कहीं प्रवीण निर्माता था जो बनाने के पहले ही जानता था कि निर्मित स्मारक का रूप कैसा होगा। उसने एक नक्शा (खाका) बनाया। उसने पूरी योजना बनाई और यह निश्चय कर लिया कि पर्याप्त सामग्री उपलब्ध है। तब हज़ारों पुरुषों को काम पर लगाया और निर्देश दिए कि प्रत्येक आदमी अपना काम करेगा। इस में शंका नहीं कि उनके एक साथ कार्य करने से कई समस्यायें भी उठ खड़ी हुईं। कुछ तो काम छोड़कर भाग गए और कुछ ने अपना कार्य ठीक से नहीं किया। परन्तु मालिक जो निर्माता था वह निर्माण कार्य में तब तक लगा रहा जब तब कि पिरामिड बनकर तैयार न हो गए।

कल्पना कीजिए पत्थरों के विशाल ढेरों के साथ हज़ारों आदमी! यदि योजना (खाका) न बनायी गयी होती तो क्या बनता? इस पाठ में आप परमेश्वर की योजना (रूपरेखा, खाका) के विषय सीखेंगे। इससे भी अधिक आप यह जानने पाएँगे कि आपके लिए परमेश्वर के पास एक योजना, एक नक्शा है।

इस पाठ में आप सीखेंगे...

- प्रत्येक वस्तु के लिए परमेश्वर के पास एक नक्शा (योजना) है।
- लोगों के लिए परमेश्वर के पास नक्शा (योजना) है।
- दूसरों ने परमेश्वर की योजना का अनुभव किया है।
- आप भी परमेश्वर की योजना का अनुभव कर सकते हैं।

यह पाठ आपकी सहायता करेगा...

- "परमेश्वर की योजना" इस विचार को समझाने की व्याख्या करने में।
- लोगों के लिए परमेश्वर की योजना की विशेषताओं का वर्णन करना।

- बाइबल के चरित्रों के जीवित-अनुभवों से परमेश्वर की योजना के विषय में मुख्य-मुख्य बातों को जानना।

प्रत्येक वस्तु के लिए परमेश्वर के पास एक योजना है

विषयवस्तु (उद्देश्य) । : परमेश्वर की योजना के नमूने।

प्रत्येक वस्तु के लिये परमेश्वर के पास एक नक्शा, एक योजना है। उसने अय्यूब को बताया था कि उसके पास नक्शा (योजना) है कि समुद्र कितने गहिरे हों, सूर्य कब उदय हो तथा पृथ्वी का आकार कितना बड़ा हो। उसने तारों को बनाया तथा प्रकाश की रचना की। परमेश्वर ने यह भी ठहराया कि जानवर कैसे जन्म दें। उसने बैल में बल भरा और घोड़े में प्रताप। उसने उकाब पक्षी को बनाया कि ऊँचे से ऊँचे पर्वतों पर उड़े (अय्यूब 38, 39)।

परमेश्वर ने प्रत्येक वस्तु को रूप दिया और उसकी रूपरेखा में मनुष्य सबसे उत्तम भाग है। उसने मनुष्य को बनाने, उसके रूप को निर्धारित करने के लिए विशेष ध्यान दिया, क्योंकि मनुष्य के लिए उसके पास एक विशेष अभिप्राय है।

परमेश्वर ने मनुष्य जाति को जानवरों से समान नहीं पर अधिकाधिक अपनी समानता में बनाया। परमेश्वर संगति चाहता है, उसने हमको बनाया कि हम उसकी संगति का आनन्द उठायें। परमेश्वर सोचता है और योजना बनाता है; उसने हमें बनाया कि हम भी सोच सकें और योजना बना सकें। परमेश्वर प्रेम करता है, उसने हमें बनाया कि हम भी प्रेम कर सकें। परमेश्वर के पास चुनाव है; उसने हमें बनाया कि हम भी चुन सकें।

मनुष्य जाति के लिए परमेश्वर के पास एक योजना है, परन्तु प्रत्येक मनुष्य नहीं चुना गया कि वह करे जो परमेश्वर की योजना में है। सच तो यह है कि बाइबल कहती है कि प्रत्येक जन जो वह करना चाहता है वही चुनता है (रोमियों 3:23)। परन्तु इससे परमेश्वर की योजना नहीं बदली! आपने अपने अनुभव से सीखा है कि परमेश्वर ने आपको और सब मनुष्यों को यह अवसर प्रदान किया है कि उसके उद्धार के द्वारा उसकी महान योजना के अंग बन सकें। हम उसके साथ सहयोग कर सकते हैं और एक दिन आएगा कि हम उसके अनुरूप होंगे।

आपके लिए कार्य

आपके लिए कार्य के इस भाग में जो प्रश्न या अभ्यास दिये गये हैं वे आपको इस पाठ को दोहराने और उसे अपने जीवन में लागू करने हेतु सहायता करेंगे। प्रत्येक का हल करने के लिए दिए गए निर्देशों का पालन करें। जब आप से कहा जाए तब आप अपने उत्तर नोट-बुक में लिखें। यदि आप आवश्यकता महसूस करें तो इस अध्ययन पुस्तक के आरंभ में दिए गए भाग–**अध्ययन के प्रश्नों का उत्तर कैसे दें** की फिर से पढ़ लें।

1 अपनी बाइबल में से उत्पत्ति का अध्याय 1 पढ़ें। उस अध्याय में कौन सी दो बातों के लिए परमेश्वर ने नक्शा (योजना बनाई) बनाया उसका नाम लिखें।

.....

2 हम जानते हैं कि परमेश्वर का चुनाव है। एक चुनाव का वर्णन करें जो आपने अपने लिए किया है, जो यह दर्शाता है कि चुनाव करने की योग्यता के अनुसार आप भी परमेश्वर के अनुरूप हैं।

.....

अपने उत्तरों की जाँच इस पाठ के अन्त में दिए गए सही उत्तरों से करें।

मनुष्यों के लिए परमेश्वर के पास एक योजना है

विषयवस्तु 2. मनुष्यों के लिए परमेश्वर की रूपरेखा (योजना) की विशेषताओं का वर्णन करें।

किसी वस्तु की रूपरेखा (ढाँचे) की कोई आकृति या विशेषताएँ होती हैं। उदाहरण के लिए एक घर की रूपरेखा में दीवारें, खिड़कियाँ, दरवाज़े और कमरों की योजना सम्मिलित होती है। हमने बताया है कि लोगों के लिए परमेश्वर के पास एक रूपरेखा है। इस रूपरेखा की क्या विशेषताएँ हैं?

परमेश्वर की रूपरेखा का आरंभ ज्ञान से होता है

परमेश्वर की प्रजा के अगुवों में से दाऊद भी एक था। उसने बाइबल के अनेकों भजन लिखे हैं। भजन संहिता 139 में उसने कहा कि परमेश्वर उसके कार्यों और विचारों को जानता था। परमेश्वर दाऊद के बोलने से पहले ही जानता था कि वह क्या कहेगा। परमेश्वर ने दाऊद को बनाया। परमेश्वर ने उसे उसकी माता के गर्भ में रचा।

आपके लिए कार्य

3. नीचे दिए गए प्रत्येक सन्दर्भ (पद) को अपनी बाइबल में से पढ़ें। प्रत्येक सन्दर्भ के सामने व्यक्ति की उस बात को लिखें जिससे मालूम देता है कि परमेश्वर उस व्यक्ति को जानता था। परमेश्वर आपके विषय में भी इन बातों को जानता है।

(अ) अय्यूब 23:10 .....
(ब) भजन संहिता 31:7 .....
(स) भजन संहिता 103:14 .....
(द) भजन संहिता 139:16 .....
अपने उत्तरों की जाँच कर लें।

परमेश्वर ने न केवल दाऊद को बनाया, उसने आपको भी बनाया। हालाँकि परमेश्वर दाऊद के विषय में सब कुछ जानता था फिर भी उसने उससे प्रेम किया। हालाँकि वह आपके विषय में भी सब कुछ जानता है फिर भी वह दाऊद के समान आपको प्रेम करता है। उसने आपके जन्म, आपके उद्धार, आपके जीवन और आपके अनन्तकाल के जीवन की योजना बनाई है। यदि आप परमेश्वर के साथ सहयोग करें और उसकी योजना को अपने जीवन में लागू होने दें तो वह प्रभावशाली होकर तत्परता से आपकी अगुवाई करेगा (फिलिप्पियों 2:13)।

परमेश्वर की रूपरेखा में विविधता सम्मिलित है

संसार में लोग भिन्न-भिन्न जाति और नागरिकता के हैं। तरह-तरह के बाल, आँखों की आकृति तथा चमड़ी के रंग पर विचार करें। एक ही जाति में हम लोगों में भिन्नता देखते हैं। हमारे सोचने का ढंग भिन्न है, हम भिन्न-भिन्न तरह के भोजन पसन्द करते हैं। क्या यह एक उत्तम बात नहीं कि परमेश्वर ने हमें मनुष्य रूप में बनाया? और हमें अलग-अलग व्यक्तित्व एवं अस्तित्व प्रदान किया।

यदि आप एक परिवार में देखें तो आप पाएँगे कि बच्चे भिन्न दिखाई देते हैं। कुछ दुबले-पतले होते हैं और कुछ मोटे। कुछ के बाल एकदम काले रंग के होते हैं तो कुछ के हल्के या भूरे रंग के। परन्तु माता-पिता जो बच्चों से प्रेम करते हैं उनके लिए ये

भिन्नताएँ कुछ महत्त्व नहीं रखतीं। माता-पिता के लिए महत्त्वपूर्ण बात तो यह है कि बच्चे उनके अपने हैं।

वास्तविक सच्चाई तो यह है कि परमेश्वर ने ये रूपरेखाएँ बनाई हैं जिन्हें हम प्रत्यक्ष देख सकते हैं। उसने ऐसी योजना बनाई कि हम भिन्न हों. हमारा अपना व्यक्तित्व हो। यह उसके बनावट की एक आश्चर्यजनक बात है। जब कभी हम यह सोचते हैं कि दूसरा जन हमारे समान नहीं है तो यह इसलिए कि यह एक सत्य है।

आपके लिए कार्य

4 उस तरीके का नाम बताइए जिसके द्वारा आप अपने मित्रों से भिन्न हैं।

.....

परमेश्वर की रूपरेखा में एक स्तर (मानक) सम्मिलित है

क्या हम पुनः पिरामिड के विषय में सोच सकते हैं, जिसके विषय में हमने बातें की थीं? यह आवश्यक नहीं था कि सब पत्थर एक से हों। ये विभिन्न रूप और भिन्न भिन्न नाप के हो सकते थे। उनके लिए यह आवश्यक था कि वे आपस में ठीक-ठीक लगाए जा सकें। उन सबका इस तरह बनाया जाना आवश्यक था कि वे सब उपयोग में आ सकें। इसका अर्थ यह है कि प्रत्येक की बनावट निर्माण करने वाले के नक्शे के अनुसार हो।

इसी प्रकार हमें भी परमेश्वर की बनावट के अनुरूप बनना आवश्यक है और इस बनावट के नक्शे में स्तर या नमूना विद्यमान है। इफिसियों 4:13 हमें बताता है कि हमारे जीवन का स्तर

"मसीह के पूरे डील-डौल तक" बढ़ना है। यह वह लक्ष्य है जिसको प्राप्त करने के लिए परमेश्वर अपने वचन की शिक्षा के द्वारा अगुवाई करता है। जब हम उसे अपने जीवन में कार्य करने का अवसर देते हैं तब वह हमें अपने पुत्र के स्तर और रूप के अनुरूप परिवर्तित करता है। फिर हम तो उसकी सन्तान हैं। हमें चाहिए कि उसके सदृश बनें।

इसका यह अर्थ नहीं है कि हम अपने व्यक्तित्व को खो देंगे। इसी कारण, परमेश्वर हमें मसीह का जुड़वाँ नहीं बल्कि उसका "भाई" (रोमियों 8:29) बनाता है। जब बच्चे बड़े होते हैं तो वे बड़े होकर अपने माता-पिता के समान परिपक्व और समझदार हो जाते हैं। वे यह भी समझने लगते हैं कि उनके माता-पिता क्यों उन्हें अनुशासित किया करते थे, शिक्षा देते थे और उन्हें समस्याओं से जूझने के लिए छोड़ दिया करते थे। पर, फिर भी उनका अपना व्यक्तित्व है।

यदि हम ईमानदारी से यीशु मसीह के आज्ञाकारी होना सीख लें तो एक दिन हम उसके समान होंगे। इसका अर्थ यह है कि वर्तमान में हम जिन सीमाओं में बंधे हैं वे हमसे अलग कर दी जाएँगी। हम परमेश्वर को पूर्ण रूप से, जैसा वह है, जान सकेंगे। हम उसके अभिप्राय को भलीभाँति समझने पाएँगे। हम उसे सिद्ध व सच्चे प्रेम से प्रेम करेंगे। जो मसीह की महिमा है, फिर वह हमारी भी होगी (रोमियों 8:30)

जब हम उसके अनुरूप होंगे, जब हम उसे उसी रीति से जान जाएँगे जैसा कि वह हमें जानता है, जब उसकी महिमा हमारी होगी तब हमारी उसके साथ पूर्ण व सिद्ध सहभागिता होगी।

5 उस कथन के अक्षर पर गोला बनाएँ जो यह बताता है कि हमारे जीवनों के लिए मसीह का स्तर क्या है।

(अ) उसन परमेश्वर की इच्छा पूरी की।

(ब) वह यहूदी जाति का था।
(स) उसने सत्य बोला।
(द) उसने अपना बचपन एक छोटे गाँव में बिताया।

परमेश्वर की रूपरेखा मैत्री या एकरूपता लाती है

हम इस तरह से बनाए गए हैं कि एक साथ परमेश्वर की योजना में सम्मिलित (फिट) हो सकें। हो सकता है हम निर्बल हों जहाँ दूसरे शक्तिशाली हैं। जहाँ दूसरे निर्बल हों और हम शक्तिशाली।

बाइबल में, एक दूसरे के साथ सम्बन्धों को समझाने के लिए अनेक उदाहरण दिये गये हैं। परमेश्वर के परिवार के होने के नाते हम अपने पिता परमेश्वर के गुणों को अपने जीवन में लेते हैं और एक दूसरे के साथ सहभागिता का आनन्द उठाते हैं (इफिसियों 2:11-19)। एक साथ मिलकर हम उस मन्दिर रूपी भवन के खण्ड (ब्लॉक) हैं जिसमें परमेश्वर अपने आत्मा के द्वारा निवास करता है (इफिसियों 2:20-22)। एक साथ मिलकर हम मसीह की दुल्हिन बनते हैं (2 कुरिन्थियों 11:2, प्रकाशित वाक्य 21:9)। एक साथ मिलकर हम सेना बन जाते हैं (इफिसियों 6:10-18)।

यह स्पष्ट है कि परमेश्वर की योजना अथवा मनुष्यों के लिए उसकी रूपरेखा एक साथ मिलने अथवा मैत्रीपूर्ण योजना है—उसके साथ एक होना तथा दूसरों के साथ एक होना। यह विवेकपूर्ण है कि परमेश्वर ने जो योजना दूसरों तथा अन्य सृष्टि के लिए बनाई या फिर वह व्यक्ति विशेष के लिए बनाई हो उसमें तनिक भी विरोधाभास नहीं है। सब कुछ उसकी योजना के अनुरूप है।

हमारे लिए परमेश्वर क्या चाहता है—जब हम इसकी खोज करना आरंभ करते हैं तो हम यह पाते हैं कि उसके मन में सदा दो बातें रहती हैं: (1) मसीह के साथ हमारा व्यक्तिगत (व्यक्तिक)

विकास हमारा नमूना हो तथा (2) दूसरों के साथ हमारे व्यक्तिगत सम्बन्धों का विकास जो परमेश्वर की योजना में सहायक बनते हैं।

आपके लिए कार्य

6 निम्नलिखित में से कौन-सा उदाहरण यह दर्शाता है कि परमेश्वर की योजना में मैत्री-एक साथ मिलना सम्मिलित है?

(अ) जोआओ ने यह महसूस किया कि परमेश्वर उसके बारे में सब कुछ जानता है—अच्छा भी और बुरा भी।

(ग) मैनुएल और बेरनाबे दोनों ही विश्वासी हैं परन्तु दो विभिन्न जाति से सम्बन्ध रखते हैं।

(स) पीता ने अपने पढ़ाने की योग्यता को प्रयोग में लाना सीखा कि जैनी की बाइबल अध्ययन कराने में सहायता करे।

7 नीचे दिये गये सन्दर्भों में प्रत्येक बाइबल के पद को पढ़ लीजिये। तब इसका मिलान परमेश्वर की रूपरेखा के पहलू से करें जिसमें पद का सही अर्थ है। सही अंक को रिक्त स्थान पर लिख दें।

(अ) यूहन्ना 10:14-15	1) परमेश्वर का ज्ञान
(ब) यूहन्ना 17:21	2) विविधता

(स) 1 कुरिन्थियों 12:14 3) स्तर
(द) फिलिप्पियों 2:5 4) एकरूपता
(य) 1 यूहन्ना 3:16

8 मान लीजिए किसी मित्र ने आपसे यह प्रश्न किया: लोगों के लिये परमेश्वर की रूपरेखा क्या है? आप अपनी नोट बुक में, उत्तर के लिये परमेश्वर की रूपरेखा (बनावट) से सम्बन्धित चार गुण लिखिये।

अन्य (दूसरों) ने परमेश्वर की रूपरेखा (योजना रूपी नक्शे) का अनुभव किया

विषयवस्तु 3. परमेश्वर की रूपरेखा के विषय में निष्पादन को पहिचानना जो उन लोगों के जीवन में देखी जा सकती है जिन्होंने इसका अनुभव किया।

बाइबल हमें ऐसे अनेक लोगों के विषय में बताती है जिन्होंने अपने अपने जीवन में परमेश्वर के कार्य निष्पादन को पूरा होते देखा था। आइये, कुछ लोगों के जीवन-वृतान्त में परमेश्वर की योजना (रूपरेखा) के अनुभवों पर ध्यान दें।

यीशु के शिष्य

जब यीशु इस पृथ्वी पर था तो उसने अपने सब अनुयायियों में से बारह शिष्यों को चुना कि वे उसके साथ रहें (मरकुस 3:13-15)। यह उसकी योजना का एक प्रमुख कार्य था—वह उनके साथ रहेगा और उनके साथ रहने के द्वारा उनको बदल देगा। उसने पूरी रात प्रार्थना में बिताकर सावधानीपूर्वक उनका चुनाव किया था (लूका 6:12-16)। उसके पास एक योजना थी: अपने पिता के कार्य को करना जिसे करने के लिए पिता ने उसे भेजा था (यूहन्ना 17:4)

अपने अनुयायियों के लिए मसीह की योजना में अन्तिम लक्ष्य यह था कि वे एक दूसरे के साथ तथा स्वयं उसके साथ पूर्ण एकता में रहें (यूहन्ना 17:20-23 । फिर भी, जब हम बाइबल में इन विभिन्न व्यक्तियों के बारे में पढ़ते हैं तो हमें मालूम हो जाता है कि वे सब एक समान नहीं थे।

दो को "गर्जन के पुत्र" (मरकुस 3:17) के रूप में जाना गया। इनमें से एक यूहन्ना को कहा गया, "एक, जिससे यीशु प्रेम रखता था" (यूहन्ना 13:23)। पतरस, जैसा कि दिखाई देता है, कई बार दूसरों से अधिक उसके प्रति धैर्य रखा गया। नतनएल के लिए कहा गया कि उसमें कुछ भी कपट नहीं (यूहन्ना 1:47)।

ये सब भिन्न-भिन्न व्यवसाय और पृष्ठभूमि से आए थे—मछली पकड़ने वाले से लेकर कर वसूल करने वाले। और इन्होंने अपना व्यक्तिगत अस्तित्व (व्यक्तित्व) बनाए रखा। फिर भी मसीह के साथ रहने के कारण वे एकता में लाए गए। वे "बारह प्रेरित" कहलाए। प्रकाशित वाक्य की पुस्तक में हम पढ़ते हैं कि इनके नाम परमेश्वर के नगर की नींव पर लिखे हुए थे (प्रकाशित 21:14)।

बारहों प्रेरितों ने मसीह के साथ अनेकानेक अनुभव प्राप्त किए। कभी तो वे आराम में रहते तो कभी थक जाते थे। कई अवसरों पर आश्चर्यकर्म के द्वारा उन्हें भोजन प्राप्त हुआ; अन्य अवसरों पर वे अपना भोजन साथ लाये। उन्होंने महान विजयों का आनन्द उठाया; वे हतोत्साहित (विफल) भी हुये। परन्तु मसीह के साथ रहने के कारण परमेश्वर की योजना उनके जीवन में पूरी हुई।

आपके लिए कार्य

9 यीशु के शिष्यों का अनुभव दर्शाता है कि परमेश्वर की योजना को जानने के लिये सबसे मुख्य बात यह करना है—
(अ) गरीबी और दुर्भाग्य को सहन करना।
(ब) महान आश्चर्यकर्मों और विजयों का अनुभव करना।
(स) निरन्तर मसीह के साथ बने रहना।

10 यीशु के प्रति पतरस का व्यवहार यूहन्ना के व्यवहार से भिन्न था। परमेश्वर की रूपरेखा के सम्बन्ध में यह उदाहरण किस बात का गुण दर्शाता है—
(अ) विविधता।
(ब) ज्ञान
(स) एक साथ रहना (मैत्रीभाव)।

पौलुस प्रेरित

परमेश्वर का एक महान व्यक्ति जिसे हम पौलुस प्रेरित के नाम से जानते हैं। वह अपने पहिले के जीवन में तारसुस का शाऊल के नाम से जाना जाता था। एक समय था जब वह यीशु मसीह और उसके अनुयायियों से घृणा करता था। वह मसीहियों की हत्या का भी जिम्मेवार रहा था, क्योंकि उसे सिखाया गया था कि जो मसीही बनते हैं वे परमेश्वर की निन्दा करते हैं। अन्ततः परमेश्वर व्यक्तिगत रीति से शाऊल से बोला। यह उस समय हुआ जब शाऊल मसीह के अनुयायियों को गिरफ़्तार करने एक नगर को जा रहा था।

बाद में, जब पौलुस ने अपने पूर्व के जीवन पर दृष्टि की तो उसने अपने आपको पापियों में सबसे बड़ा कहा (1 तीमुथियुस

1:15)। यदि परमेश्वर का हस्तक्षेप उसके जीवन में कार्यकारी सिद्ध हो सकता है तो यह प्रत्येक उस जीवन में भी कार्यकारी होगा जो उसके प्रति समर्पण को तैयार है। 2 तीमुथियुस 4:7-8 में पौलुस अपने जवान मित्र तीमुथियुस को उस विश्वास के प्रति बताता है जो बुढ़ापे में उसके अन्दर है। उसने कहा कि मैंने अपनी दौड़ पूरी कर ली है और उस विश्वास में स्थिर रहा हूँ। परिणामस्वरूप, उसे निश्चय था कि न केवल उसके लिए परन्तु उन सब के लिए भी जो ठीक ऐसा ही करते हैं पुरुस्कार (प्रतिफल) सुरक्षित रखा है।

आपके लिए कार्य

11 निम्नलिखित तीन टिप्पणियाँ पौलुस के जीवन पर की गईं। इनमें से एक टिप्पणी चुनें जिसमें पौलुस के जीवन में परमेश्वर की रूपरेखा (योजना) का सबसे सुन्दर चित्रण मिलता है।

(अ) कुछ मसीहियों ने अपने जीवन का अधिकांश भाग परमेश्वर की योजना का विरोध करने में व्यतीत किया।

(ब) व्यक्ति की पूर्व की असफलताओं के उपरान्त भी परमेश्वर की सिद्ध व पूर्ण इच्छा पूरी हो सकती है।

(स) प्रत्येक विश्वासी को यह जानना चाहिये कि उसके लिये असफलताओं का अनुभव करना संभव है।

आप परमेश्वर की रूपरेखा (योजना) का अनुभव कर सकते हैं

विषयवस्तु-4. उस दशा का वर्णन करना जिसके द्वारा परमेश्वर अपनी योजना को आपके जीवन में पूरी करता है।

परमेश्वर की योजना आपके लिए भी ठीक वैसी ही पूर्ण और व्यक्तिगत है जैसी कि यह बारह शिष्यों में से प्रत्येक के लिए थी। जैसा कि निकट का सम्बन्ध उसके शिष्यों के साथ उसका था, ठीक वैसी ही निकटता वह आपसे भी चाहता है (यूहन्ना 17:21)। जिस प्रकार और जिन परिस्थितियों में उसने चेलों के लिए किया, ठीक उसी प्रकार वह आपके लिए भी कर रहा है। और जैसा कि पौलुस का जीवन दर्शाता है, वह आपके जीवन में भी अपने अभिप्राय को पूरा करना चाहता है, चाहे आप जीवन में कितने ही असफल क्यों न रहे हों।

एक बार, जब आप यह जान लेते हैं कि आपके जीवन के लिए परमेश्वर के पास एक नक्शा है, आपका दृष्टिकोण बदल जाता है। आप अपने जीवन में होने वाली बातों को एक भिन्न दृष्टिकोण से देखना आरम्भ करते हैं।

एक बढ़ई अपनी रुखानी से अथवा आरी से लकड़ी को एक नया रूप दे रहा है। वह उसे रेतमाल से चिकना करता है। एक हीरा अपनी मूल्यवान स्थिति में तब तक नहीं पहुँच सकता जब तक कि जौहरी छैनी से उसको तराशकर उसके व्यर्थ भाग को अलग नहीं कर देता। हो सकता है परमेश्वर आपके जीवन पर विशेष ध्यान देकर कार्य कर रहा हो। हम अपने आप में हथौड़े मारे जाने, काटे जाने तथा चिकने किये जाने को महसूस किया करते हैं। साधारणतः तो हम यह सोच लेते हैं कि ये सब बातें "भाग्य", लोगों, या परिस्थिति के कारण होती हैं। हमारे सोचने का ढंग बदल सकता है यदि हम यह विश्वास कर लेते हैं कि यह हमारे जीवन में परमेश्वर के कार्य करने का तरीका है।

रोमियों 8:29-30 हमें उस कार्य प्रणाली को बताता है जिसमें हमारे जीनव की घटनायें फिट होती हैं। स्मरण रखें कि हमने उस सत्य के विषय में सीख लिया है कि परमेश्वर हमारे बारे में सब कुछ जानता है? यहीं से हमारे जीवनों के लिए उसकी योजना का आरंभ होता है:

"क्योंकि जिनके विषय में उसे पूर्वज्ञान था, उसने उन्हें पहिले से ठहराया भी कि वे उसके पुत्र के स्वरूप में हो जाएँ, जिससे कि वह बहुत-से भाइयों में पहिलौठा ठहरे; फिर जिन्हें उसने पहिले से ठहराया है, उन्हें बुलाया भी; और जिन्हें बुलाया, उन्हें धर्मी भी ठहराया; और जिन्हें धर्मी ठहराया, उन्हें महिमा भी दी है।" (नया अनुवाद)।

जब आप इस पाठ्यक्रम का अध्ययन करते जाएँगे तो आप ऐसे तरीकों को देखने पाएँगे जिन्हें हमारे जीवन परिवर्तन के लिए परमेश्वर प्रयोग में लाता है। विशेषकर, आप यह देखेंगे कि कैसे कुछ परिस्थितियाँ परमेश्वर की इच्छा जानने में हमारे लिए सहायक बन सकती हैं। परन्तु आरंभ से ही इस एक बात को मन

में रखें: हर एक परिस्थिति से परमेश्वर महान और बढ़कर है। वह आपके ज़ीवन में होने वाली प्रत्येक बात को अपने अन्तिम लक्ष्य तक पहुँचने के लिए प्रयोग में ला सकता है यदि आप उसके साथ सहयोग करें (रोमियों 8:28)।

आपके लिए कार्य

12 रोमियों 8:28 पढ़ें। अपनी नोट-बुक में अपने जीवन की एक परिस्थिति या दशा का वर्णन करें। तब अपने आप से यह प्रश्न पूछें : "परमेश्वर मेरे लिए अपनी इच्छा को पूरी करने के लिए इस परिस्थिति को किस प्रकार से इस्तेमाल कर सकता है?" प्रश्न का उत्तर लिखने का प्रयास कीजिए।

पाठ दो में, आपके लिए परमेश्वर का अगला क़दम तथा वह आपसे कैसे बात करना चाहता है विषयों पर ध्यान देंगे। अध्ययन आरम्भ करने से पहले भजन संहिता 139 को पढ़ें और परमेश्वर के उस नक्शे (रूपरेखा) पर मनन कीजिए जो अति सुन्दर ढंग से आपके जीवन के लिए निर्धारित किया गया है।

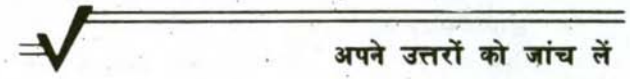

अपने उत्तरों को जांच लें

आपकी अध्ययन पुस्तक में दिए गए प्रश्नों या अभ्यासों के उत्तर क्रम से नहीं दिए गए हैं। यह इसलिए किया गया है कि आप अपने अगले प्रश्न का उत्तर पहिले से न देखें। जिस अंक (प्रश्न) का उत्तर देखना हो उसी को देखिए।

7 (अ) परमेश्वर का ज्ञान [1]
(ब) एक साथ रहना [4]
(स) विविधता [2]
(द) स्तर [3]
(य) स्तर [3]

1 आपका अपना उत्तर। उत्पत्ति 1 में अनेक बातों को बताया गया है जिन्हें परमेश्वर ने आकार दिया और रचना की: प्रकाश तथा अन्धकार (पद 3-4), समुद्र और भूमि (पद 9-10) तथा मनुष्य जाति (पद 26-27)।

8 आपके उत्तर में ज्ञान, विविधता, स्तर एवं एक साथ रहना (मैत्रीभाव) के पहलू सम्मिलित होना चाहिए जैसा कि पाठ में वर्णन है।

2 आपका अपना उत्तर। इस पाठ्यक्रम का अध्ययन करने हेतु आपका निर्णय दर्शाता है कि आप चुनाव करने (चुनने) के योग्य हैं। यह तरीका है जिसमें परमेश्वर ने आपको अपने अनुरूप बनाया है।

9 (स) निरन्तर मसीह के साथ बने रहना।

3 (आपके अपने शब्दों में)

(अ) उसके क़दम या मार्ग।
(ब) उसके संकट।
(स) किस से उसने बनाया; कैसे उसने आकार (रूप) दिया।
(द) उसकी आयु के दिन।

10 (अ) विविधता।

4 आपका अपना उत्तर।

11 (ब) व्यक्ति की बीती (पूर्व की) असफलताओं के उपरान्त भी परमेश्वर की सिद्ध व पूर्ण इच्छा पूरी हो सकती है।

5 (अ) उसने परमेश्वर की इच्छा पूरी की।
(स) उसने सत्य बोला।

12 आपका अपना उत्तर। परमेश्वर आपके जीवन में क्या कर रहा है इस बारे में और अधिक जागरुक रहें।

6 (स) पीता ने यह सीखा कि अपनी सिखाने की योग्यता को जैनी को बाइबल अध्ययन कराने में कैसे उपयोग में लाए।

क्या परमेश्वर मुझे बताएगा कि आगे क्या करूँ?

.....मेरे लिए उसकी क्या योजना (रूपरेखा) है इसका मुझे निश्चय नहीं।

इसमें शंका नहीं कि आप मसीह को अपना उद्धारकर्त्ता ग्रहण कर चुके हैं। और अब तक आपने यह भी जान लिया है कि परमेश्वर के पास आपके जीवन के लिए निश्चय ही एक योजना, एक निश्चित रूपरेखा है। मुझे यकीन है कि आप अपने लिए उसकी इच्छा पर चलना चाहेंगे।

परन्तु अब आप परमेश्वर की योजना के प्रति अपने सम्बन्ध के विषय में किंचित परेशान हैं। हो सकता है आपको निश्चय न हो पा रहा हो कि आप भी उसकी योजना के भाग हैं, और परमेश्वर इस विषय में आपसे बात करना चाहता है।

इस पाठ में, परमेश्वर की योजना या उसके ढाँचे में अपनी वर्तमान स्थिति व पद के विषय में खोज करेंगे। आप ऐसी अनेक सच्चाइयों के विषय में सीखेंगे जो यह बताती हैं कि क्यों आपको यह विश्वास होना चाहिए कि परमेश्वर आप से बात करना चाहता है। आप उन प्रावधानों और प्रतिज्ञाओं के विषय में भी सीखेंगे जो उसने आपकी अगुवाई के लिए दी हैं कि वह अपनी योजना आपके जीवन में पूरी करता है।

इस पाठ में आप सीखेंगे...

- आप पहले से ही परमेश्वर की योजना में प्रवेश कर चुके हैं।
- परमेश्वर चाहता है कि आप उसकी योजना के अनुसार चलें।
- परमेश्वर अपनी योजना प्रकट करना चाहता है।

यह पाठ आपकी सहायता करेगा...

- परमेश्वर की योजना में अपने वर्तमान सम्बन्ध के प्रति निश्चयी बनना (होना)।
- परमेश्वर क्यों चाहता है कि आप निरन्तर उसकी योजना का अनुसरण करें–इसकी व्याख्या।
- कारण बताना कि आपको क्यों यह निश्चय हो कि परमेश्वर आप पर अपनी योजना प्रकट करना चाहता है।

आप पहले से ही परमेश्वर की योजना में प्रवेश कर चुके हैं

विषयवस्तु 1. परमेश्वर की योजना में आपके वर्तमान सम्बन्ध का वर्णन और यह कैसे हुआ को जानना?

एक विश्वासी होने के नाते आपको यह निश्चय है कि आपने प्रभु यीशु मसीह को ग्रहण किया है और अब आप परमेश्वर की सन्तान हैं। ठीक यही निश्चय आपको होना चाहिए जिससे कि आप यह समझ सकें कि परमेश्वर अपनी इच्छा और अपनी योजना रूपी रूपरेखा आप पर प्रकट और पूरी कर रहा है। आइए, मसीह को ग्रहण करने के आपके अनुभव को दोहराएँ जो आपके आत्मविश्वास को बढ़ाने में सहायक होगा। हालाँकि आपका अनुभव अनोखा और व्यक्तिगत था फिर भी इसमें अनेक अनिवार्य बातें सम्मिलित हैं जो उन लोगों के द्वारा भी बताई गई जिन्होंने मसीह को ग्रहण किया है।

आपने मसीह पर विश्वास किया

मसीह को ग्रहण करने का आपका अनुभव न तो दुर्घटनावश हुआ और न ही संयोगवश। इस महान अनुभव को पाने में आप दुर्घटना के शिकार नहीं हुए; किसी भी जन ने इस प्रकार से उद्धार नहीं पाया। फिर भी, परमेश्वर ने अपनी योजना से आपको अवगत कराया। यही नहीं, उसने आपके जीवन के लिए एक विशेष नमूने को बताया। परमेश्वर का संचारण स्वयं में आपका उद्धार नहीं है, यह तो तब मिलता है जब आप आज्ञाकारी होकर उसे ग्रहण करते हैं।

बाह्य कार्य ही अनिवार्य तत्त्व नहीं था। यह तो स्वयं का आज्ञाकारी होना था। एक सामान्य तत्त्व के विषय पवित्रशास्त्र

बताता है जो उद्धार पाने के लिए अनिवार्य है—यह है **विश्वास** करना। तब जिस आज्ञा मानने की सदा ही मांग की जाती है वह है: **हमें विश्वास करना चाहिए।**

उदाहरण के लिए ध्यान दें, पौलुस और सीलास ने फिलिप्पी के दरोगा के प्रश्न का उत्तर कैसे दिया: "उद्धार पाने के लिए मैं क्या करूँ?" (प्रेरितों के काम 16:30)। उद्धार पाने के लिए उनका उत्तर एकदम सरल था: "यीशु मसीह पर विश्वास कर तो तू उद्धार पायेगा" (प्रेरितों के काम 16:31)। दरोगा को यीशु पर विश्वास करने के लिए दिए गए निर्देश का पालन करना आवश्यक था। और उसने यीशु पर विश्वास किया और उद्धार पाया।

इसी तरह आपके जीवन में यही हुआ कि आपने आज्ञाकारी होकर यीशु को अपने हृदय में स्वीकार किया है।

आपके लिए कार्य

1 नीचे दिये गये पदों को अपनी बाइबल में से पढ़िये। अब ऐसे पद वाले अक्षर पर गोला बनायें जो आपको यह बताता है कि किसी ने आज्ञाकारी होकर यीशु पर विश्वास किया।

(अ) मरकुस 15:13
(ब) लूका 1:45
(स) यूहन्ना 17:8
(द) प्रेरितों के काम 18:8

2 किस प्रकार यह सत्य है कि उद्धार आज्ञा मानने का परिणाम है?

.....

आपने वचन का पालन किया

एक मसीही बनने के लिए आपने परमेश्वर के वचन अर्थात् बाइबल की आज्ञा पालन की। बाइबल से ही तो हमने परमेश्वर के व्यक्तित्व, उसकी पवित्रता, उसके पुत्र यीशु मसीह के बारे में जाना और सीखा है। बाइबल ही है जो हमें बताती है कि मसीह संसार में आया, मर गया और जी उठा और वह पाप क्षमा करता है। दूसरे शब्दों में जब आपने मसीह को ग्रहण किया तो आप परमेश्वर की इच्छा के आज्ञाकारी रहे, जैसा कि बाइबल में प्रकाशित हुआ है। आपने परमेश्वर की इच्छा के विषय में पर्याप्त सीख लिया है और परमेश्वर के सन्तान बन गए हैं।

आपने पवित्र आत्मा की आज्ञा मानी

जब आप परमेश्वर के वचन द्वारा सिखाई गई सच्चाइयों का मिलान कर रहे थे और आपके मन में कई बातें उठ रही थीं तब निश्चय ही आपको अपने अन्दर दोषसिद्धि अथवा कायलित का अनुभव हुआ था। उदाहरण के लिए, आपने मसीह के मृतकों में से जी उठने के सत्य को यूँ ही नहीं सीख लिया था। आप इस बात के लिए कायल हुये थे कि मसीह जी उठा और वह आज भी जीवित है। यह कायलित आपके अन्दर पवित्र आत्मा के कार्य से उत्पन्न हुई जिसने आपको सत्य-स्वीकारने में अगुवाई की। उसके द्वारा आई कायलित को स्वीकारते हुए आपने उसकी आज्ञा मानी।

आपने वचन और पवित्र आत्मा दोनों का आज्ञा पालन किया। इसका परिणाम यह है कि आप परमेश्वर के सन्तान हैं परमेश्वर की योजना, उसका प्रारूप भविष्य में आरंभ नहीं होता परन्तु यह आप में तभी से आरंभ हो जाता है जब परमेश्वर आपको अपनी सन्तान बना लेता है। वह तो तब भी आपको अपनी योजना से अवगत कराने योग्य था जबकि आप उससे अलग हो गए थे।

उसके पुत्र (सन्तान) होने के नाते आपको यह निश्चय हो सकता है कि वह निरन्तर आपसे बात करता है।

आपके लिए कार्य

3 अपनी नोट बुक में, परमेश्वर की योजना अर्थात् उसकी रूपरेखा से आज आपके सम्बन्ध कैसे हैं और इसमें आप कैसे सम्मिलित हुए—इसे लिखें। दो या तीन वाक्यों में अपना अनुभव बताएँ।

परमेश्वर चाहता है कि आप उसकी योजना का अनुसरण करें

विषयवस्तु 2. तीन कारण बताइए कि परमेश्वर क्यों आपसे चाहता है कि आप निरन्तर उसकी योजना (प्रारूप) का पालन करें।

उसके सन्तान होने के नाते परमेश्वर चाहता है कि हम उसकी आज्ञा-पालन करें। यही वह तरीका है जिसके द्वारा हम उसकी योजना का अनुसरण करते हैं। सम्पूर्ण पवित्रशास्त्र में अनेक बार इस माँग को किया गया (उदाहरण के लिए देखें व्यवस्थाविवरण 27:10, 1 शमूएल 12:14, तथा मत्ती 19:17)। भजन संहिता 119 का मुख्य विचार है परमेश्वर के वचन तथा व्यवस्था (नियमों) के प्रति आज्ञाकारी बने रहना तथा प्रेमपूर्ण सम्बन्ध बनाए रखना (उदाहरण के लिए देखें पद 47, 97 तथा 167)। इसके साथ ही, मसीह भी आज्ञाकारिता को प्रेम प्रकटीकरण का महत्त्वपूर्ण तरीका मानता है (यूहन्ना 14:15)।

आपका आज्ञापालन आशीष लाता है

अनेक कारणों में से एक सर्वश्रेष्ठ कारण है कि परमेश्वर क्यों चाहता है कि हम उसकी आज्ञापालन करें, क्योंकि उसकी आज्ञापालन ही हमारे जीवनों में आशीष लाती है।

इस्राएलियों ने जब वे मिस्र की दासत्व में थे बहुत दुख उठाए और तकलीफ़ें सहीं, परन्तु परमेश्वर उनको गुलामी से छुड़ा लाया। उन्हें अपनी पीढ़ी समाप्त होने तक जंगलों में घूमते-फिरना था।

आपके लिए कार्य

4 निर्गमन 15:26 में उस प्रतिज्ञा को पढ़िए जो आरंभ में परमेश्वर ने अपनी प्रजा से की थी। तब निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर अपनी नोट-बुक में लिखिए।

(अ) परमेश्वर ने प्रजा (लोगों) से क्या करने को कहा था?

(ब) क्या होगा यदि वे उसे करें जो परमेश्वर ने उनसे करने को कहा था?

भजन संहिता 1 हमें उस पुरुष के बारे में बताता है जो "यहोवा की व्यवस्था के पालन करने से प्रसन्न रहता है" (पद 2)। यह व्यक्ति बहुत सारी आशीषें पाता है। उसका जीवन फलदायक

वृक्ष के समान होता है जिसके पत्ते मुरझाते नहीं और वह अपने जीवन में सफल होता है।

पवित्रशास्त्र में कई स्थानों पर यह वर्णन मिलता है कि जब हम परमेश्वर की इच्छा का पालन करते हैं तो हमें आशीषें प्राप्त होती हैं। यीशु मसीह "अपने पर्वतीय उपदेश" में प्रतिज्ञाएँ करता है—"जो मन के शुद्ध हैं वे परमेश्वर को देखेंगे, जो दयावन्त हैं, जो मेल करवाने वाले हैं उनके जीवन प्रसन्न होंगे—वे आशीषों के भागीदार बनेंगे" (मत्ती 5, 7)। रोमियों 2:7 में हम पढ़ते हैं कि जो निरन्तर सच्चाई पर चलेंगे वे अनन्त जीवन पाएँगे।

आपकी आज्ञाकारिता परमेश्वर के राज्य का निर्माण करती है

परमेश्वर के राज्य का विकास बहुधा हमारी आज्ञाकारिता पर निर्भर करता है। हम उस सत्य को तभी समझ पाते हैं जब हम उस प्रार्थना के शब्दों पर ध्यान करते हैं जो यीशु ने अपने शिष्यों को सिखाई कि परमेश्वर से किया करें: "तेरा राज्य आए, और तेरी इच्छा जैसे स्वर्ग में पूरी होती है वैसे ही इस पृथ्वी पर भी हो" (मत्ती 6:10)। परमेश्वर के राज्य के लिए हमारी आज्ञाकारिता अनिवार्य है।

बाइबल में हम ऐसे समयों के विषय में पढ़ते हैं जब परमेश्वर की योजना कार्यान्वित हुई और उसके राज्य का निर्माण किया गया। हम उन दूसरे समयों के बारे में भी पढ़ते हैं जब परमेश्वर की प्रजा (उसके सन्तानों) ने आज्ञापालन नहीं की, जिससे परमेश्वर की योजना के कार्यान्वयन में बाधा पड़ी।

उदाहरण के लिए, अदन की वाटिका में, आदम ने भले और बुरे के ज्ञान के वृक्ष का फल खाया (उत्पत्ति 3:6)। आदम के इस कार्य से परमेश्वर की सृष्टि आशिषित हुई या शापित? उसके

फल खाने से पूर्व चहुँ ओर शान्ति विराजमान थी। यह भी नहीं लिखा है कि जानवर एक दूसरे को मार डालते थे। वहाँ कोई काँटे या झाड़ियाँ नहीं थीं। आदम के पास अवसर था कि वह अपनी संतान से शान्तिपूर्ण संसार को भर दे। परन्तु देखिये आदम की अनाज्ञाकारिता का क्या परिणाम हुआ?

आदम में से परमेश्वर का प्रतिरूप जाता रहा।वह अपनी पत्नी को डाँटने लगा और परमेश्वर से छिप गया। तब, पृथ्वी, परमेश्वर की सृष्टि, शापित हुई। इस शाप में पृथ्वी का सब कुछ सम्मिलित है–भूमि, जानवर और मनुष्य। परमेश्वर का जो राज्य सृजा (बनाया) गया था। वह अनाज्ञाकारिता से प्रभावित हुआ (उत्पत्ति 3:8-19)।

जैसा कि आदम की अनाज्ञाकारिता से राज्य बुरी तरह प्रभावित हुआ और परमेश्वर के शाप का कोपभाजन बना उसी तरह मसीह की पूर्ण आज्ञाकारिता से राज्य का भला हुआ और वह आशिषित हुआ। सच्चाई तो यह है कि सम्पूर्ण पृथ्वी का राज्य आदम और मसीह दोनों से प्रभावित हुआ है। उनके कार्यों के परिणाम से सब प्रभावित हुए। आदम में समस्त सृष्टि शापित हुई; मसीह में सम्पूर्ण सृष्टि ने छुटकारा पाया है।

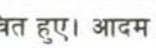

आपके लिए कार्य

5 रोमियों 5:15-21 पढ़िये। नीचे दिये गये नामों वाले व्यक्तियों से सम्बन्धित उन परिणामों को लिखिये जिनके परिणामस्वरूप यह आये।

(अ) सबके लिए क्षमा उपलब्ध हुई।
(ब) मृत्यु ने शासन करना आरंभ किया।
(स) मनुष्य जाति स्वतन्त्र की गई।
(द) जीवन दिया गया।
(य) सब पर **दण्ड आज्ञा लागू हुई।**

1. मसीह की आज्ञापालन से 2) आदम की अनाज्ञाकारिता से

.....

.....

.....

अन्य लोगों ने भी परमेश्वर के राज्य को प्रभावित किया है। बाइबल में हम इब्राहीम, मूसा, यहोशू, दाऊद और एलिय्याह के विषय पढ़ते हैं। इन सब के आज्ञापालन का परमेश्वर के राज्य पर बड़ा प्रभाव पड़ा था।

आपका आज्ञापालन परमेश्वर को प्रसन्न करता है

परमेश्वर की इच्छा है कि उसके सन्तान आशीष पाने और उसके राज्य की बढ़ती के लिए आज्ञाकारी बनें। व्यक्तिगत रीति से अपने बच्चों (सन्तान) की आज्ञापालन से परमेश्वर प्रसन्न होता है।

मसीह ने स्वयं अपनी इच्छा पूरी करने का प्रयत्न नहीं किया परन्तु अपने पिता परमेश्वर की। उसने यह प्रमाणित किया कि जो पिता को प्रसन्नयोग्य है उसने वही किया (यूहन्ना 8:29)। उसका आज्ञापालन पिता-पुत्र के सम्बन्ध की पूर्णता को दर्शाता है।

यह पिता के लिए क्या ही आनन्ददायक था जब उसने देखा कि उसके एकलौते पुत्र ने पूरी तरह से उसकी आज्ञा-पालन की। मत्ती 3:17 और 17:5 में आप पुत्र के जीवन की आज्ञाकारिता

(आज्ञाकारी जीवन) के प्रति पिता की प्रतिक्रिया को देख सकते हैं। उसने स्वर्ग से कहा (आकाशवाणी हुई) कि वह अपने पुत्र से प्रसन्न है। आप भी, उसके पुत्र (सन्तान) होने के नाते अपने आज्ञाकारी जीवन व व्यवहार से उसे आनंन्दित और प्रसन्न कर सकते हैं।

आपके लिए कार्य

6 अपनी नोट बुक में तीन कारण लिखिये कि क्यों परमेश्वर चाहता है कि आप निरन्तर उसकी योजना (उसके आज्ञाकारी होकर) का अनुसरण करते रहें।

परमेश्वर अपनी योजना प्रकट (प्रकाशित) करना चाहता है

विषयवस्तु 3. प्रमाण दें कि परमेश्वर आप पर अपनी योजना (रूपरेखा) प्रकट करना चाहता है।

यदि परमेश्वर हमारे पुत्र होने से पहिले हमें अपनी इच्छा बताने के योग्य है, और यदि वह अपने सन्तानों (पुत्रों) के आज्ञापालन से प्रसन्न है तो क्या वह हम पर अपनी इच्छा प्रकट न करेगा कि हम उसका पालन कर सकें?

कुछ तो परमेश्वर के पास इसलिए आते हैं कि वे उसे उसकी इच्छा प्रकट करने हेतु कायल करेंगे। वे प्रार्थना में परिश्रम करते और "परमेश्वर की इच्छा जानने" के प्रयत्न में असफल हो जाते हैं। क्या यही वह चित्र है जो बाइबल हमें दर्शाती है?

उन दृष्टांतों के विषय सोचिए जो मसीह ने मनुष्य के उत्तरदायित्व के बारे में सिखाए थे। इन्हें आप मत्ती 25:14-30

तथा लूका 12:42-48 में पढ़ सकते हैं। किसी भी मामले में उसने यह नहीं सिखाया कि मनुष्य को परमेश्वर की इच्छा अर्थात् परमेश्वर उससे क्या चाहता है कि वह करे यह जानने में परेशानी का सामना करना पड़ा हो। परमेश्वर अपनी योजना प्रकट करना चाहता है! परन्तु ऐसा कौन सा सत्य है जिससे यह मालूम हो कि परमेश्वर अपनी इच्छा प्रकट करना चाहता है?

उसने आपकी अगुवाई करने की प्रतिज्ञा की है

हम जानते हैं कि परमेश्वर अपनी योजना को प्रकट करना चाहता है क्योंकि उसने हमारी अगुवाई की प्रतिज्ञा की है। वह हमें बिना अगुवाई के न छोड़ेगा।

जब मसीह पृथ्वी पर था तब शिष्यों को उसकी इच्छा जानने व सीखने में कोई कठिनाई नहीं हुई; उसने उन्हें सामान्य तौर पर बता दिया कि उसकी इच्छा क्या थी। वह जहाँ कही भी चाहता वहाँ उसने उन्हें गवाही देने—सुसमाचार सुनाने—भेज दिया। जब उसने पाँच हज़ार की भीड़ को पाँच रोटी और दो मछली से खिलाया तो उसने उन्हें पहिले से बता दिया था कि लोगों में कैसे बाँटे (लूका 9:14)।

न केवल उन्होंने मसीह द्वारा कही गई बात से सीखा, परन्तु उन्होंने उसके नमूने से भी सीखा। इसमें शक नहीं, जहाँ कहीं वह गया वे उसकी सेवकाई के अंग बने रहे। इस प्रकार से उन्होंने उसकी इच्छा को जाना और सीखा।

परन्तु मसीह जानता था कि इस प्रकार शरीर में वह सदा लों उनके साथ न रहेगा। जब वह स्वर्ग पर चढ़ गया तो उन्हें यह कैसे मालूम हुआ कि अब क्या करना है? क्या वे चकरा गए थे? उसने उन्हें अपनी इच्छा कैसे बताई?

यूहन्ना 14 से 16 में हम पढ़ते हैं कि मसीह ने अपने शिष्यों को उस समय के विषय बताकर पूरी तरह से तैयार किया जब वह उनके बीच में सशरीर न रहेगा। उसने उन्हें यह भी बताया कि वह क्या कर रहा होगा (उनके लिए स्थान तैयार कर रहा होगा)। उसने उनसे कहा कि वह उसके स्वर्ग पर जाने के बाद दुखित न हों। वास्तव में उसने उनसे यह कहा कि उसका वापस स्वर्ग पर जाना उनके लिए लाभदायक होगा। यदि वह स्वर्ग पर जाएगा तब ही पवित्र आत्मा आएगा जो परमेश्वर की इच्छा जानने के लिए उनकी आँखें खोल देगा और हर पल उनकी अगुवाई करेगा (यूहन्ना 16:7)।

यूहन्ना 14 से 16 तीन अध्यायों में ही उन ढेर सारे आश्वासनो का वर्णन लिखा है जो मसीह ने अपने अनुयायियों को दिए थे कि वे अकेलापन महसूस न करें। अगले अभ्यास में इनमें से कुछ को आप देख सकेंगे।

आपके लिए कार्य

7 नीचे दिये गये सन्दर्भों (पदों) में यीशु ने पवित्र आत्मा के कार्य और गुण (चरित्र) का वर्णन किया है। दिए गए वर्णन को सही पद (सन्दर्भ) से मिलाकर रिक्त स्थान में उसका अंक लिखिए।

(अ) वह उनको सिखाएगा। 1) यूहन्ना 14:16
(ब) वह मसीह को महिमा देगा। 2) यूहन्ना 14:17
(स) वह उनके साथ सदा लों रहेगा। 3) यूहन्ना 14:26
(द) वह उनको वे सब बातें स्मरण 4) यूहन्ना 16:13
दिलाएगा जो मसीह ने उनसे 5) यूहन्ना 16:14
कही थीं।
(य) वह उनको आने वाली बातें
बताएगा।
(र) वह मसीह की बातें लेकर उनको
बताएगा।
(ल) वह उनमें बना (बसा) रहेगा।

इन प्रतिज्ञाओं के विषय में सोचिए और देखिए कि ये कितनी स्पष्ट हैं। परमेश्वर अपनी इच्छा प्रकट करना चाहता है।

उसने आपकी अगुवाई करने का प्रावधान किया है

तब परमेश्वर ने आपकी अगुवाई या मार्गदर्शन करने हेतु कौन सा प्रावधान (प्रबन्ध) किया है? हमने जिन प्रतिज्ञाओं का अध्ययन किया था क्या वे भविष्य के लिए हैं अथवा क्या वे पूरी हो चुकी हैं?

प्रेरितों के काम 2 में हम पढ़ते हैं कि जैसा कि मसीह ने प्रतिज्ञा की थी पवित्र आत्मा दिया गया। मसीह वापस स्वर्ग पर चला गया; उसने पवित्र आत्मा भेजे जाने हेतु पिता से कहा। और जो प्रतिज्ञा की गई थी कलीसिया ने पवित्र आत्मा पाया।

परन्तु, प्रेरितों के **काम** पुस्तक केवल मसीह की प्रतिज्ञा के पूरे होने, कि उसके अनुयायियों को पवित्र आत्मा दिया जाएगा का ही वर्णन करती है। पर इसमें वह वर्णन लिखा है जहाँ बताया गया है कि उनकी अगुवाई के लिए यह प्रावधान पर्याप्त था। वास्तव में, पवित्र आत्मा के आने के बाद से वे परमेश्वर के लिए और अधिक करने के योग्य हो गये थे जो वे पृथ्वी पर मसीह के साथ न कर पाए थे। उसका स्वर्ग पर जाना उनके लिए उत्कर्ष का कारण बना जैसा कि मसीह ने वायदा भी किया था।

अतः बाइबल हमें बताती है कि पवित्र आत्मा मसीह का ही प्रावधान था कि वह हमें परमेश्वर की इच्छा के ज्ञान को समझने में मार्गदर्शन करे। परन्तु इससे भी अधिक, बाइबल हमें ऐसे विशेष उदाहरणों को बताती है कि पवित्र आत्मा कैसे कार्य करता है और उसके कार्य में हम कैसे सहयोग कर सकते हैं—इस विषय में निर्देश देता है।

पवित्र आत्मा प्रार्थना करता है

इसमें शक नहीं कि **परमेश्वर की इच्छा** जानने में मेरा अगला क़दम क्या हो? इस सम्बन्ध में आपने इस समस्या का सामना किया होगा: कैसे और किस बात के लिए मैं प्रार्थना करूँ? परमेश्वर ने इस समस्या का समाधान किया है: पवित्र आत्मा

आपके द्वारा प्रार्थना कर सकता है, और वह यह पिता की पूर्ण व सिद्ध इच्छा में करेगा। आपकी प्रार्थना पिता की इच्छा की पूर्णरूपेण अभिव्यक्ति हो सकती है (रोमियों 8:26-27)।

आपके लिए कार्य

8 रोमियों 8:26-27 पढ़ें। इन पदों के अनुसार हमारी प्रार्थनाएँ परमेश्वर की इच्छा के निमित्त सिद्ध अभिव्यक्ति बन सकती है—क्योंकि,

(अ) पवित्र आत्मा बताता है कि हमें क्या कहना है?

(ब) पवित्र आत्मा स्वयं हमारे द्वारा प्रार्थना करता है।

(स) हम जानते हैं कि हमें क्या कहना है।

पवित्र आत्मा वरदान प्रदान करता है

पवित्र आत्मा हमें परमेश्वर की इच्छा का ज्ञान उसके वरदान देकर प्रदान करता है। इन वरदानों का वर्णन 1 कुरिन्थियों 12 और 14 अध्याय में किया गया है। मसीह को महिमा देने निमित्त ये वरदान कलीसिया और व्यक्ति विशेष का निर्माण और विकास करते हैं। बुद्धि या ज्ञान के वचन से हमें परमेश्वर और उसके मन को समझने हेतु विशेष अन्तर्दृष्टि प्राप्त होती है। यह अन्तर्दृष्टि उससे जो हम स्वाभाविक बुद्धि से सीखते हैं, ऊपर (पार) चली जाती है।

पवित्र आत्मा निवास करता है

वास्तविक रूप में पवित्र आत्मा आपके अन्दर परमेश्वर के पुत्र के समान निवास करता है। आप उसके बोलने के लिए साधन बनते हैं।

मसीह के अन्दर निवास करने वाला आत्मा ही उसे जंगल में ले गया (मत्ती 4:1)। फिलिप्पुस की पवित्र आत्मा ने अगुवाई की कि वह इथियोपिया के एक अधिकारी को साक्षी दे और समझाए (प्रेरितों के काम 8:19)। पौलुस तो एशिया को जाना चाहता था परन्तु पवित्र आत्मा द्वारा योरोप जाने की अगुवाई पाई (प्रेरितों के काम 16:6-10)। इसी प्रकार से पवित्र आत्मा जो आप में निवास करता है वह परमेश्वर का प्रावधान है कि उसी की इच्छा में आपकी अगुवाई करे।

पवित्र आत्मा ने वचन दिया

एक और विशेष बात है जो कि परमेश्वर ने पवित्र आत्मा को करने के लिए दिया कि वह हमारा मार्गदर्शन करे। यह हमें उसका **वचन** दिया जाता है, अर्थात् परमेश्वर का वचन बाइबल। अन्य पाठ में हम इस बात को सीखेंगे कि परमेश्वर हमसे बात करने के लिए किस प्रकार अपने वचन का इस्तेमाल करता है। आपके लिए यह जान लेना अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है कि परमेश्वर का वचन पवित्र आत्मा का उत्पादन है (2 पतरस 1:21)। **यही वह माध्यम है जिसके द्वारा पवित्र आत्मा हमसे बातचीत करता है। यही एक आधार है जिसके द्वारा हम अन्य संदेशों की जाँच व परख करते हैं।**

आपके लिए कार्य

9 मान लीजिए आपका कोई मित्र आपसे यह प्रश्न पूछना चाहता था : मैं कैसे जानूँ कि परमेश्वर अपनी योजना मुझ पर प्रकट करना चाहता है? पहले तो आप पाठ को दोहरा लें। तब अपनी नोटबुक में निम्न सुझावों को ध्यान में रखकर उत्तर लिखें :

(अ) उस प्रतिज्ञा का वर्णन करें जो मसीह ने परमेश्वर की इच्छा के ज्ञान में अगुवाई पाने के सम्बन्ध में की।

(ब) बताएँ कि मसीह की प्रतिज्ञा किस प्रकार पूरी हुई। **और**

(स) ऐसे चार तरीके बताएँ जिनके द्वारा पवित्र आत्मा परमेश्वर की योजना को हमें बताता है।

आप परमेश्वर के पुत्र हैं। क्या वह आपको बताएगा कि अब आगे क्या करना है? हाँ! आपको निश्चय हो सकता है कि परमेश्वर आपसे बात करने (बोलने) के योग्य है अर्थात् वह यह चाहता है कि आप उसकी इच्छा को जानें और यह कि उसने बातचीत करने के लिए प्रावधान कर दिया है।

अपने उत्तरों को जांच लें

5 1) के अन्तर्गत, मसीह के आज्ञाकारी होने के कारण इन बातों को सम्मिलित किया जाना चाहिए: (अ) क्षमा सबके लिए उपलब्ध है; (स) मनुष्य जाति स्वतन्त्र की गई; तथा (द) जीवन प्रदान किया गया। 2) के अन्तर्गत, आदम के अनाज्ञाकारी होने के कारण : (ब) मृत्यु ने राज्य करना आरम्भ किया, तथा (य) दण्डाज्ञा सब पर लागू हुई।

1 (स) यूहन्ना 17:8
(द) प्रेरितों के काम 18:8

6 परमेश्वर आपसे यही चाहता है कि निरंतर उसकी योजना का अनुसरण करें क्योंकि आपका आज्ञाकारी होना आशीष लाएगा, उसके राज्य का निर्माण और विकास करेगा, और उसे आनन्द पहुँचाएगा (प्रसन्न करेगा)।

2 क्योंकि उद्धार उस समय आता है जब एक व्यक्ति "मसीह में विश्वास करने" के निर्देश का पालन करता है (आपका उत्तर इसी प्रकार का होना चाहिए)।

7 (अ) यूहन्ना 14:26(3)
(ब) यूहन्ना 16:14(5)
(स) यूहन्ना 14:16(1)
(द) यूहन्ना 14:26(3)
(य) यूहन्ना 16:13(4)
(र) यूहन्ना 16:14(5)
(ल) यूहन्ना 14:17(2)

3 आपका अपना उत्तर। मैं तो यह कहूँगा कि यदि आप मसीह में एक विश्वासी हैं तो आप निश्चय ही परमेश्वर की योजना में प्रवेश कर चुके हैं क्योंकि आपने उसकी आज्ञापालन की है। आपने मसीह में विश्वास करने के द्वारा परमेश्वर की आज्ञा मानी है तथा आपने उसके वचन की साक्षी (प्रमाणों) और पवित्र आत्मा पर विश्वास किया है।

8 (ब) पवित्र आत्मा (आत्मा) स्वयं ही हमारे द्वारा प्रार्थना (विनती) करता है।

4 (अ) उसने उनसे कहा कि वे उसकी सब आज्ञाओं का पालन करें।
(ब) उसने कहा कि–मिस्र पर भेजी जाने वाली बीमारी (विपत्ति) से उनको कुछ भी हानि न होगी अर्थात् उन पर इनमें से एक भी विपत्ति न आएगी।

(आपका उत्तर इसी प्रकार का होना चाहिए।)

9 आपका उत्तर इस प्रकार का होना चाहिए :

(अ) यीशु मसीह नें कहा कि पवित्र आत्मा आएगा कि उसके अनुयायियों का मार्गदर्शन करे;

(ब) पवित्र आत्मा के भेजे (दिये) जाने की मसीह की प्रतिज्ञा पेन्तिकुस्त के दिन पूरी हुई; और (स) पवित्र आत्मा हमारे द्वारा (हममें होकर) प्रार्थना (विनती-निवेदन) करता है, हमें बुद्धि और ज्ञान के वरदान देता है, हममें निवास करता है और हमें परमेश्वर का वचन अर्थात् बाइबल को दिया है।

पाठ–तीन

क्या परमेश्वर बहुत अधिक अपेक्षा करता है?

...... उसकी योजना बहुत बड़ी है?

सत्रह वर्षीय सैम पहिली बार घर से बाहर गया था। उसने अपने छोटे से कस्बे में स्कूल की पढ़ाई पूरी की थी। अब वह अपने देश की राजधानी में विश्वविद्यालय में पढ़ाई करने के लिए आया था। कक्षा में पहिला दिन तो उसके लिए डरावना सा था। जितने विद्यार्थी उसके कस्बे के स्कूल में थे उतने तो यहाँ केवल एक कक्षा में थे। इसके अतिरिक्त, टीचर ने साल भर में किए जाने वाले अध्ययन–पढने के कार्य, लिखने के कार्य, परीक्षाएँ, जबानी रिपोर्ट एव अन्य कार्यों की लम्बी सूची विद्यार्थियों को बताई। यह तो असंभव जान पड़ा! सैम अत्यन्त हतोत्साहित हो गया।

सैम ने जिस बात पर ध्यान नहीं दिया था वह थी : सब कुछ उसी दिन में नहीं करना था: इसके अतिरिक्त टीचर भी सहायता करेगा। टीचर था ही वहाँ इसी कार्य के लिए.....सैम को उन सब लक्ष्यों को पूरा करने में सहायता करना। सैम धीरे-धीरे उन्नति कर सकता था। प्रत्येक नया पाठ उसे पिछले पाठ में प्राप्त ज्ञान में आगे बढ़ने हेतु प्रोत्साहित करता। अन्ततः वह अपना लक्ष्य प्राप्त करने में सफल हो जाता।

जब भी हम परमेश्वर की विशाल योजना को देखना आरंभ करते हैं हम ठीक सैम के समान सोचना आरंभ कर देते हैं। यह हमें बहुत बड़ी दिखाई देती है; यह असंभव सी प्रतीत होती है। हाँ, हमारी प्रकृतिक या स्वाभाविक शक्ति से करने में तो यह असंभव ही है। परन्तु परमेश्वर के साथ सब कुछ संभव है। इस पाठ में हम उन बातों का अध्ययन करेंगे जो परमेश्वर हमसे अपेक्षा करता है; परन्तु हम उन बातों पर भी ध्यान देंगे जो वह हमारे लिए और हमारे द्वारा करता है कि जो लक्ष्य परमेश्वर ने हमारे जीवनों के लिए निर्धारित किए हैं उन्हें पूरा किया जाए।

इस पाठ में आप सीखेंगे...

- परमेश्वर महान बातों (कार्यों) की अपेक्षा करता है।
- परमेश्वर सामर्थपूर्ण सहायता देता है।
- जब हम असफल हो जाते हैं तब भी परमेश्वर अपना कार्य करने से रुकता नहीं है।

यह पाठ आपकी सहायता करेगा...

- वर्णन करें कि परमेश्वर हमसे क्या अपेक्षा करता है।
- समझाना कि हम परमेश्वर की माँगों (अपेक्षाओं) को कैसे पूरा कर सकते हैं।
- समझाना कि हमारी असफलताएँ हमारे लिए परमेश्वर की योजना को नष्ट क्यों नहीं करतीं।

परमेश्वर महान बातों की अपेक्षा करता है

विषयवस्तु 1. परमेश्वर ने जो लक्ष्य हमारे लिए निर्धारित किए हैं उनको पूरा करने में हमें परमेश्वर की सहायता की क्यों आवश्यकता है....इन कारणों को पहिचानना।

जब आप परमेश्वर की योजना में उसके सहायक बनते हैं तब आपके पास उज्ज्वल भविष्य है। जो रूपरेखा वह आपके लिए अपनी योजना में बनाता है वह भली और अनन्त काल तक के लिए है। आइए, एक साथ मिलकर उन कुछ लक्ष्यों पर विचार करें जो उसने हमारे लिए निर्धारित किए हैं और जो उसकी रूपरेखा के भाग हैं। हम विशेषकर उन लक्ष्यों पर ध्यान देंगे जो परमेश्वर हम सबसे चाहता है कि उन्हें पूरा करें। जब इन लक्ष्यों तक सफलतापूर्वक पहुँचने में परमेश्वर हमारी सहायता करता है तो वह हमारे व्यक्तिगत जीवनों में भी अपनी योजना को पूरी करने में सक्षम है।

रूपान्तरण (कायापलट)

रोमियों 12:2 हमें बताता है कि हमारा पूरी तरह रूपान्तरण होना है। मैं सोचता हूँ कि अधिकांश लोगों की इच्छा है कि उनका रूपान्तरण या कायापलट हो। परन्तु उनके पूर्व परिवर्तन के स्थान पर वे बाहरी परिवर्तन ही चाहते हैं...ऐसा करने के लिए वे किसी

व्यक्ति या किसी आदर्श की नकल किया करते हैं। क्या यही हमारे लिए परमेश्वर की योजना है? क्या वह हमसे बस यही चाहता है कि जो कोई भला व्यक्ति हो हम उसके बाहरी गुणों को देखकर उसकी नकल करने लगें? ऐसा करना न केवल कठिन होग। पर संभवतः असंभव होगा। इसके अतिरिक्त, यदि ऐसा करने में हम सफल हो भी जाते हैं तो इससे क्या लाभ? आप ध्यान देते रहे हैं कि परमेश्वर की योजना वास्तव में कितनी व्यापक है; तो क्या हम मात्र नकल करने वाले बने रहें? यह विचार किसी भी रूप में उचित प्रतीत नहीं होता।

रूपान्तरण अथवा कायापलट नकल अथवा अनुकरण करने से कहीं बढ़कर है। रूपान्तरण अथवा परिवर्तित होना परमेश्वर की शेष योजना की कुंजी (मूल बात) है। इसके बिना, हमारे लिए जो परमेश्वर की योजना में निहित है उससे पूरी तरह वंचित होना है। दूसरे शब्दों में, परिवर्तित हुए बिना हम परमेश्वर की योजना के लाभों से वंचित रह जाते हैं।

फरीसियों ने धार्मिक व्यवहार की मात्र नकल की थी। उनका कभी रूपान्तरण अथवा परिवर्तन नहीं हुआ था। मत्ती 15:7-8 में ध्यान दें कि यीशु ने उनके विषय में क्या कहा था। इसमें कोई आश्चर्य नहीं कि उन्होंने अपने शत्रुओं से प्रेम किया ही नहीं। स्वभावतः न तो हम अपने शत्रुओं से प्रेम करते हैं। और न ही अपने शाप देने वालों को आशीष ही देते हैं। यीशु के पर्वतीय उपदेश (मत्ती 5-7) पर ध्यान देते समय हम पाते हैं कि यीशु मसीह के बहुत सारे आदेशों का पालन करना बिल्कुल असंभव है...जब तक हमारा पूर्ण परिवर्तन न हो जाए।

हो सकता है कि आप ऐसी कई "असंभवनाओं" से मुकाबला कर चुके हैं जिनकी अपेक्षा परमेश्वर ने आप से की थी।

आपके लिए कार्य

1 नीचे दिये गये पवित्रशास्त्र के सन्दर्भों (पदों) में कुछ विशेष व्यवहार का वर्णन किया गया है। प्रत्येक पद को पढ़िए। तब व्यक्ति के गुण के अनुसार पद का मिलान कीजिए और रिक्त स्थान में अंक लिखें।

... (अ) मत्ती 5:40
... (ब) मत्ती 5:44
... (स) मत्ती 6:2
... (द) मत्ती 6:5
... (य) मत्ती 6:36

1) व्यक्ति जो नकल करने का प्रयत्न करता है।
2) व्यक्ति जिसका परिवर्तन हो गया।

आज्ञाकारिता

पिछले पाठ में हमने इस सच्चाई पर ध्यान दिया था कि परमेश्वर आज्ञाकारिता की माँग करता है। जब हम आज्ञाकारी होने की इच्छा रखते हैं और वह हमसे आज्ञाकारी होने की इच्छा रखता है, तो ऐसा करने से हमें कौन रोक सकता है? सच तो यह है कि कई बातें की जा सकती हैं।

पवित्रशास्त्र में कई आज्ञाएँ सक्रिय (क्रियाशील) हैं अर्थात् वे हमें आदेश देती हैं कि 'कुछ करना है'। अन्य आज्ञाएँ निष्क्रिय (कर्मप्रधान) हैं अर्थात् वे हमें आज्ञा देती हैं 'हमारे लिए कुछ किए जाने की स्वीकारोक्ति (अनुमति)' अथवा किसी बात का अनुभव करना। हम देख सकते हैं कि निष्क्रिय (कर्मप्रधान) आज्ञाओं का पालन करना हमारे लिए असंभव है, परन्तु सक्रिय (कर्तृवाचक)

आज्ञाओं का पालन करना भी असंभव है, क्योंकि ये हमारी स्वाभाविक इच्छाओं के विपरीत माँग करती हैं।

हमारे परिवर्तित हो जाने के बाद भी हम पाते हैं कि जो सत्य और ठीक है उसे कर पाना हमेशा सरल नहीं होता। फिर भी हम निरन्तर प्रयत्नशील रहते हैं कि सही और ठीक करें कि यीशु मसीह द्वारा स्थापित स्तर से मेल खा सकें। हम अन्य और भी ताकतों का अनुभव करते हैं। ये ताकतें (बल) लगता है कि हमें गलत काम या व्यवहार की ओर प्रेरित करती हैं।

आपके लिए कार्य

2 रोमियों 7:21-23 तक पढ़िए और नीचे दिए गए प्रश्नों का उत्तर अपनी नोटबुक में लिखिए।

(अ) पौलुस प्रेरित किस विरोध (संघर्ष) का सामना कर रहा था?

(ब) इस परिस्थिति के लिए वह क्या स्पष्टीकरण देता है?

पौलुस ने यह व्यवस्था (नियम) नहीं बनाई थी; उसने देखा कि यह तो उसमें आप से ही क्रियाशील है। उसका आज्ञाकारी होना इतना सहज और सरल था कि जो भी ठीक था और जिसे करने की इच्छा उसमें थी वह सब "व्यवस्था" ने त्रसित कर दिया था।

विकास

परिवर्तन (रूपान्तरण) तथा आज्ञाकारिता के अतिरिक्त यह स्पष्ट है कि परमेश्वर भी विकास की अपेक्षा (माँग) करता है। वह नहीं चाहता कि हम आत्मिक "शिशु" ही न बने रहें परन्तु

"बाल्यावस्था" में बढ़ें और अन्त में "वयस्क" बन जाएँ। जब हम बढ़ने (विकास करने) लगते हैं तो हम यह निर्णय करना आरंभ करते हैं कि सबसे महत्त्वपूर्ण क्या है जिससे कि हम सही चुनाव कर सकें। यह हमें स्थिरता प्रदान करता है। जब हम बढ़ते (विकास) करते हैं तो न केवल हम अधिक सीखते हैं परन्तु हम प्राप्त करने से देने की ओर बढ़ते जाते हैं। हममें हमेशा सीखने की प्रवृत्ति पनपती है और इस प्रकार हममें सिखाने का उत्तरदायित्व जागृत होता है। फिर भी, अभी हम परमेश्वर की योजना की खोज में पहिला क़दम उठाने की बात कर रहे हैं; दूसरों को सिखाना अप्राप्य लक्ष्यों तक पहुँचने के समान दिखाई दे सकता है।

आपके लिए कार्य

3 नीचे दिए गए सन्दर्भों को इफिसियों की पत्री में पढ़िये। प्रत्येक सन्दर्भ के आगे दिए गए अक्षर में से उस अक्षर पर गोला बनाएँ जिसमें आत्मिक विकास के तरीके को समझाया गया है।

(अ) 2:4-5
(ब) 4:13-15
(स) 5:1-2

4 नीचे दिए गए कथनों में एक कथन सबसे उत्तम है जिसमें यह समझाया गया है कि जो कुछ परमेश्वर हमसे अपेक्षा (माँग)

करता है उसको करने में उसकी सहायता की आवश्यकता होती है। सही उत्तर वाले अक्षर पर गोला बनाएँ।

(अ) नये विश्वासी परमेश्वर से यह अपेक्षा नहीं कर सकते कि वह उनको बताए कि क्या करना है।

(ब) हम एक ऐसे संसार में रहते हैं जिसमें अधिकांश लोग परमेश्वर की इच्छा पूरी करने का विरोध करते हैं।

(स) हमारी स्वाभाविक इच्छाएँ कि परमेश्वर हमसे क्या चाहता है कि ओर हमारी अगुवाई नहीं करतीं।

(द) हमारे लिए यह समझना वास्तव में कठिन है की परमेश्वर हमसे क्या चाहता है।

परमेश्वर सामर्थपूर्ण सहायता प्रदान करता है

विषयवस्तु 2. हमारे आत्मिक विकास में परमेश्वर के भाग (कार्य) और अपने भाग (कार्य) को पहिचानने का विवरण।

क्या परमेश्वर बहुत अधिक अपेक्षा करता है? क्या उसे सन्तुष्ट करना संभव है? क्या वह सहायता करेगा?

हमने कुछ लक्ष्यों के बारे में वर्णन किया था जिन्हें परमेश्वर ने हमारे लिए निर्धारित किए हैं। वे लक्ष्य जैसे भिन्न दिखाई देते हैं, वास्तविकता में हैं नहीं। ये लक्ष्य परमेश्वर के उन कार्यों को हमें दिखाते हैं जो वह विभिन्न दृष्टिकोणों से करना चाहता है।

हमने इस बात पर भी ज़ोर दिया था कि परमेश्वर की रूपरेखा और योजना में ये लक्ष्य मौलिक हैं और इनकी अपेक्षा प्रायः सब से की जाती है। इन्हें पूरा करने में परमेश्वर हमारी सहायता करता है। आइए, उन कुछ लक्ष्यों पर ध्यान दें जिनका अध्ययन हम कर चुके हैं और देखें कि उसकी योजना का अनुसरण (पालन) करने में परमेश्वर किस प्रकार सहायता करता है।

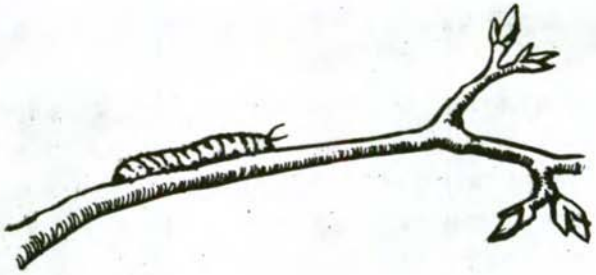

परमेश्वर हमें बदल देता है

प्रकृति के महान रहस्यों में एक रहस्य यह है कि एक इल्ली, तितली कैसे बन जाती है। एक इल्ली (केटरपिलर) अधिकतर कीड़े से सम्बन्धित है, किसी और से नहीं! वह रेंगती है और यदि उड़ना भी चाहे तो नहीं उड़ सकती। क्या उसके बारे में यह सोचा जा सकता था कि वह इतनी सुन्दर भी होगी? फिर भी उसके जीवन की बनावट में परमेश्वर ने बदलाहट का रूप रखा है। क्योंकि जब वह रेंगना ही आरंभ करती है, तो परमेश्वर का निश्चय यह है कि वह उड़े। यह परिवर्तन कैसे होता है?

इल्ली जब कोया (कोकून) में प्रवेश करती है तो इल्ली के रूप में "मरना" होता है जिससे कि वह एक उड़ने वाली तितली बनकर निकले। वह उड़ना सीखती नहीं। इल्ली प्रकृति के अनुरूप रेंगती है; तितली प्रकृति के अनुरूप उड़ती है। यह रूपान्तरण या बदलाव "रूपान्तरित होना" कहलाता है–यह इल्ली के प्रयास या कार्य का परिणाम नहीं है कि तितली की नकल करके सीख ले। यह तो अन्दरुनी (अन्दर के) बदलाव का परिणाम है।

आपके लिए कार्य

5 नीचे दिए गए सन्दर्भ अपनी बाइबल में से पढ़ें। इनमें से कौन सा सन्दर्भ रूपान्तरित होने का सबसे अच्छा विवरण प्रस्तुत करता है जो एक मसीही का सच्चा अनुभव है?

(अ) गलतियों 2:19-20
(ब) इफिसियों 1:9-10
(स) 2 पतरस 1:10

इल्ली का रूपान्तरित होना वास्तव में उस बात को हम पर प्रकट करता है जो परमेश्वर हममें कर रहा है। रूपान्तरित होने का विचार रोमियों 12:1-2 में दिया गया है जो उस बदलाव या परिवर्तन से सम्बन्धित है जिसकी अपेक्षा परमेश्वर करता है। ध्यान दीजिए—यह तभी हो सकता है जब नये जीवन का सिद्धान्त हममें हो। जैसा कि हमने कहा, इल्ली स्वयं को बदलने का प्रयास नहीं करती हैं। जो जीवन परमेश्वर ने उसमें रखा है वही उसे तितली में बदलता है। इसी प्रकार, जब हम पवित्र आत्मा के प्रति आज्ञाकारी होते हैं, जिसे परमेश्वर ने हमारे अन्दर रखा है, तो हम भी बदल जाते हैं अर्थात् हमारा जीवन-परिवर्तित हो जाता है।

आपके लिए कार्य

6 रोमियों 12:1-2 पढ़िए और नीचे दिए गए प्रश्नों का उत्तर अपनी नोटबुक में लिखिए।

(अ) हमसे कौन सी दो बातें करने को कही गई हैं?

(ब) हम परमेश्वर को क्या करने के लिए अपने हृदय में न्योता दें?

परमेश्वर की सामर्थ हम में कार्य करती है

"कर्मप्रधान" आज्ञाओं में परमेश्वर की भूमिका को देखना सरल है जब हमारा कार्य केवल सहयोग करना होता है। परन्तु वे कौन सी बातें हैं जो परमेश्वर हमसे करने के लिए कहता है? क्या हम इनको पूरा करने के लिए अपनी शक्ति पर निर्भर रहते हैं? उदाहरण के लिए, इफिसियों 4:17—6:20 में हमें अनेकों व्यवहारिक बातें बताई गई हैं जिनके द्वारा हम अपनी मसीहियत,

अपनी "मसीह की अनुरूपता" (मसीह के समान होने) को दर्शा सकते हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि अन्ततः हमारे करने के लिए छोड़ दी गई हैं। परन्तु फिर भी इनको करना हमारी अपनी सामर्थ के बाहर प्रतीत होता है—क्योंकि इनकी अपेक्षा अधिक है।

इफिसियों 2:10 में हम पढ़ते हैं कि परमेश्वर ने हमें बनाया है और हम मसीह यीशु में भले कार्यों के लिए सृजे गए हैं। इन भले कार्यों का नाम इफिसियों 4:17—6:20 में दिया गया है। तब इफिसियों 3:20 में हमें बताया गया है कि परमेश्वर "जो ऐसा सामर्थी है, उस सामर्थ के अनुसार जो हम में क्रियाशील है, कि हमारी विनती और कल्पना से कहीं अधिक बढ़कर कार्य कर सकता है।"

इस पर विचार कीजिए। हमारी माँग अब यहाँ उसकी सामर्थ और योग्यता की सीमा के निकट है, और वह सामर्थ हमारे अन्दर कार्य करती है।

हमने "व्यवस्था" के विषय में बताया था जो पौलुस में कार्यकारी थी (और वह हममें से प्रत्येक में कार्यकारी रही थी)। इसने उसके सिद्ध आज्ञापालन का विरोध किया था। यदि वह "व्यवस्था" इतनी शक्तिशली है तो क्या यह परमेश्वर की योजना को हमारे लिए सीमित कर सकती थी? पौलुस ने भी अपने जीवन के एक चौराहे पर यह महसूस किया था कि यह "व्यवस्था" उसे बड़े प्रभावशाली रूप में वह करने से रोकती रही जिसे वह करना चाहता था। परन्तु इस द्विविधा का उत्तर रोमियों 8:1-4 में दिया गया है।

"व्यवस्था" (विधि, नियम, सिद्धांत) का प्रभाव जो अनाज्ञाकारिता का कारण बनता है उसे समाप्त (निलंबित) कर दिया गया; अब "दण्डाज्ञा नहीं" रही (रोमियों 8:1)। इसके विपरीत, परमेश्वर की सामर्थ हममें कार्य करती है।

परमेश्वर ने अपने पुत्र को भेजकर हमारी मदद की; वह पवित्र आत्मा के सामर्थ से हमारी सहायता करता है। आपके लिए परमेश्वर की योजना यह नहीं कि वह आपसे कुछ कराना चाहता है। वास्तव में, यही तो वह आपके लिए एवं आपके द्वारा कराना चाहता है।

बाइबल हमें यह समझने के लिए केन्द्रीय विचार देती है कि परमेश्वर की योजना को अपने प्रयत्न से करने तथा उसकी योजना को अपने जीवन में लागू होने देने के मध्य सन्तुलित बनाया रखा जाए तथा परमेश्वर को कार्य करने का अवसर देने के निमित्त हमारे जीवन उसी पर निर्भर हों। इस विचार का विवरण फिलिप्पियों 2:12-13 में दिया गया है।

अपने उद्धार के निमित्त डरते और काँपते हुए सक्रिय रहो, क्योंकि परमेश्वर सदैव कार्य करता है कि आपको अपने अभिप्राय: के प्रति आज्ञाकारी होने और स्वीकारने योग्य बनाए।

आपके लिए कार्य

7 नीचे तीन कथन दिए गए हैं कि हम कैसे उन लक्ष्यों तक पहुँच सकते हैं जो परमेश्वर ने हमारे लिए निर्धारित किए हैं जो विवरण सबसे उपयुक्त हो उसके अक्षर पर गोला बनाएँ।

(अ) हम निर्णय करते हैं कि संसार का अनुसरण नहीं करेंगे। जब हम ऐसा करते हैं तो हम अपने मनों का रूपान्तरण करते हैं जिससे कि हम यहोवा की आज्ञा-पालन कर सकें। अधिकाधिक प्रयास करने के द्वारा हम लक्ष्यों को प्राप्त कर लेते हैं।

(ब) हम अपने आपको परमेश्वर को दे देते हैं कि उसके आज्ञाकारी बनें। ठीक इसी समय परमेश्वर की सामर्थ हमें रूपान्तरित (बदलने) करने के लिए हममें कार्य करती है। एक साथ मिलकर हम उन लक्ष्यों को प्राप्त करने की ओर अग्रसर होते हैं जो उसने निर्धारित किए हैं।

(स) परमेश्वर हमारे मनों पर नियंत्रण कर लेता है और हमें तैयार करता है कि जो ठीक है वही करें। क्योंकि जो लक्ष्य उसने निर्धारित किए हैं वे कठिन हैं, इन लक्ष्यों तक पहुँचने में वही सब कार्य स्वयं करता है।

जब हम असफल होते हैं, परमेश्वर रुकता नहीं है

विषयवस्तु 3. ऐसे कारणों को चुनना कि हम कैसे आश्वस्त हो सकते हैं कि हमारी असफलताएँ हमारे लिए परमेश्वर की योजना को नष्ट नहीं करतीं।

परमेश्वर की योजना को समझने और उसके निर्देशन का पालन करने में एक पहलू है जिसका हम सामना नहीं करना चाहते हैं : कहीं न कहीं हम असफल होते हैं। शायद यह अज्ञानता अथवा निर्बलता की दशा में होता है। कभी-कभी तो हमारे उद्देश्य ही सही नहीं होते। "सामर्थ जो हममें कार्यकारी है" (इफिसियों 3:20) इसके होने के उपरान्त, तथा उस सत्य के होने के बावजूद कि "परमेश्वर निरन्तर हममें कार्य करता है" (फिलिप्पियों 2:13), हम असफल हो जाते हैं।

असफल होना

पाप के लिए परमेश्वर के पास उत्तर है--क्षमा, नया जन्म। परन्तु यदि हम नया जन्म पाने के बाद भी असफल होते हैं तब क्या होगा? क्या हमारा असफल होना परमेश्वर की योजना को बदल देता है? तब क्या हम "दूसरी उत्तम बात" के लिए प्रयास

करें? यदि हम एक योजना में असफल होते हैं तो क्या परमेश्वर के पास हमारे जीवन के लिए और भी अनेक रूपरेखाएँ हैं? क्या हमारे असफल होने को परमेश्वर आश्चर्य के रूप में लेता है? तब क्या वह हमें यूँ ही छोड़ देता है कि हम अपनी समस्याओं से आप ही निपटें?

आइए, कुछ ऐसी सच्चाइयों पर मनन करें जो हमारे असफल होने की दशा को समझने में कारगर सिद्ध होंगी—हम क्यों असफल होते हैं और इसके प्रति परमेश्वर की प्रतिक्रिया क्या होती है। यह मनन ऐसे अनेक प्रश्नों के उत्तर देने में हमारी सहायता करेगा।

हमारा भूतकाल में असफल होना—हम पर प्रभाव डालता है

हमारी अधिकतर संवेदनाएँ और मनोभाव हमारी अपनी बातों (इतिहास) से एक विशेष रूप धारण करती हैं। उदाहरण के लिए यदि एक विशेष अवकाश का दिन साल-दर-साल आनन्द व खुशी के रूप में मनाया जाता है, तो इस दिन के निकट आने पर हमारे अन्दर विशेष प्रकार की संवेदना जागृत होने लगती है। कुछ छुट्टी के दिन तो उत्सव मनाने के होते हैं। परिवार में लोग और मित्र आपस में इनाम दिया करते हैं। घर सजाए जाते हैं। आनन्द और गीतों का समा बँध जाता है। जब ये छुट्टी के दिन निकट आने लगते हैं तो बीते उत्सव की बातें याद आने लगती हैं। लोग एक विशेष प्रकार के मनोभाव से भर उठते हैं। और ये संवेदनाएँ तथा मनोभाव उस बात से प्रभावित होते हैं कि व्यक्ति के सोचने का ढंग क्या है।

इसी प्रकार से कभी-कभी असफलताएँ हमारे मनोभावों पर प्रभाव डालती हैं। मसीह का हमारे जीवनों में आने से पूर्व हमारे पास अपने पापों का इतिहास होता है। जब ऐसी परिस्थितियाँ

हमारे समक्ष आती हैं जिनमें पहिले हम असफल हुए थे तो उन असफलताओं की स्मृति भी हमारे मानस-पटल पर अंकित हो जाती हैं। तब हमारे मनोभाव हमें एक विशेष बात को सोचने के लिए बाध्य करते हैं। शैतान हमारी इन स्मृतियों और मनोभावों को परीक्षा में डालने हेतु प्रयोग करता है, और हम ठीक वैसा ही व्यवहार करने लगते हैं जैसा कि हम पूर्व में किया करते थे।

आपके लिए कार्य

8 निम्नलिखित में से कौन-सी घटना एक ऐसा उदाहरण है जिसमें बताया गया है कि व्यक्ति विशेष ढंग का इतिहास उसके मनोभाव (सोचने के ढंग) पर प्रभाव डाल सकता है?

(अ) टेरेसा के विश्वासी होने से पूर्व उसके कुछ ऐसे मित्र थे जो सही जीवन नहीं जी रहे थे। अपनी मित्रता बनाए रखने के लिए टेरेसा ने भी उनके जैसे ग़लत काम किए। अब वह एक विश्वासी है और अब वह उन ग़लत कामों— को नहीं करती है। उसके नये मित्र उसको सही जीवन जीने के लिये उत्साहित करते हैं।

(ब) जैस्सी के विश्वासी बनने के पूर्व वह अक्सर उन लोगों पर क्रोधित हो जाया करता था जिनके विचार उससे मेल नहीं खाते थे। हाल ही में उसकी मुलाकात एक ऐसे मसीही भाई से हुई जो उससे सहमत नहीं था। जैस्सी को यह महसूस होने लगा कि उसके अन्दर उस मसीही भाई के प्रति क्रोध उत्पन्न होने लगा है।

अतः वास्तविकता में, उद्धार पाने के बाद हमें पाप नहीं करना चाहिए, पर अक्सर हम कर बैठते हैं। हमारी आदतें हमेशा सही

नहीं रहतीं—क्योंकि हमारे चारों ओर का वातावरण शाप के अधीन है। हम असफल होते हैं क्योंकि अभी भी हम मनुष्य प्राणी हैं, अभी भी परीक्षा में पढ़ते हैं, अभी भी हम पतित संसार में रहते हैं, अभी भी बढ़ रहे हैं और अभी भी हमें बदलने की आवश्यकता है।

परमेश्वर हमारी असफलताओं को जानता है

हमारी सब असफलताओं को परमेश्वर जानता है। यह महसूस करना अति आवश्यक है कि हम परमेश्वर को महज आश्चर्य के रूप में ग्रहण नहीं करते हैं। हमारे जीवन की किसी परिस्थिति में ऐसा नहीं होता; न ही कोई छू लेने वाली बात से ऐसा होता है। यदि हमारा पाप परमेश्वर को आश्चर्य में नहीं डालता, यदि हमारे अनुभव करने से पूर्व ही वह हमारी असफलताओं को जानता है, तब हमें निश्चय हो सकता है कि उसने हमारी असफलताओं को अपने लेखे में ले लिया है।

आपके लिए कार्य

9 पहले पाठ के अन्त में आपसे भजन संहिता 139 पर मनन करने के लिए कहा गया था। यह भजन हमें पुनः निश्चय दिलाता है कि परमेश्वर हमारे बारे में सब कुछ जानता है। पद 2-4 तथा 11-16 को दुबारा पढ़ें। प्रत्येक सही कथन के अक्षर पर गोला बनाएँ।

(अ) हमारे लिए परमेश्वर का ज्ञान हमारे जन्म से ही आरंभ होता है।

(ब) हमारे कुछ सोच-विचारों को परमेश्वर नहीं जानता है।
(स) हमारे प्रत्येक कार्यों (बातों) को परमेश्वर जानता है।

परमेश्वर का अनुग्रह हमारी असफलताओं पर विजयी होता है

हमने बताया कि परमेश्वर हमारी असफलताओं के बारे में जानता है। जब हम असफलता की सच्चाई पर विचार करते हैं तो हमारे पास ऐसे कौन से प्रावधान हैं जो यह दर्शाते हैं कि परमेश्वर का अनुग्रह निरन्तर हमारे जीवनों में कार्य करता है?

पहिला, क्षमा उपलब्ध है; यह हमारे पाप से अलग करने के लिए परमेश्वर का तरीका है। 1 यूहन्ना 1:9 में हम पढ़ते हैं कि परमेश्वर हमारे पाप क्षमा करने की प्रतिज्ञा करता है, जब हम उसके सामने अपने पापों को मान लेते हैं। हमारे जीवनों के लिए परमेश्वर की योजना कभी भी हमारे स्वयं के प्रयत्न से सिद्ध बनने पर आधारित नहीं है परन्तु यह तो परमेश्वर के ज्ञान और उसकी योग्यता पर आधारित है।

दूसरा, परमेश्वर की सामर्थ उपलब्ध है। परमेश्वर जो भी सामर्थ आपको उद्धार पाने में इस्तेमाल करता है वह हमारे उद्धार प्राप्त कर लेने के बाद भी बनी रहती है। परमेश्वर ने आपके जीवन में अपनी योजना को लागू करने में आपके उद्धार पाने के बाद तक प्रतीक्षा नहीं की। आपके उद्धार का अनुभव उस दिन को दर्शाता है जब आपने परमेश्वर की योजना में सम्मिलित होने का चुनाव किया। यह परमेश्वर का नहीं आपका चुनाव था। उसके सन्तान होने के नाते आपको यह निश्चय हो सकता है कि अभी ही उसकी सामर्थ आपके लिए उपलब्ध है।

परमेश्वर की यह सामर्थ प्रभावकारी है। 2 कुरीन्थियों 12:7-10 में पौलुस प्रेरित अपने अनुभव का वर्णन करता है। उसने जिस

छुटकारे के लिए प्रार्थना की थी उसको पाने में वह "असफल" रहा था। परन्तु अपने अनुभव के द्वारा पौलुस ने एक सबक सीखा जो हमें यह दर्शाता है कि परमेश्वर की सामर्थ किस तरह प्रभावकारी है।

आपके लिए कार्य

10 2 कुरिन्थियों 12:7-10 पढ़िए और अपनी नोटबुक में नीचे दिए गए प्रश्नों का उत्तर लिखिए।

(अ) जिस अनुभव का पौलुस ने वर्णन किया उससे उसने परमेश्वर की सामर्थ के विषय में क्या सीखा?

(ब) जो कुछ उसने सीखा था उसके परिणामस्वरूप पौलुस क्या करने योग्य बन गया?

इसके अतिरिक्त, हमारे असफल होने के बावजूद परमेश्वर की सामर्थ कार्य करती है। जब हम असफलता का सामना करते हैं तो अक्सर हम इस बात का सामना करते हैं: क्या असफलता का अर्थ है मेरे पास "परमेश्वर की उत्तमताओं का दूसरा भाग"? अर्थात् जो परमेश्वर की दृष्टि में सबसे उत्तम है उससे "निचले स्तर" की आशीषें? क्या मैंने अपने लिए उसकी सिद्ध योजना को नष्ट कर दिया है?

परमेश्वर ने यिर्मयाह नबी को एक सबक सिखाया जो कि उपरोक्त बातों को समझने में हमारी सहायता करेगा। इस्राएल जाति की असफलता को देखने के उपरान्त यिर्मयाह को एक कुम्हार के घर भेजा गया (यिर्मयाह 18:1-10)। उसने कुम्हार को ध्यान से देखा कि वह मिट्टी लेकर उसे विभिन्न आकार का पात्र बना देता है। पर जब वह मिट्टी को आकार दे रहा होता तो ठीक

उसके बनने के बीच में ही वह "असफल" हो जाता। पात्र का रूप बिगड़ जाता। वह उस मिट्टी को फेंकने या बिगड़े रूप का पात्र बनाने के बजाए वह उसे फिर से नया आकार देता और इस प्रकार एक सुन्दर पात्र बन जाता।

यिर्मयाह ने यह समझना आरंभ किया कि परमेश्वर ने इस्राएल के असफल होने को किस रूप में लिया। परमेश्वर यह नहीं चाहता था कि उनको निकाल फेंके परन्तु उनको नया रूप देना चाहता था।

परमेश्वर के ज्ञान में न केवल आपकी अपूर्णताएँ पर पूर्णताएँ भी जानी गई हैं। परमेश्वर अभी भी आपको ऐसे पात्र में परिवर्तित कर देना चाहता है जो उसे प्रसन्न करने योग्य ठहरे। वह मिट्टी के पात्र रूपी आपके जीवन में जिन अवयवों (उपादानों) को देखता है वह है "आपके जीवन में मसीह" (कुलुस्सियों 1:27)। असफलता, चाहे वह पाप क्यों न हो इस सत्य को नहीं बदल सकती कि मसीह आपके जीवन में निवास करता है।

इब्रानियों का 11वाँ अध्याय उन तमाम व्यक्तियों के नामों की सूची बताता है, जिन्हें विश्वास के वीरों की पदवी मिली और आदर-योग्य महिमा। उनके जीवनों का कभी भी परमेश्वर की "निचले स्तर" की योजना के रूप में वर्णन नहीं किया जाएगा। परन्तु, इनके नामों की सूची पर ध्यान दीजिए। यदि आपको इन लोगों के जीवन वृतान्त पढ़ने का अवसर मिला हो, तो आप यह महसूस करेंगे: ये लोग जानते थे कि असफलता क्या थी। उनकी "असफलताएँ" थीं—पर वे इतिहास के वीर-नायक हुए।

आपके लिए कार्य

11 हमने बताया है कि हमें यह निश्चय हो सकता है कि हमारी असफलताएँ और निर्बलताएँ हमारे निमित्त परमेश्वर की योजना को नष्ट नहीं करतीं। नीचे दिए गए कथनों में से उन कथनों के अक्षरों पर गोला बनाएँ जो ऊपर बताई गई बात का सटीक कारण बताते हैं।

(अ) प्रत्येक के जीवन में असफलताएँ आती हैं।

(ब) परमेश्वर की योजना हमारी योग्यता पर आधारित है कि यीशु मसीह को ग्रहण करने के उपरान्त ही इस पर पूरी तरह से अमल होता है।

(स) हमारी असफलताओं को बहुत पहले से जानते हुए भी परमेश्वर ने हमारे लिए अपनी योजना बनाई है।

(द) हमारी असफलताएँ और पाप, परमेश्वर की सामर्थ को हमारे अन्दर कार्य करने से नहीं रोक सकते।

(य) लोग अक्सर असफल होते हैं क्योंकि उनका इतिहास ही असफलताओं से भरा है।

(र) जो असफल होते हैं परमेश्वर के पास उनके लिए "निचले स्तर" की योजना है।

इब्रानियों ।। अध्याय में दी गई व्यक्तियों की सूची के समान, आप भी परमेश्वर की सिद्ध इच्छा अनुभव कर सकते हैं, हालाँकि आपके जीवन में भी असफलताओं के अवसर आए हैं। यीशु आपसे भी वही कहता है जो उसने पौलुस प्रेरित से कहा, "मेरा सामर्थ्य निर्बलता में सिद्ध होता है" (2 कुरिन्थियों 12:9)। उसका सामर्थ्य आपको असफलताओं पर जयवन्त करना है और उसकी योजना को पूरी करने योग्य बनाता है।

अपने उत्तरों को जांच लें

6 (अ) हमें–(1) जीवित बलिदान के रूप में स्वयं को समर्पित करना है तथा (2) इस संसार के सदृश नहीं बनना है।

(ब) हमें परमेश्वर को अवसर देना है कि वह हमारे मन परिवर्तन करने के द्वारा हमारा भीतरी रूपान्तरण करे।

(आपका उत्तर इसी तरह का होना चाहिए।)

1 (अ) एक व्यक्ति जिसका रूपान्तरण हो चुका है–2)

(ब) एक व्यक्ति जिसका रूपान्तरण हो चुका है–2)

(स) एक व्यक्ति जो नक़ल करने का प्रयत्न करता है–1)

(द) एक व्यक्ति जो नक़ल करने का प्रयत्न करता है–1)

(य) एक व्यक्ति जिसका रूपान्तरण हो चुका है–2)

7 (ब) हम अपने आपको परमेश्वर को सौंपते हैं–

2 (अ) वह भला करना चाहता था परन्तु उसने वह किया जो ग़लत था।

(ब) उसने कहा कि व्यवस्था उसके शरीर में कार्यकारी थी। इसने उसे पाप का दास बना दिया।

8 (ब) जैस्सी से पहले...

3 (ब) 4:13-15

9 (अ) ग़लत

(ब) ग़लत

(स) सही

4 (स) हमारी स्वाभाविक इच्छाएँ वह करने में हमारी अगुवाई नहीं करतीं जो परमेश्वर हमसे चाहता है कि करें।

10 (अ) पौलुस ने सीखा कि जब वह निर्बल था तब परमेश्वर की सामर्थ उस पर अत्यधिक थी।

(ब) पौलुस अपनी निर्बलताओं में आनन्द करने योग्य था क्योंकि ऐसी दशा में ही उसने परमेश्वर की सामर्थ का सबसे अधिक अनुभव किया।

(आपका उत्तर भी इसी तरह का होना चाहिए।)

5 (अ) गलतियों 2:19-20

11 (स) परमेश्वर ने हमारे लिए अपनी योजना बनाई...

(द) हमारी असफलताएँ और पाप ऐसा नहीं...

क्या मैं परमेश्वर की योजना से अलग हूँ?

...जीवन हमेशा सरल नहीं होता।

कभी तो परमेश्वर की इच्छा पर चलना आनन्ददायक होता है तो कभी ऐसा करना कठिन होता है। इब्राहीम ने अपने जीवनकाल में ऐसे कठिन अवसरों का सामना किया था।

परमेश्वर ने इब्राहीम से प्रतिज्ञा की थी कि वह एक महान् जाति का पिता होगा। परन्तु वर्ष बीतते गये और यह प्रतिज्ञा पूरी नहीं हुई। जो योजना इब्राहीम और सारा ने परमेश्वर की प्रतिज्ञा को पूरी करने के लिए बनाई थी वह मनोव्यथा में समाप्त हो गई थी। तब परमेश्वर पुनः इब्राहीम से बोला और उसे अपनी प्रतिज्ञा का स्मरण दिलाया। अन्त में, वह प्रतिज्ञा इसहाक के आश्चर्यजनक ढंग से पैदा होने के द्वारा पूरी हुई। परन्तु इब्राहीम की परीक्षा लिए जाने का अन्त नहीं हो गया।

कुछ वर्षों बाद, परमेश्वर ने इब्राहीम से कहा इसहाक–पुत्र जिससे वह प्रेम करता था–का बलिदान परमेश्वर के निमित्त मोरिय्याह पर्वत पर कर। इब्राहीम के सामने, अपने मनोभावों, परिस्थितियों अथवा व्यक्तिगत इच्छा के विपरीत परमेश्वर की आज्ञा मानने की चुनौती थी। इब्राहीम ने इस चुनौती का सामना किया। उसने परमेश्वर की इच्छा का पालन किया और एक महान आश्चर्यकर्म का अनुभव किया; परमेश्वर ने इसहाक के बलिदान के स्थान पर एक मेढ़ा का प्रबन्ध किया (उत्पत्ति 22:1-19)।

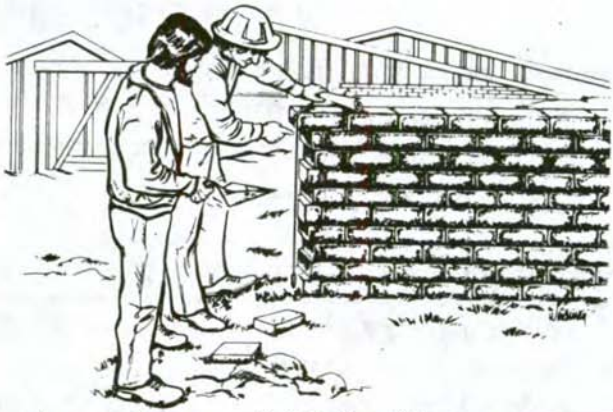

हो सकता है कि आप भी ऐसी ही चुनौती का सामना कर रहे होंगे। **परमेश्वर आपके जीवन में विशेष परिस्थितियों के द्वारा** आपके विश्वास की भी जाँच करता है।

इस पाठ में आप सीखेंगे कि हमारी परिस्थितियाँ कैसे हमें परमेश्वर की बनावट (योजना) से जोड़ती हैं। जब आप अध्ययन करते हैं, तो आप उन बातों की खोज करने पाएँगे, जिनमें, परमेश्वर आपके जीवन में अपनी योजना को पूरी करने हेतु परिस्थितियों का इस्तेमाल कर सकता है।

इस पाठ में आप सीखेंगे...

- परिस्थितियाँ प्रश्न उत्पन्न करती हैं।
- परिस्थितियाँ हमारे विश्वास की जाँच कर सकती हैं।
- परिस्थितियाँ हमें अनुशासित कर सकती हैं।
- परिस्थितियाँ हमें प्रोत्साहित कर सकती हैं।

यह पाठ आपकी सहायता करेगा...

- कारण बताएँ, परमेश्वर हमें कठिनाई और विरोध का सामना क्यों करने देता है।

- समझाएँ, जब हम अपने जीवन में परमेश्वर की योजना को पूरा होने देना चाहते हैं तभी कठिनाइयाँ आ खड़ी होती हैं।
- उन मूल्यों और लाभों का वर्णन करें जिन्हें हम कठिनाइयों के अनुभव के द्वारा प्राप्त कर सकते हैं।

परिस्थितियाँ प्रश्न उत्पन्न करती हैं

ऐसे समय आते हैं जब प्रतीत होता है कि परमेश्वर की इच्छा का परिस्थितियों के द्वारा अनुमोदन होता है। दूसरे समयों में, दिखाई देने वाली परिस्थितियाँ ऐसे काम कराती हैं, जिन्हें हम जानते हैं कि हमारे लिए करना बहुत कठिन है। क्या कठिनाइयाँ एक संकेत हैं कि हम परमेश्वर से अलग हो रहे हैं? क्या यह जानना संभव है कि परमेश्वर की इच्छा कितनी कठोर अथवा सरल प्रतीत होगी? जब यह असंभव दिखाई देती है तो क्या होता है, अर्थात् यदि सब बाहरी दशाएँ उसको करने में, जिसे हम सोचते हैं कि परमेश्वर हमसे चाहता है, विरोधात्मक हों तो क्या करें? आइए, उन परिस्थितियों पर ध्यान दें जिनसे हमारे लिए परमेश्वर की योजना अथवा इच्छा का सम्बन्ध है।

परिस्थितियाँ हमारे विश्वास की जाँच कर सकती हैं

विषयवस्तु 1. दो कारणों को पहिचानना कि परमेश्वर क्यों हमारे विश्वास की जाँच होने देता है।

हम ने सीखा है कि वस्तु की जाँच के द्वारा ही वह भरोसे लायक होती है। एक नाविक नाव को झील या बन्दरगाह में चलाने से पहिले उसकी अच्छी तरह से जाँच करता है अथवा समुद्र को पार करने के पहले ही जहाज़ की जाँच करना नाविक (कप्तान) का कर्त्तव्य होता है। एक पर्वतारोही पर्वत पर चढ़ने से पूर्व उस रस्सी

की जाँच करता है कि क्या वह इतनी मज़बूत है कि पर्वत की नुकीली चोटियों पर उसका वज़न सह सके।

कुछ अवसरों पर ऐसा प्रतीत होता है कि हमारे विश्वास की परख के लिए परमेश्वर कठिन परिस्थितियों का प्रयोग करता है। वह हमारे विश्वास की जाँच करता है क्योंकि यही तो उससे हमारे सम्बन्ध की धुरी है—हमारे विश्वास के द्वारा ही परमेश्वर कार्य करता है। विश्वास बिना न तो हम उसकी योजना में बने रह सकते हैं और न ही उसे सन्तुष्ट कर सकते हैं (इब्रानियों 11:6)।

जाँच हमारे विश्वास को प्रकट करती है

कुछ लोग सोचते हैं कि वे परमेश्वर पर भरोसा (विश्वास) रखते हैं परन्तु सच्चाई तो यह है कि उन्होंने कभी भी परमेश्वर पर भरोसा किया ही नहीं। परिस्थितियाँ और घटनाएँ परमेश्वर में उनके विश्वास का समर्थन करती हैं और ये परमेश्वर की इच्छा को पूरा करने हेतु सहज बनाती हैं। बहुत से मामलों में लोग वही कर रहे हैं जो वे करना चाहते हैं, और सोचते हैं जो वे करना चाहते हैं वही परमेश्र की इच्छा होनी चाहिए। यह विश्वास कितना यकीन करने लायक है?

परमेश्वर यह देखना चाहता है कि हम वास्तव में कितना अधिक उस पर भरोसा रखते हैं। हमें यह दिखाने के लिए, वह बाह्य अनुमोदन और सहायता की अनुमति का तिरिस्कार कर सकता है। ऐसा लग सकता है कि यह आज्ञाकारिता को कठिन बनाता है; यदि हम वास्तव में परमेश्वर की इच्छा में पाए जाते हैं तो यह हमें आश्चर्यचकित कर सकता है।

परन्तु यदि हम परमेश्वर को हमारी जाँच नहीं करने देना चाहते और दिखाते ऐसे हैं कि हम उस पर कितना भरोसा रखते हैं—तो हम अपने विश्वास की निर्बलता को तब तक नहीं समझ सकते जब तक शैतान का हमला हम पर न हो।

पतरस को मसीह के प्रति अपनी ईमानदारी (वफ़ादारी) का निश्चय था। उसका अपना विचार यह था कि वह अन्यों से ज्यादा

श्रद्धालु (भक्त) है। यीशु द्वारा जाँच किए जाने से पहले पतरस ने उससे कहा था, "चाहे सब तुझे छोड़ें तो छोड़ें पर मैं तुझे कदापि न छोड़ूंगा!" (मत्ती 26:33)।

आपके लिए कार्य

1 नीचे दिए गए सन्दर्भों में पतरस के जीवन में विश्वास की परख से सम्बन्धित बातों को पढ़ें। प्रत्येक प्रश्न का उत्तर अपनी नोट-बुक में लिखिए।

(अ) लूका 22:31, पतरस को यीशु कौन सी चेतावनी देता है?

(ब) मत्ती 26:34, पतरस से यीशु क्या करने को कहता है?

(स) मत्ती 26:35, पतरस ने क्या न करने के लिए कहा?

(द) मत्ती 26:69-75, पतरस ने क्या किया?

हम देखते हैं कि पतरस ने जिन कठिन परिस्थितियों का अनुभव किया वे उस समय में उसके निर्बल विश्वास (विश्वास में निर्बलता) को दर्शाती हैं। वह बाहरी मदद के बिना स्थिर बना नहीं रह सकता था।

परन्तु जाँच किए गए विश्वास का मूल्य है। प्रेरित याकूब ने इस मूल्य को समझ लिया था। वह उसका विवरण इस प्रकार से करता है:

> "हे मेरे भाइयो, जब तुम विभिन्न परीक्षाओं का सामना करते हो तो इसे बड़े आनन्द की बात समझो, यह जानते हुए कि तुम्हारे विश्वास के परखे जाने से धीरज उत्पन्न होता है" (याकूब 1:2-3)।

इन पदों में विशेष विचारों पर ध्यान दें—परीक्षाएँ, धीरज। ये विरोध और कठिनाई को दर्शाती हैं। फिर भी यह संकेत नहीं किया गया कि कठिनाई का मतलब यह है कि हम अपने लिए परमेश्वर की योजना से चूक गए हैं। सच तो यह है कि जब परीक्षाएँ आती हैं तो हमें स्वयं को भाग्यशाली समझना चाहिए।

आपके लिए कार्य

2 अपनी बाइबल में याकूब 1:2-4 पढ़िए। हमारे विश्वास की परख का अन्तिम परिणाम क्या है?

.....

परख (जाँच) हमारे विश्वास को मज़बूत बनाती है

नकारात्मक परिस्थितियों के द्वारा हमारे विश्वास की परख यह भी दिखा सकती है कि हम परमेश्वर पर कितना अधिक

विश्वास कर सकते हैं। यह हमारे विश्वास को दृढ़ करने में सहायक भी हो सकती है।

मोरिय्याह पर्वत पर इब्राहीम का अनुभव निश्चय ही विश्वास की महान विजय थी। बलिदान चढ़ाने के अन्तिम क्षण तक वह अपने पुत्र को ले आया था, तब परमेश्वर ने उसके पुत्र के स्थान पर मेढ़े को बलि करने का प्रबन्ध किया। उसने कठिन परिस्थिति में भी आज्ञा पालन की; उसके विश्वास की जाँच पूरी हुई और वह खरा निकला। अब उसने जान लिया कि परमेश्वर बलिदान का प्रबन्ध कर सकता है; उसने यह भी सीख लिया कि परमेश्वर उसके परिवार को बनाए रख सकता है।

1 शमूएल 17 में हम उस समय के बारे में पढ़ते हैं जब दाऊद ने गोलियत का सामना किया, जो इस्राएलियों का सबसे बड़ा शत्रु

था। दाऊद के समान लड़के के लिए यह असंभव था कि वह एक लम्बे-चौड़े योद्धा को परास्त कर सके! परन्तु जब दाऊद ने गोलियत की ललकार व चुनौती को सुना तो वह उससे लड़ने को तैयार था।

आपके लिए कार्य

3 । शमूएल 17:34-37 पढ़िए और सही उत्तर के अक्षर पर गोला बनाएँ। दाऊद गोलियत से लड़ने को तैयार था क्योंकि–

(अ) उसके कई भाइयों ने सोचा था कि वह जीत जाएगा।
(ब) गोलियत अधर्मी पलिश्ती था और दाऊद एक इस्राएली था।
(स) दाऊद ने सिंह और भालू से लड़ाई होने के समय से ही परमेश्वर पर भरोसा रखना सीख लिया था।

वे कौन सी परिस्थितियाँ हैं जिन्हें परमेश्वर आने देता है कि हमारे विश्वास की जाँच करे? हो सकता है कि खतरों और निराशाओं का सामना करना पड़े। हो सकता है कि हमारे चारों ओर ऐसे लोग हों जो हम पर भरोसा नहीं रखते। असुविधा या कष्ट हमारे लिए समस्या बन सकती है। हम जिन लक्ष्यों तक पहुंचने या उन्हें पूरा करने की अपेक्षा करते हैं, हो सकता है उन तक पहुंचने या पूरा होने में विलम्ब हो जाए। इन सबके द्वारा परमेश्वर हमारे विश्वास को परखता है कि हम उस पर कितना विश्वास करते हैं तथा वह हमें सिखाता है कि हम कहाँ चूक गए कहाँ कमज़ोर हैं कि हम और अधिक उस पर विश्वास करें।

आपके लिए कार्य

4 हमने दो कारणों का अध्ययन किया है कि परमेश्वर क्यों कठिन परिस्थितियों के द्वारा हमारे विश्वास की जाँच करता है। नीचे दिए गए वाक्यों में से उन वाक्यों के अक्षरों पर गोला बनाएँ जिनमें इन कारणों में से कोई एक बताया गया हो।

(अ) कभी-कभी हमें अपने विश्वास की वास्तविक शक्ति का प्रदर्शन करना होता है ताकि हम अपने विषय में छले न जाएं।

(ब) हमारे विश्वास की जाँच की गई जिससे कि यह प्रकट किया जाए कि हमें हमारे लिए परमेश्वर की जो योजना थी उससे हम चूक गए हैं।

(स) हमारे विश्वास की जाँच हो जाने के पश्चात् अब हम पहिले की अपेक्षा बड़ी-बड़ी चुनौतियों का सामना कर सकते हैं।

परिस्थितियाँ हमें अनुशासित कर सकती हैं

विषयवस्तु 2. कठिन से कठिन परिस्थितियाँ हमें कैसे अनुशासित कर सकती हैं उसके लिए उत्तम विश्लेषण का चुनना।

जब हम परमेश्वर की इच्छा पूरी करने के प्रयत्न में लगे रहते हैं तो कठिन परिस्थितियां जो हमारे जीवन में आती हैं—वे भी हमें

अनुशासित कर सकती हैं। इस अनुशासन का अभिप्राय है उस लक्ष्य की ओर लगाए रहना जो परमेश्वर ने हमारे लिए निर्धारित किया है। कुछ लोग सोचते हैं कि अनुशासन के लिए दण्ड आवश्यक नहीं। यह तो तब ज़रूरी हो जाता है जब सच्चे अनुशासन के पालन में असफल होते हैं। अनुशासन एक प्रशिक्षण (ट्रेनिंग) है। यह विशेष कार्यकलापों को चुनना है जिससे कि लक्ष्य को पूरा किया जा सके।

खेलों में, अनुशासन का अर्थ है नियमों को पूरी तरह मानना जिससे कि जीत हासिल हो। नियमों के बाहर की गतिविधियाँ न केवल अनुशासनहीनता हैं परन्तु यह व्यर्थ ही शक्ति की हानि है और इससे हारने की संभावना बढ़ जाती है। इसलिए यह दण्डनीय है।

अनुशासन में नियमबद्ध कार्यक्रम सम्मिलित हो सकता है। खेलों में इसका अर्थ है कि खिलाड़ी शक्तिवान (मज़बूत) बनने के लिए अपनी सीमा से बाहर वर्जिश न करे।

अनुशासित होना और अनुशासित करना इन दोनों के सम्बन्ध को देखना आसान होता है। मसीह के बाहर शिष्य उसकी इच्छा के प्रति अनुशासित थे। जब हम उनके जीवन वृतान्त को पढ़ते हैं तो पाते हैं कि न केवल मसीह ने उन्हें कठिनाइयों में से होकर गुज़रने दिया, पर उन्हें कठिनाइयों में पड़ने दिया। ये अनुभव उनके प्रशिक्षण का ही भाग था।

वे भारी तूफ़ान के बीच मसीह के साथ नाव में थे, परन्तु ऐसा प्रतीत हो रहा था कि मसीह इसके लिए कुछ नहीं कर रहा था। वह तो सो रहा था। (मरकुस 4:35-41)। उनमें से नौ शिष्य तो उस पर्वत पर छोड़ दिये गये थे जहाँ मसीह का रूपान्तरण हुआ था। वहाँ उनको एक दुष्ट-आत्मा ग्रसित लड़के से सामना करना पड़ा था (मरकुस 9:14-29)

आपके लिए कार्य

5 मरकुस 6:34-44 पढ़िये। तब अपनी नोट बुक में निम्नलिखित प्रश्नों का उत्तर लिखिए।

(अ) चेलों ने किस कठिनाई का सामना किया था ?

(ब) यीशु उनसे क्या करने को कहता है?

(स) उनके पास कौन से साधन उपलब्ध थे?

(द) यीशु ने क्या किया ?

(य) परिणाम क्या हुआ ?

प्रत्येक नाकारात्मक, कठिन परिस्थितियों में से यीशु ने शिष्यों को उनकी सामर्थ्य के अनुसार ही लिया था। वह उनको सिखाता रहा था कि वे पूर्णरूपेण यीशु पर निर्भर रहना सीखें। वह उनका ध्यान अपनी ओर खींच रहा था और उनके सीमित दायरों से उनका ध्यान हटा रहा था।

हमें परमेश्वर की इच्छा के सम्बन्ध के प्रति, कठिनाइयों को हमारे मन में शंका का कारण नहीं बनने देना चाहिए। इसके बदले, हमें यह मालूम होना चाहिए कि हो सकता है कि परमेश्वर उन समस्याओं को अपने प्रति सही विचार—एक मन वाला बनाने हेतु इस्तेमाल कर रहा हो। इसीलिए परिस्थितियों पर विजय पाने की एक कुञ्जी यह है कि हम अपना ध्यान परमेश्वर की तरफ केन्द्रित करें

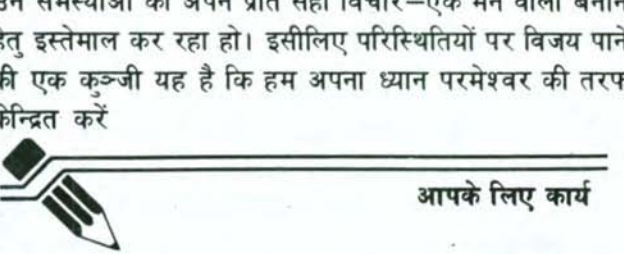

आपके लिए कार्य

6 कठिन परिस्थितियाँ हमें इस प्रकार अनुशासित करती हैं—

(अ) यह जानने में हमारी सहायता करती हैं कि हम परमेश्वर की इच्छा पर नहीं चल रहे हैं।

(ब) ये आवश्यक बनाती हैं कि हम पूरी तरह से परमेश्वर पर निर्भर हों।

(स) हमें दिखाती हैं कि हमारे अन्दर योग्यता है कि हम स्वयं समस्याओं का सामना करें।

(द) हम पर दण्ड लाती हैं जिससे कि हम जान सकें कि हम असफल हो गए हैं।

परिस्थितियाँ हमें प्रोत्साहित कर सकती हैं

विषयवस्तु 3. उन कथनों को जिनमें कारण दिए जाते हैं तथा कठिन परिस्थितियों के मूल्यों के बीच के अन्तर को समझाना।

यह सच है कि कठिन परिस्थितियाँ हमारे विश्वास की परख करतीं और हमें अनुशासित करती हैं। परन्तु ये समस्याएँ हमारे लिए प्रोत्साहन का कारण भी बन सकती हैं। निर्भर करता है कि उनके प्रति हमारी क्या प्रतिक्रिया होती है और हम परमेश्वर की इच्छा होने के बावत कितना जानते हैं। आइए, इस प्रोत्साहन के तीन पहलुओं पर विचार करें।

प्रमाण देना कि हम परमेश्वर के हैं

पहिला, कठिनाइयां प्रमाण दे सकती हैं कि हम परमेश्वर के हैं। पवित्रशास्त्र में उन दुष्ट-शक्तियों का स्पष्ट वर्णन किया गया है जो संसार में हैं। शैतान, मसीह के अनुयायियों का शत्रु है। वह ऐसे अवसरों की खोज में रहता है कि परमेश्वर के राज्य का विकास न होने पाए। शैतान यह सब जानबूझकर, ईर्ष्या के कारण और स्वैच्छा से करता है। यद्यपि उसकी सामर्थ समिति है, फिर भी

वह सामर्थशाली है। वह सामर्थशाली होने से कहीं अधिक कपटपूर्ण और छली है। वह झूठ का पिता है।

शैतान मसीहियों का विरोधी है और संसार के विधान (तन्त्र) का भी। यह विधान (तन्त्र) धार्मिकता पर आधारित नहीं है। यह तो छल, अत्याचार और अन्याय पर बना है। यह तो झूठ को सच बताने वाला है जहाँ मनुष्य बुरे को भला और भले को बुरा कहने से नहीं लजाते। यह ऐसा तन्त्र है जहाँ वायदे पूरे नहीं किए जाते, जिसके ज्ञान में सत्यता नहीं। यह ऐसा तन्त्र है जो परमेश्वर का विरोध करता है और परमेश्वर की सन्तान का भी विरोध करता है। यह ऐसा शासन-तन्त्र है जिसने परमेश्वर के पुत्र का इसलिए इन्कार किया क्योंकि वह धर्मी व निर्दोष था और तब उसे क्रूस पर चढ़ा दिया। उसकी धार्मिकता के कारण इस तन्त्र में घृणा जगी।

आपके लिए कार्य

7 यूहन्ना 15:18-20 पढ़िए और नीचे दिये गये वाक्य को पूरा कीजिए।

मसीह ने अपने शिष्यों को बताया था कि इस संसार ने उससे घृणा की है। उसने उनको चिताया कि संसार उनसे भी घृणा करेगा क्योंकि—

.....

जब परमेश्वर की सन्तान परमेश्वर की इच्छा पूरी करना आरंभ करता है तब वह क्या करे? वह दूषित (विकृत) करने वाले वातावरण में रहता है और सीधे मार्ग पर चलना चाहता है। अन्धकारपूर्ण संसार में वह प्रकाश का अनुसरण करना चाहता है।

क्या पवित्रशास्त्र परमेश्वर की इच्छा को इस तन्त्र या शान्तिपूर्ण सह-अस्तित्व के रूप में दर्शाता है? दोनों ही युद्ध, तनाव, विरोध तथा मुकाबले के द्योतक हैं। मसीह ने कहा, "संसार में तुम्हें क्लेश होता है, परन्तु साहस रखो...मैंने संसार को जीत लिया है!" (यूहन्ना 16:33)

भले ही कठिनाई हमें आश्चर्यचकित क्यों न करे और हमें मज़बूर करे कि हम यह सोच लें कि परमेश्वर की इच्छा से चूक गए हैं तो भी यह इस बात का संकेत है कि मसीह की प्रतिज्ञा हमारे साथ है...और हम उसकी इच्छा में पाये जाते हैं। यह तब और भी सत्य हो जाता है जब कठिनाई या परेशानी हम पर आती है क्योंकि हमारा अन्तर्द्वन्द्व दुष्ट-तन्त्र और अपनी धार्मिकता के बीच होता है। धर्मी जीवन और दुष्ट (बुराई) के शासन के बीच विरोधाभास आने से ही विकट परिस्थिति का सामना करना पड़ता है।

लूका 6:20-26 में उस प्रोत्साहन पर ध्यान दीजिए जो चेलों को दिया गया था विशेषकर पद 20-23 में। उन्हें तो सीधे कठिनाइयों से उत्साह प्राप्त करना था! इसी समय, उस चेतावनी पर भी ध्यान दीजिए जो पद 24-26 में दी गई। ये चेतावनियाँ सीधे संसार के शासन-तन्त्र से अनुमति पाने से सम्बन्धित हैं।

आपके लिए कार्य

8 लूका 6:20-26 पढ़िए। प्रत्येक अनुभव का मिलान उस परिणाम से करें जहाँ यीशु ने कहा कि यह क्या लाएगा?

... (अ) ग़रीबी 1) एक सुखद परिणाम
... (ब) धन 2) एक दुःखद परिणाम
... (स) सब मनुष्यों की सहमति
... (द) शोक
... (य) मनुष्यों का घृणित (मनुष्यों द्वारा तिरिस्कृत)

कठिनाइयाँ हमें प्रोत्साहित कर सकती हैं। ये वास्तव में इस बात का संकेत बनती हैं कि हम परमेश्वर की इच्छा के अंतर्गत पाए जाते हैं। यह उस बात के चिन्ह नहीं हैं कि हम उससे वंचित हो गए हैं।

विजय के अवसर

दूसरी बात, कठिनाइयाँ हमें विजय पाने के अवसर प्रदान कर सकती हैं। ये कठिनाइयाँ तो विश्व तन्त्र की देन हैं और चूँकि हम संसार में रहते हैं इसलिए हमारे ऊपर क्लेश भी आते हैं। परन्तु मसीह ने इस विश्व-तन्त्र पर विजय पा ली है।

कठिनाइयाँ और विरोध परमेश्वर की इच्छा पूरी करने को असंभव नहीं बनाते। समस्याओं पर विजय प्राप्त की जा सकती है। ये तो विजय पाने को संभव बनाते है, क्योंकि जहाँ विजय हासिल होना है वहाँ विरोध भी अवश्य होना चाहिए। हम मसीह के द्वारा इन पर जय पाने वाले और विजेता हैं।

एक मनुष्य का चरित्र उसके शत्रुओं और उसके मित्रों का मूल्यांकन करने से भलीभाँति पंहचाना जा सकता है। बाइबल कहती है संसार से मित्रता करनी ठीक वैसा ही है जैसा कि परमेश्वर से शत्रुता करना (याकूब 4:4)। इसका अर्थ यह है कि यदि हम परमेश्वर के मित्र हैं तो हम संसार के शत्रु बनेंगे।

क्या एक विजेता हारे हुए से अपनी जीत का प्रमाण माँगता है? न ही हम यह चाहते हैं कि संसार के विधान (विश्व-तन्त्र) के

अनुमोदन या सहायता के द्वारा अपने परमेश्वर पर ध्यान देने के अनुशासन को खो दें। दूसरे शब्दों में, इन पर विजय पाने का अनुभव हमें परमेश्वर के पीछे चलने के लिए नया बल प्रदान करता है।

आपके लिए कार्य

9 प्रकाशित वाक्य 3:21 पढ़िए। मसीह किनके लिए प्रतिज्ञा करता है कि उसके सिंहासन पर बैठने का अधिकार उन्हें मिलेगा।

.....

विरोध से आत्म विश्वास

तीसरी बात, कठिनाइयाँ हमें आत्मविश्वास प्रदान कर सकती हैं क्योंकि हम परमेश्वर को प्रसन्न करने में लगे हुए हैं। हमने शैतान और विश्व-तन्त्र दोनों की समस्याओं को बताया था और यह भी कि किस प्रकार से ये समस्याएँ प्रोत्साहन का स्रोत बन सकती हैं। इसे पवित्रशास्त्र में "मानवीय स्वभाव", "पापी स्वभाव", अथवा "देह (शरीर)" कहा गया है। यह स्वयं में भौतिक शरीर नहीं है। यह तो हमारे अपने व्यक्तित्व का वह भाग है जो संसार और उसकी अभिलाषाओं से समझौता कर लेता है।

इतना ही पर्याप्त होना चाहिए कि हमारा शत्रु शैतान है। इसके अतिरिक्त हम पतित संसार और उस तन्त्र में रहते हैं जो

संसार देता है। परन्तु सबसे बड़ी कठिनाई तो यह है कि हमने परमेश्वर के शत्रु—हमारा मानवीय स्वभाव—से समझौता किया और उससे जुड़ गए हैं। हम अपने प्रयत्न से इस सम्बन्ध को नहीं तोड़ सकते, हमें तो इसको जीतना होगा, हाँ इस पर विजय प्राप्त करना है। परन्तु जीतने के लिए युद्ध (संघर्ष) भी होगा।

गलतियों 5 में शरीर के कामों अर्थात् मानवीय स्वभाव की सूची दी गई है। यह पूरी सूची नहीं है, परन्तु इनके नाम ही पर्याप्त हैं जिससे कि हम उन दूसरे कामों को पहिचान सकते हैं जिनके नाम इस सूची में नहीं दिए गए।

हम मानवीय स्वभाव या शरीर के विरोध के द्वारा कैसे प्रोत्साहित हो सकते हैं? यह तो हम जानते ही हैं कि शरीर और परमेश्वर के आत्मा में बिना रुके गहिरा संघर्ष (युद्ध) चलता रहता है—यह हमारे अन्दर आत्मविश्वास उत्पन्न करता है कि जब हम शरीर के अनुसार चलने से इनकार करते हैं तब हम परमेश्वर को प्रसन्न करने लगते हैं। यदि हम मात्र शरीर की लालसाओं के अनुसार जीवन व्यतीत करते हैं तो फिर कोई युद्ध की या संघर्ष की स्थिति ही नहीं आएगी। शरीर स्वयं शरीर से युद्ध (संघर्ष) नहीं करता, युद्ध तो शरीर और आत्मा (परमेश्वर के आत्मा) के बीच चलता है।

आपके लिए कार्य

10 हमने उन कुछ मूल्यों अथवा लाभ (फायदों) के विषय में अध्ययन किया है जो कठिन परिस्थितियों का सामना करने से हमें मिल सकतें हैं। हमने उन कारणों का भी अध्ययन किया है कि ये कठिनाइयाँ क्यों हमारे सामने आती हैं। प्रथम

दो वाक्यों का उन कथनों से मिलान करें जिनमें इन वाक्यों का विवरण पाया जाता है। रिक्त स्थान में सही वाक्य वाला अंक लिखिए।

1) कठिनाई का मूल्य
2) कठिनाई के लिए कारण

... (अ) कठिनाइयाँ, मसीह के प्रति हमारी अपनी सीमाबद्धता को देखने में सहायता कर सकती हैं।

... (ब) मसीह तो शैतान, संसार और उसके तन्त्र (शासन-प्रणाली) का शत्रु है।

... (स) (पवित्र) आत्मा निरन्तर शरीर से युद्ध (संघर्ष) करता रहता है।

... (द) हमारे लिए संसार की घृणा हमें आश्वस्त करती है कि हम परमेश्वर के हैं।

... (य) हमारे मानवीय स्वभाव का विरोध हमें आत्मविश्वास प्रदान करता है कि हम मानवीय स्वभाव (शरीर) के अनुसार चलने से इनकार करते हैं और परमेश्वर को प्रसन्न करना चहते हैं।

ऐसे कई साधन हैं जिनमें परमेश्वर कठिन परिस्थितियों को, उसकी योजना का अनुसरण करने हेतु प्रयोग में ला सकता है। ये कठिन परिस्थितियाँ आपके विश्वास को बढ़ाने में सहायक हो सकती हैं। ये आपकी सहायता कर सकती हैं कि परमेश्वर पर निर्भर रहना सीखें। ये विजय के लिए अवसर प्रदान कर सकती हैं। विचार कीजिए मसीह ने क्या प्रतिज्ञा की—क्रूस, युद्ध, जाति, संसार के द्वारा तिरस्कार (घृणा), परीक्षाएँ तथा सताव। परन्तु इन प्रतिज्ञाओं पर भी ध्यान दें जो उसने की हैं—विजय, एक ताज, एक सिंहासन, श्वेत वस्त्र (चोगा) तथा पिता के द्वारा ग्रहण किया जाना। "जब तुम विभिन्न परीक्षाओं का सामना करते हो तो इसे बड़े आनन्द की बात समझो" (याकूब 1:2)।

अब तक आपने पहले चार पाठों का अध्ययन पूरा कर लिया है और अब आप अपने विद्यार्थी रिपोर्ट पुस्तिका के पहिले भाग के प्रश्नों के उत्तर देने के लिए तैयार हैं। पाठ 1 से 4 तक को दोहरा लीजिए तब उत्तर लिखनें हेतु पुस्तिका में दिए गए निर्देशों का पालन कीजिए। तब अपनी उत्तर-पुस्तिका दिए गए पते पर भेजिए।

अपने उत्तरों को जांच लें

6 (ब) परमेश्वर पर पूर्ण रूपेण निर्भर रहने के लिए यह हमारे लिए आवश्यक बनाती है।

1 (अ) उसने उन्हें बताया था कि शैतान उसकी परीक्षा करेगा।

(ब) उसने कहा था कि पतरस तीन बार यह कहेगा कि मैं उसे नहीं जानता।

(स) उसने कहा कि वह यह कभी नहीं कहेगा कि वह यीशु को नहीं जानता।

(द) उसने तीन बार कहा कि वह यीशु को नहीं जानता। (आपके उत्तर भी इसी तरह के होना चाहिए।)

7 वे परमेश्वर (उसके) हैं और संसार के नहीं हैं। (अथवा इसी तरह का उत्तर)

2 हम पूर्ण और सिद्ध बन गए हैं (अथवा इसी तरह का उत्तर)

8 (अ) एक सुखद परिणाम 1)

(ब) एक दुःखद परिणाम 2)

(स) एक दुःखद परिणाम 2)

(द) एक सुखद परिणाम 1)
(य) एक सुखद परिणाम 1)

3 (स) दाऊद ने परमेश्वर पर भरोसा रखना सीख लिया था...

9 उनको जो विजय हासिल करते हैं।

4 (अ) कभी-कभी हमें स्वयं को दिखाने की ज़रूरत पड़ती है...
(द) हमारे विश्वास की जाँच होने के पश्चात...

10 (अ) कठिनाई का मूल्य ... 1)
(ब) कठिनाई के लिए (का) कारण ... 2)
(स) कठिनाई के लिए कारण ... 2)
(द) कठिनाई का मूल्य ... 1)
(य) कठिनाई का मूल्य ... 1)

5 (अ) वहाँ एक बड़ी भीड़ थी जो भूखी थी।
(ब) "इन्हें कुछ खाने को दो" (पद 37)।
(स) पाँच रोटी और दो मछली।
(द) उसने भोजन पर आशीष माँगी और चेलों को दी कि लोगों में बाँट दें।
(य) प्रत्येक के लिए खाने को बहुत था।
(आपके उत्तर इसी तरह के होना चाहिए।)

क्या मसीही होना ही पर्याप्त है?

...शायद मुझे अपने कार्यों पर ध्यान देना चाहिए।

टॉम वाटसन का व्यापार सफल था और बढ़ भी रहा था। वह स्वयं कठोर परिश्रम करने से हिचकिचाता नहीं था और अपने कर्मचारियों से भी ऐसी ही अपेक्षा करता था। वह आलस देख नहीं सकता था और जो कर्मचारी अच्छा काम नहीं करता उसे वह डाँटने से हिचकता नहीं था। टॉम एक मसीही था।

वह अपनी कलीसिया (चर्च) का एक सक्रिय सदस्य था, और यहाँ भी वह अपने उत्तरदायित्वों को पूरे उत्साह से पूरा किया करता जैसा वह अपने व्यवसाय में करता था। परन्तु कई बार उसे महसूस हुआ कि उसके कार्य करने के ढंग से अन्य मसीहियों को बुरा लगता है। अक्सर, ऐसा प्रतीत होता कि जो सन्देश (उपदेश) दिए जाते उनमें टॉम के कार्यों के प्रति विरोध होता, जबकि ये ऐसे दिखाई देते कि उसके कार्यों से प्रस्तुत परिणामों की प्रशंसा की गई हो। टॉम को यह बात मानने के लिए दबाया गया कि चाहे वह अपने कार्यों या अपने परिश्रम का पक्ष ही क्यों न ले और उन्हें ठीक ठहराए परन्तु उसने महसूस किया कि अन्दर से वह उनको प्रसन्न नहीं कर पाया है। एक बात का उसे निश्चय था: उसके मन में एक अर्न्तद्वन्द्व चल रहा था जो स्पष्ट अनुमोदित नहीं हुआ था।

हो सकता है कि आपने अपने आप से प्रश्न किया हो कि मेरा सही व्यक्तित्व क्या है? क्या जैसा बाइबल कहती है मैं वैसा ही हूँ

अथवा जैसा मैं सोचता हूँ वैसा हूँ? जब हम पवित्रशास्त्र का अध्ययन करते हैं तब भी हमारे लिए यह समझ पाना कठिन हो सकता है कि हम क्या हैं। क्या हम सैनिक अथवा मेल कराने वाले हैं? क्या साहसी अथवा दीन हैं? धीरज वाले अथवा आक्रामक हैं? इस पाठ में हम तुलनात्मक अध्ययन करेंगे—बाइबल क्या कहती है कि हम कैसे हैं और हमारे अपने अनुभव एवं कार्यों में हम क्या हैं। हम यह खोज करेंगे कि परमेश्वर की दृष्टि में क्या महत्त्वपूर्ण हैं। तब हम सीखेंगे कि परमेश्वर की अपेक्षा के अनुरूप हम कैसे बन सकते हैं। यही हमारा सही लक्ष्य है।

इस पाठ में आप सीखेंगे...

- परमेश्वर हमें कैसे देखता है अर्थात् हमारे प्रति परमेश्वर का देखना कैसा है।
- परमेश्वर की दृष्टि में क्या महत्त्वपूर्ण है।
- परमेश्वर की अपेक्षाओं (माँगों) को पूरा करना।

यह पाठ आपकी सहायता करेगा...

- परमेश्वर हमें किस रूप में देखता है उसका विवरण।
- मसीह के कार्य के महत्त्व और उसके प्रति हमारी प्रतिक्रिया को समझाना।
- परमेश्वर जो हमसे अपेक्षाएँ करता है उन्हें हम क्यों पूरा कर सकते हैं—इसके कारणों को बताना।

परमेश्वर हमें किस रूप में देखता है

विषयवस्तु 1. परमेश्वर हमें किस रूप में देखता है इसके लिए एक वर्णन को चुनना।

जब हम इस बात की खोज करते हैं कि परमेश्वर हमें किस रूप में या किस दृष्टि से देखता है, तो आइए हम देखें कि बाइबल हमारे विषय में क्या कहती है।

बाइबल क्या कहती है

हम कुछ मसीहियों को इस विषय पर बात करते हुए सुन सकते हैं कि वे "मसीह में" क्या हैं। यह प्रायः कथा या स्वप्न-चित्र की भाषा प्रतीत होती है। परन्तु सच्चाई तो यह है कि बाइबल हमारी सही दशा का वर्णन करती है।

इफिसियों की पत्री के पहले अध्याय में कहा गया है कि स्वर्गिक संसार में हमारे लिए आशीष ही आशीष हैं। (पद 3)। हम पवित्र और निर्दोष हों (पद 4)। हम परमेश्वर के लोग (प्रजा) होने के लिए चुने गए हैं, क्योंकि यह उसका अभिप्राय और निर्णय है (पद 11)। 2 अध्याय हमें बताता है कि हम मसीह के साथ जिलाए गए तथा मसीह यीशु में उसके साथ उठाया और स्वर्गीय स्थानों में उसके साथ बैठाया (पद 5, 6)। हम जैसे भी हैं परमेश्वर के बनाए हुए हैं (पद 10), और हम पवित्र लोगों के साथ स्वदेशी (नागरिक) तथा परमेश्वर के घराने के हो गए हैं (पद 19)

ये ही विचार हम 1 पतरस 2:9 में पाते हैं। वहाँ हम पढ़ते हैं कि हम चुना हुआ वंश, राजपदधारी, याजकों का समाज और पवित्र लोग और परमेश्वर की निज प्रजा हैं। इनके अतिरिक्त वहाँ और भी बातों का वर्णन किया गया है। क्या ही श्रेष्ठ नाम और पद देने के सुझाव दिए गए हैं?

आपके लिए कार्य

1 नीचे दिए गए सन्दर्भों (पदों) को पढ़िए। ऐसे सन्दर्भ वाले अक्षर पर गोला बनाएँ जिनमें यह विवरण दिया गया है कि हम "मसीह में" हैं।

(अ) इफिसियों 2:22
(ब) इफिसियों 4:1
(स) इफिसियों 4:17

हम क्या अनुभव करते हैं

फिर भी, हमारे वास्तविक अनुभव में हम संघर्ष करते हुए पाए जाते हैं। हम थकते हैं, भूखे होते हैं और हमें प्यास लगती है। हम महत्वाकांक्षी हैं, हमारे स्वप्न हैं। हम अपने अन्दर द्वन्द्व या प्रेरणा महसूस करते हैं और बाहर हमारे लिए आकर्षण हैं। पाप करने की

परीक्षा में गिरना हम से दूर नहीं किया गया है। जब हम सोचते हैं कि हम एक क्षेत्र में विजयी हुए तभी हम पाते हैं दूसरी ओर हमारे लिए युद्ध (संघर्ष) तैयार है।

हम में से कुछ परमेश्वर के सन्तान होने के नाते यह पाते हैं कि दूसरे विश्वासियों के साथ हमारा सम्बन्ध व व्यवहार सही नहीं है। हम भय, शत्रुता, निराशा का सामना करते हैं। परमेश्वर हमें ऐसे नाम देता है जिनके अर्थों से ऐसा लगता है कि हम आकाश पर ऊँचे पहुँच रहे हैं। हम सब अपनी सीमित सीमाओं से भलीभाँति परिचित हैं और ये सीमित दायरे आकाश से नहीं पर पृथ्वी से ही जोड़े जाते या एकात्मकता रखते हैं।

इसके अतिरिक्त हमारे कार्य करने के ढंग अधिकतर हमारे पृथ्वी (सांसारिक) स्वभाव को ही प्रकट करते हैं—स्वर्गिक गुणों (स्वभाव) को नहीं। हमारे लिए यह सरल होता कि हम उसी तरह प्रार्थना करते रहते जैसे पहले अपनी समस्याओं के निदान के लिए किया करते थे। परन्तु इसके विपरीत, अक्सर हमारा अनुभव यह रहा है कि हमारी प्रार्थनाओं ने समस्याओं का निदान नहीं किया। हम अभी भी परीक्षाओं और निराशाओं का सामना किया करते हैं।

इन सब कठिनाइयों को हम अपने जीवन के लिए परमेश्वर की इच्छा (योजना) जानने हेतु कैसे जोड़ सकते हैं? क्या यह अपेक्षाकृत सरल है कि हम "जीवन" के निर्णय ले सकते हैं जैसे—शिक्षक, पास्टर या डाक्टर बनने इत्यादि के निर्णय। परन्तु परमेश्वर की इच्छा हमारे लिए मात्र जीवन के निर्णय लेने से कहीं अधिक और कुछ सम्मिलित करती है। इसमें हमारे समस्त कार्य भी सम्मिलित हैं। वास्तविक कठिनाई यह है कि हम जो जानते हैं कि हमें करना चाहिए वह हमें किस प्रकार करना चाहिए।

हम उन बातों पर अधिक महत्त्व देते हैं जो वास्तव में महत्त्वपूर्ण नहीं हैं और जो बातें महत्त्वपूर्ण हैं उन्हें हम

अमहत्त्वपूर्ण मान बैठते हैं। हमारे सम्बन्ध जटिल बन जाते हैं। हमारे उद्देश्य (लक्ष्य) स्पष्ट दर्शाते हैं कि हम दो विचारों में उलझे हुए हैं। जब हम जीवन को कष्टदायक बनाने वाले निर्णय ले लेते हैं तो इसका कारण यह है कि हमारे प्रतिदिन के निर्णय सही नहीं है।

तब, यह इस बात का प्रमाण है कि मसीह में अपनी दशा को जानते हुए भी यदि हम अपने आचार-व्यवहार, कार्यों के ढंग, लक्ष्यों अथवा इच्छाओं के प्रति सजग नहीं रहते तो हमारी दशा दयनीय है।

आपके लिए कार्य

2 शायद आपने यह महसूस किया है कि आपके जीवन के कुछ क्षेत्रों में आपने मसीह की इच्छानुसार अथवा जिस प्रकार मसीह में चलना चाहिए, उस प्रकार चलने हेतु वास्तविक कठिनाई का सामना किया है। नीचे दिए खाके में ऐसी कुछ कठिनाइयों का विवरण है। आप इन कठिनाइयों को तीन श्रेणी में रखना चाहेंगे। दाएँ हाथ पर दिए गए खानों में × का चिन्ह लगाकर आप अपने हिसाब से कठिनाई का वर्गीकरण कर सकते हैं। जब आप अध्ययनरत रहते हैं तो परमेश्वर से अपेक्षा करें कि जो समस्यायें आपने दर्शाई हैं उनको हल करने में आपकी सहायता करे।

	नहीं के बराबर	कुछ	बहुत अधिक
सार्थक लक्ष्यों की ओर बढ़ना			
स्वार्थपूर्ण प्रयोजनों (कारणों) पर जीत पाना			
सही निर्णय लेना			
परीक्षा से जूझना			
दूसरों से नाता जोड़ना			
महत्त्वपूर्ण विषयों पर ध्यान केंद्रित करना			

परमेश्वर क्या देखता है

जब बच्चे बड़े हो जाते हैं तो अक्सर यह देखा गया है कि माता-पिता बच्चों के बचपन के अच्छे समयों को ही स्मरण रखते हैं। उनको बड़ा करने में जिन कठिनाइयों का सामना किया गया—रात-रात भर जागना, बच्चों की बीमारियाँ, उनका उलटी करना, प्रसाधनों-कपड़ों के प्रति सिखाना—ये सब "अरुचिकर" समयों के वे भूल जाते हैं। केवल स्नेह और निकटता के क्षण ही याद के हैं। जिस बच्चे को सिखाना अत्याधिक कठिन होता है उसे अक्सर एक दूत के समान स्मरण किया जाता है। क्या ऐसे ही परमेश्वर हमें देखता है—पक्षपातपूर्ण आँखों से? बिल्कुल भी नहीं!

परमेश्वर की धार्मिकता का अटल, निरपेक्ष (परम) स्तर है। वह हमें "सन्त", "अपने सन्तान", "याजक" कहकर पुकारता है। जब वह हम पर दृष्टि करता है तो वह क्या देखता है?

जब परमेश्वर हम पर दृष्टि करता है तो वह हमें ठीक वैसा ही देखता है जैसे कि हम वास्तव में हैं। वह हमारी स्वाभाविक अभिलाषा (प्रवृत्ति) को देखता है। जो कि पाप नहीं है परन्तु वह हमारे पुराने अथवा पापी स्वभाव को भी देखता है, जिस पर विजय पाने में हमारा पूरा जीवन लग जाता है। वह उन विभिन्न स्वार्थपूर्ण मनोभावनाओं को देखता है जो हमारे अन्दर से प्रकट होती रहती है। वह उन अच्छी शुरुआतों (आरंभ) को देखता है जिनका अन्त अक्सर परिणामों की आशा लगाने से पूर्ण ही हो जाता है।

परमेश्वर ने नूह पर विश्वास की आँखों से दृष्टि की कि नूह जल प्रलय में जीवित रहे (उत्पत्ति 7:6-10) फिर भी, परमेश्वर ने उसे मदिरा के नशे में चूर देखा (उत्पत्ति 9:20-21)। उसने मूसा को उसके विश्वास में देखा (निर्गमन 14:13-14) और उसे उसके क्रोधित एवं अधैर्यता के रूप में भी देखा जब क्रोधित होकर मूसा ने चट्टान पर लाठी मारी थी (गिनती 20:11-12)। उसने दाऊद को स्तुति और आराधना के भजन व गीत लिखते हुए देखा (2 शमूएल 22, भजन संहिता 18), तो भी परमेश्वर ने उसे बेतशेबा के साथ भी देखा (2 शमूएल 11)। उसने पतरस को उसकी परस्पर विरोधी दशा में देखा (मत्ती 16:17, लूका 22:54-62) तथा पौलुस को मरकुस के प्रति अधैर्यता की दशा में देखा (प्रेरितों के काम 15:37-40) और उन बारह शिष्यों में से कौन कौन शिष्य मसीह के दुःख सहने के समय विश्वास योग्य बना रहा? एक भी नहीं! वह एकदम अकेला था (मत्ती 26:56)।

अपूर्ण, असफल होने वाले सन्त! परन्तु फिर भी सन्त!

परमेश्वर हमें ठीक वैसे ही देखता है जैसा कि उसने उन लोगों पर दृष्टि की थी जिनके विषय में हम बाइबल में पढ़ते हैं। और

यदि हमारे जीवन का वृतान्त विस्तार से लिखा जाता तो हमें ठीक वही नमूना देखने को मिलता जैसा कि बाइबल में हम देखते हैं। यह परमेश्वर की आँखों के सामने बेपरदा है।

आपके लिए कार्य

3 नीचे दिए गए जिस परिच्छेद में—परमेश्वर हमें कैसे देखता है—सबसे अच्छी तरह से बताया गया है उसके अक्षर पर गोला बनाएँ।

(अ) हम मसीह के साथ जिलाए गए और परमेश्वर के सन्तान हैं। उसके घराने में हमारी स्थिति याजक और सह नागरिक (सदस्य) की है।

(ब) हम एक पवित्र जाति हैं और परमेश्वर के होने के लिए उसके द्वारा चुने गए हैं। फिर भी हमने असफलताओं और विरोधों का सामना किया है।

(स) हम मनुष्य होने के नाते असफल होते हैं। हमने निराशाओं का सामना किया है और अक्सर दूसरों के साथ हमारे सम्बन्ध ठीक नहीं हैं।

परमेश्वर की दृष्टि में क्या महत्त्वपूर्ण है?

विषयवस्तु 2. परमेश्वर किस बात को सबसे महत्त्वपूर्ण समझता है इस विवरण को पहिचानना।

हमने इस बात पर ध्यान दिया है कि हम क्या हैं और हमारे प्रतिदिन के अनुभवों के तथ्य क्या हैं तथा बाइबल इस विषय में क्या कहती है। परन्तु परमेश्वर के लिए क्या महत्त्वपूर्ण है? क्या

वह हमारे सन्त होने के पद को और मूल्यवान बनाता अथवा हमारे व्यवहार को बारीकी से जाँचता है?

इस प्रश्न का उत्तर बड़ी स्पष्टता से दिया जा सकता है; इसके उत्तर में दो पहलू हैं जिन पर हमें ध्यान देना चाहिए।

मसीह का कार्य

परमेश्वर ने यीशु मसीह के कार्य को प्राथमिकता अथवा उच्चतर मूल्य पर रखा है...उसकी धार्मिकता, उसकी पूर्णता, उसकी आज्ञाकारिता उसके कार्य के पूरक हैं। पवित्रशास्त्र और कारण इसकी स्पष्टता को दर्शाते हैं।

उद्धार का सन्देश है कि जबकि हम पापी ही थे मसीह ने हमारे लिए अपने प्राण दिए–एक धर्मी, अधर्मियों के लिए मरा ताकि वह हमारा मेल पिता से कराए अर्थात् पिता की समीपि में ले आए। यह वह कारण है जबकि हमारा परमेश्वर के निकट आना प्रभाव है। उसकी धार्मिकता हमारी धार्मिकता का कारण बनी!

अतः जब परमेश्वर हमें सन्त कहकर बुलाता है (और हम न तो सन्त जैसा महसूस करते और न ही सन्त जैसा व्यवहार करते हैं), तो वह एक झूठी तस्वीर नहीं देख रहा होता। वह तो एक कार्यप्रणाली के अन्तिम परिणाम को देख रहा थ।–जिसका कारण स्वतः ही स्पष्ट और पूरा है और जिसका प्रभाव पहिले से ही पूर्ण रूप में बताया जा चुका है।

उसके ज्ञान के प्रकटीकरण में वह किसी भी प्रकार से समय की सीमा में बंधा नहीं है। वह तो आदि से अन्त (अथवा कार्यपरिणाम) को देखता है। वह अन्त को आरंभ में ही देख लेता है।

आपके लिए कार्य

4 परमेश्वर वास्तव में हमें "सन्त" अथवा "पवित्र जन" कहकर बुला (पुकार) सकता है क्योंकि वह...

(अ) जानता है कि हम उसकी सेवा करना चाहते हैं।

(ब) हमारी ग़लतियों और असफलताओं को देख नहीं सकता।

(स) देखता है कि हम क्या बनेंगे।

यह हमारे उद्धार के कारण के पुनः आश्वासन पर ध्यान देना है। कुलुस्सियों 1:15-27 परमेश्वर की योजना में मसीह के कार्य (और व्यक्ति) को स्पष्ट रूप में बताता है। मसीह ने हमें छुड़ाया; हमारा छुटकारा उसी में है। वही अनदेखे परमेश्वर के समान दिखाई देने वाला परमेश्वर है। वह समस्त वस्तुओं का सृष्टिकर्त्ता है। वह प्रत्येक वस्तु से पूर्व ही अस्तित्व में था और वही सब कुछ को संभालने (कायम रखने) वाला है। प्रत्येक वस्तु में उसका प्रथम स्थान था तथा जो कुछ परमेश्वर देखता है उसमें भी। वास्तव में वही तो कारण है: "मसीह जो महिमा की आशा है तुम में रहता है...तुम परमेश्वर की महिमा के भागीदार होगे" (कुलुस्सियों 1:27)।

आपकी प्रतिक्रिया (प्रत्युत्तर)

कारण (मसीह और उसका कार्य) के परिणाम का आश्वासन दिया गया है: सन्तता पूर्णता तक पहुँचाई गई है! (रोमियों 8:19, 1 यूहन्ना 3:1-2)। यदि प्रक्रिया के लिए आवश्यक समय पर ध्यान नहीं दिया गया (चूँकि परमेश्वर इस श्रेणी में नहीं आता, न यह उस पर लागू होता है), तब तो कारण और प्रभाव एक साथ ही

हुए। इसी कारण, परमेश्वर की दृष्टि में, हम जो होंगे, वह अभी भी हैं।

आश्वासन अति महान है, फिर भी आपका भाग महत्त्वपूर्ण है। आप महत्त्वपूर्ण बने रहते हैं, मसीह के कार्य को जोड़ने के कारण नहीं, परन्तु उसकी प्रक्रिया (कार्यप्रणाली) में बने रहने के कारण (कुलुस्सियों 1:23)।

आपके लिए कार्य

5 **मान लीजिए** एक विश्वासी जिसे आप जानते हैं उसने आप से यह **पूछा** हो: "परमेश्वर किस बात को सबसे महत्त्वपूर्ण मानता है—मसीह ने मेरे लिए क्या किया अथवा मैं उसके कार्यों के प्रति क्या प्रत्युत्तर दूं या कैसे मानूं?" सबसे उत्तम उत्तर के अक्षर पर गोला बनाएं।

(अ) परमेश्वर मसीह के कार्य को सबसे महत्त्वपूर्ण मानता है क्योंकि वह जानता है कि हमारी मानवीय निर्बलताएँ हमें उसकी प्रक्रिया में भाग लेने के निमित्त अयोग्य ठहराती हैं। इसका अर्थ है कि हमारे प्रत्युत्तर (मानने की प्रक्रिया) को परमेश्वर महत्त्वपूर्ण नहीं ठहराएगा।

(ब) परमेश्वर दोनों को ही भिन्न तरीकों से महत्त्वपूर्ण ठहराता है। वह मसीह के कार्य को कारण (अभिप्राय) के कारण प्राथमिकता के आधार पर प्रथम स्थान पर रखता है। हमारा प्रत्युत्तर महत्त्वपूर्ण है क्योंकि हमें प्रभाव के परिणाम निमित्त उसकी प्रक्रिया में बने रहना है।

परमेश्वर हमें क्यों बुलाता है और हम अपने को क्या देखना चाहते हैं, इनके अन्तर को हमने पहिचान लिया है। हमारा लक्ष्य स्पष्ट है—उसका कारण, उसकी योजना हममें पूरी हुई है। परन्तु अब हमें यह खोजना चाहिए कि हम परमेश्वर के दृष्टिकोण को अपने अनुभव में सत्य बनाने हेतु कैसे सहायक बन सकते हैं। हमें यह मालूम करना चाहिए कि हम सन्त कैसे बन सकते हैं और जो हम हैं भी।

परमेश्वर की अपेक्षाओं को पूरा करना

विषयवस्तु 3. उन कारणों को पहिचानना कि हम वह क्यों बन सकते हैं जिसकी अपेक्षा परमेश्वर करता है कि हम बनें।

मसीही अनुभव का मल्लयुद्ध तथा लड़ाई (अखाड़ा), मसीही जीवन की अनिश्चितता और तनाव; ये सब इसलिए होता है, क्योंकि हम इस प्रश्न का उत्तर प्राप्त करने का प्रयत्न करते हैं: **हम प्रतिदिन अपने लिए परमेश्वर की योजना (रूपरेखा) को किस प्रकार चुन सकते हैं?**

नया नियम के अधिकांश निर्देश इस प्रश्न से सम्बन्ध रखते हैं। इसके वे परिच्छेद जो यह बताते हैं कि मसीही कैसे बना जाए, छोटे हैं; पर इसके वे परिच्छेद जो यह बताते हैं कि मसीहियों को कैसे जीवन बिताना चाहिए अपेक्षाकृत लम्बे हैं।

परिवर्तन लाने की योग्यता सामर्थ के दो मूलभूत भण्डारगृहों से मिलती है। पहिला है, मसीह के कार्य की वास्तविकता जिसमें उसने पाप की व्यवस्था और मृत्यु पर विजय प्राप्त की है। दूसरा है, भलाई की एक विशेष सामर्थ जिसने बुराई पर जय पाई और बुराई को भलाई से बदल दिया।

मसीह पाप के ऊपर विजयमान था

हमें क्यों अपने-अपने जीवन में परमेश्वर की योजना को पूरा कर सकते हैं ? इसका पहला कारण यह है कि मसीह ने पाप के ऊपर विजय पा ली है। अब हमारे ऊपर पाप का अधिकार नहीं रहा। पाप का प्रभाव तो है पर उसका प्रभुत्व नहीं रहा।

मसीह की विजय और कार्य कितना वास्तविक था ? मसीह का कार्य न तो कोई विचार, न ही धारणा है। यह तो वास्तविक घटना थी। यह एक निश्चित समय और निश्चित स्थान पर हुई। और यह एक वास्तविक लड़ाई थी। वहां वास्तव में रक्त बहा, वास्तविक मृत्यु हुई, वास्तविक पुनरुत्थान हुआ और यह वास्तविक विजय थी। यह वास्तविक कार्य था क्योंकि पाप की सामर्थ भी वास्तविक थी।

मनुष्य के इतिहास में, कोई भी पाप की व्यवस्था की सामर्थ से बच नहीं सका (रोमियों 3:23)। यह इसकी वास्तविकता का पर्याप्त प्रमाण है। परन्तु जहां इस व्यवस्था को सिद्ध करने का प्रमाण है, वहीं यह भी प्रमाण मौजूद है कि मसीह ने इस पर विजय प्राप्त की है। पुनरुत्थान के उपरान्त चालीस दिन तक अनेक लोगों द्वारा जाँचा गया (प्रेरितों के काम 1:3; 1 कुरिन्थियों 15:3-8)। इस विषय में कोई प्रश्न बाकी न रहा। मसीह जीवित हो उठा है।

पाप की सामर्थ आदम के पतन पर आधारित है। पाप पर विजय पाना एक जन के आज्ञापालन के द्वारा हुआ—वह व्यक्ति है यीशु मसीह (रोमियों 5:18-19)। यह विजय "व्यवस्था" पर "जीवन" का विजयोन्माद है, आशाहीनता पर आशा की जीत है। तथा मनुष्य की मूर्खता के ऊपर परमेश्वर के अभिप्राय का पूरा होना तथा मनोवेग पर प्रेम की विजय है।

आपको पाप की व्यवस्था के ऊपर धार्मिकता तथा स्वतन्त्रता प्राप्त हो सकती है, क्योंकि वास्तविकता में मसीह आपके पाप के लिए मरा। वह आपके बदले में मरा था। परीक्षा में गिराने के लिए शैतान का तरीका है आपको हतोत्साहित या निराश कर देना तथा आपकी विजय की वास्तविकता के प्रति शंका उत्पन्न कर देना। वह डाँट-डपट, दोष लगाना तथा छल जैसे हथकण्डों का प्रयोग करता है। परन्तु आप स्वतन्त्र हैं!

आपके लिए कार्य

6 अब पाप की हम पर प्रभुता अथवा शासन नहीं रहा क्योंकि...

(अ) आदम की अनाज्ञाकारिता समस्त मनुष्य जाति पर पाप ले आई।

(ब) मसीह की वास्तविक विजय ने पाप की वास्तविक सामर्थ पर विजय प्राप्त की है।

(स) बाइबल हमें समझाती है कि हमें कैसे मसीही बनाता है।

भलाई ने बुराई पर विजय प्राप्त की

अपने जीवनों में परमेश्वर की योजना को पूरा करना क्यों संभव है इसका दूसरा कारण है क्यों भलाई (परमेश्वर की) ने बुराई (शैतान की) पर विजय प्राप्त की है। पवित्रशास्त्र इस सच्चाई को हम पर प्रकट करता है कि हम कैसे पुराने या पापमय स्वभाव को, जो अत्यधिक मनोव्यथा उत्पन्न करता है, हरा सकते हैं।

पापमय आदत यू ही नहीं रुक जाती है। वह तो दूसरे पाप का स्थान लेती रहती है। पाप सृजनात्मक नहीं है, यह तो विकृत या भ्रष्ट कर देने वाला है। इसलिए बाइबल ऐसे अनेक उदाहरण प्रस्तुत करती है कि बुराई को भलाई से बदला जा सकता है। ये भले कार्य मात्र सामान्य व्यवहार को नहीं दर्शाते पर ये तो पुराने स्वभाव के प्रतीक हैं। शरीर और आत्मा के बीच चलने वाले मल्लयुद्ध में हमारा कार्य है भलाई से बुराई पर विजय पाना।

पुराने स्वभाव के जीवन मिथ्यावादिता (झूठ के पिता, शैतान का वरदान) पर आधारित होता है। नया स्वभाव स्वयं को सत्य रूप में प्रकट करता है। अतः हमें झूठ बोलना छोड़कर उसके स्थान पर सच बोलना है (इफिसियों 4:25)। अगले अभ्यास में आप इस सम्बन्ध के अन्य उदाहरणों का अध्ययन करेंगे।

आपके लिए कार्य

7 नीचे दिए गए पद अपनी बाइबल में से पढ़िए। नीचे बुराई के कार्यों के नाम दिए गए हैं जिन्हें आप पद में दिए गए भले कार्यों से बदलें।

(अ) इफिसियों 4:28; लूटमार और चोरी करना

.....

(ब) इफिसियों 4:29; गन्दी बात मुँह से बोलना

.....

(स) 1 पतरस 3:9; बुराई के बदले बुराई करना

.....

(द) ग़लतियों 5:16-26; हमारे मानवीय स्वभाव की माँग के अनुसार बुरे काम करना

.....

(य) 3 यूहन्ना 11; बुरे की नकल करना

.....

यह विधि हमें उस नमूने को दिखाती है जो पूरे पवित्रशास्त्र में पाई जाती है। शैतान ने सदा ही यह प्रयत्न किया है कि भलाई के स्थान पर बुरे काम रख दिए जाएँ। यह प्रक्रिया पतन का कारण

बनी (उत्पत्ति 3)। हमें बुराई के स्थान पर भले कार्यों को रखना है।

सच्चाई से चलना इसका मतलब दंभी बनना नहीं है। यह तो नये स्वभाव का जो पवित्रता में सृजा गया अपने दिमाग की ताक़त और इच्छा का प्रयोग करना है। जब परमेश्वर हमारे जीवन के उन क्षेत्रों में, जो हमारी सामर्थ के बाहर हैं, कार्य करना आरंभ करता है तब हम बुराई के स्थान पर भले कार्य करने लगते हैं और यह प्रकट करते हैं कि "मसीह हममें" है। यही वह प्रक्रिया है जो हमारे अन्दर बनती जाती है (और हम अभी इसी पक्रिया में हैं भी)

जब हम इस सच्चाई को ग्रहण कर लेते हैं कि हम इस प्रक्रिया में हैं तो परिणाम स्वरूप कई परिणाम सामने आते हैं। हमारे लिए यह सहज हो जाता है कि जो इस प्रक्रिया में हैं हम उन्हें ग्रहण करते हैं। हम अपने संघर्ष को भलीभाँति समझ सकते हैं। हम परीक्षाओं पर विजय पाने की शक्ति पाते हैं क्योंकि हमें मालूम होता है कि कैसे सामना करना है। हम अपनी आदत रूपी सामर्थ का प्रयोग कर सकते हैं, एक ऐसी सामर्थ जिसे शैतान अक्सर प्रयोग करता है, ताकि हम स्वयं को निर्बल बनाने के स्थान पर मज़बूत बनायें। इसका मतलब यह है कि हमें अपने पापमय स्वभाव की बुराई को भली आदतों से बदलना चाहिए।

आपके लिए कार्य

8 हमने ऐसे कुछ कारणों का अध्ययन किया है कि हम क्यों परमेश्वर की अपेक्षाओं को पूरा कर सकते हैं। नीचे दिए गए कथनों में से ऐसे कथनों के अक्षरों पर गोला बनाएँ जिनमें उपरोक्त कारण दिए गए हैं।

(अ) परमेश्वर हमसे चाहता है कि हम जो कुछ भी करते हैं उन सब में पूरी तरह से धर्मी और सिद्ध पाए जाएँ।

(ब) हमारे ऊपर पाप का प्रभाव तो है परन्तु प्रभुत्व नहीं है।

(स) जो भलाई परमेश्वर की ओर से है वह शैतान की ओर से आने वाली बुराई पर जयवन्त है।

(द) मसीही जीवन का संघर्ष तब उठ खड़ा होता है जब हम सच्चे मसीही बने रहने हेतु प्रयत्नशील रहते हैं।

(य) हम उस वास्तविक विजय में भागीदार बनते हैं क्योंकि मसीह ने पाप पर विजय प्राप्त की है।

हमारे लिए परमेश्वर की अपेक्षाओं को पूरा करना संभव है। क्योंकि मसीह ने पाप पर विजय पाई है।

आपके लिए कार्य

9 जब आप इस पाठ के अध्ययन को पूरा करते हैं तो थोड़ा समय निकालकर I यूहन्ना 3:1-3, 9-10 पद अपनी बाइबल में से पढ़िए। तब अपनी नोट बुक में निम्न प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

(अ) हमारे पास क्या आशा है (पद 2) ?

(ब) हम पाप करते क्यों नहीं रहते ?

अपने उत्तरों को जांच लें

5 (ब) परमेश्वर दोनों को ही महत्त्वपूर्ण समझता है।

1 (अ) इफिसियों 2:22

6 (ब) मसीह की वास्तविक विजय ने ..... विजय पाई।

2 आपका उत्तर। आपकी कोई भी कठिनाई वास्तव में विजय पाने का अवसर बनती है।

7 (अ) काम करके दूसरों को देना। (ध्यान रखें: हम इसे वस्तुओं से भी जोड़ सकते हैं, चाहे चोरी करना या काम करना और देना।)

(ब) अच्छे शब्दों का प्रयोग करें जिनसे भली बातें निकलें। (ध्यान दें: शब्दों का प्रयोग किया जा सकता है। प्रश्न यह है कि हम कौन सी आदत अपने अन्दर पनपने देते हैं।)

(स) बुराई के बदले आशीष देना।

(द) आत्मा के अनुसार अच्छे (भले) कार्य करना।

(य) जो भला है उसी के अनुरूप चलना।
(अपने शब्दों में उत्तर दीजिए।)

3 (ब) हम एक पवित्र जाति हैं–(अन्य चुनाव वे सब नहीं बताते जो परमेश्वर देखता है।)

8 (ब) हमारे ऊपर पाप का प्रभाव तो है, पर उसका अधिकार हम पर नहीं है।

(स) भलाई जो परमेश्वर की ओर से आती है...

(य) हम वास्तविक विजय के भागीदार बनते हैं...

4 (स) यह देखना कि हम क्या बनेंगे।

9 (अ) यह तो मसीह के समान (अनुरूप) होगा।

(ब) क्योंकि परमेश्वर का निजी स्वभाव हम में रहता है।
(अपने शब्दों में उत्तर दीजिए।)

परमेश्वर मुझसे कैसे बात कर सकता है?

...मैंने कभी वास्तव में उसे सुना ही नहीं।

"जाओ, और किसी भी अशुद्ध वस्तु को मत छुओ।" यह आग्रहपूर्ण वाणी थी, इसमें अधिकार था, यह कायल करने वाली थी। मैनुएल ने जब यह वाणी सुनी तो वह अपने घर की ओर जा रहा था। एक व्यवसाय में वह एक ऊँचे पद पर काम करता था जिसमें उसकी आय भी अधिक थी, परन्तु यह सब परमेश्वर को आदर नहीं देता था। उस वाणी ने उसके विचारों को झकझोर दिया क्योंकि यह वास्तविक थी। मैनुएल को मालूम था कि कोई उससे बोल रहा था, परन्तु उसे इस बात का निश्चय नहीं हो पा रहा था कि वह इस वाणी को अपने कानों से सुन रहा था अथवा अपने हृदय से। कहीं पहिले भी उसने इन शब्दों को सुना था।

मैनुएल एक मसीही परिवार में बड़ा हुआ था और उसे याद था कि जब वह एक छोटा लड़का था तब बाइबल की कक्षाओं में जाया करता था उसके भाई और बहिन प्रभु की सेवा में लग गए परन्तु मैनुएल अपना जीवन आरंभ करने से पूर्व एक "अच्छी ज़िन्दगी" जीने की ओर आकर्षित हो गया था जहाँ ढेर सा रुपया मिले, बड़ा सा मकान हो तथा अन्य सुख-सुविधाओं का सामान हो। अतः परिवार के अन्य सदस्यों से उसने एक भिन्न दिशा चुनी। उसने अपने विवेक को इस तरह वश में किया कि उसके जीवन में उसका विवेक परेशान न करने पाए। वह जवान था,

उसके लक्ष्य निर्धारित थे और वह "सफलता" के मार्ग पर अग्रसर था। तब यह वाणी सुनाई दी। **यह वाणी कहाँ से आ रही थी? कौन बोल रहा था?** उसने स्वयं से पूछा।

जब मैनुएल ने यह वाणी सुनी तो उसे एक बात का तो निश्चय हो गया; यह वाणी परमेश्वर ही की वाणी थी। उसे बाइबल की कहानियों के शब्द याद आ गए, परन्तु यह किसी यादगार से बढ़कर अनुभव था। वह अपने घर जाते हुए बीच रास्ते में ही रुक गया, अपने सोच-विचार को परमेश्वर की ओर लगाया और अपने जीवन के समर्पण की भावना से उस वाणी का उत्तर दिया।

परमेश्वर बोलता है। उसे सुना जा सकता है। कभी-कभी उसकी वाणी ठीक मैनुएल के अनुभव के रूप में "सुनाई देती है"; कभी-कभी यह भिन्न रूप में सुनाई देती है। यह पाठ आपकी यह खोज करने में सहायता करेगा कि परमेश्वर आपसे कैसे बात करता (बोलता) है।

इस पाठ में आप सीखेंगे...

- परमेश्वर के बात करने के ढंग या तरीके
- कोई कोई परमेश्वर की वाणी क्यों नहीं सुनता उसके कारण
- परमेश्वर बात करेगा इसका आश्वासन

यह पाठ आपकी सहायता करेगा...

- उन तमाम तरीकों का वर्णन करना जिनके द्वारा परमेश्वर हमसे बोलता है।
- क्यों कुछ लोग परमेश्वर को उनसे बात करते हुए नहीं सुन पाते हैं, इस बात को समझाना।
- इस बात का आश्वासन प्राप्त करना कि परमेश्वर आपसे बोलेगा।

हमसे बात करने के परमेश्वर के तरीके

विषयवस्तु 1. उन विभिन्न तरीकों के उदाहरणों को पहचानना जिन्हें परमेश्वर हमसे बात करने के लिए प्रयोग में लाता है।

कुछ लोग अपना बहुत सारा समय चिन्ता करने में बिता देते हैं कि क्या परमेश्वर मुझसे बात करेगा? वह कैसे बात करेगा? ऐसे प्रश्न लोग अक्सर अपने आप से किया करते हैं। यह एक दिलचस्प बात है कि परमेश्वर, जिसने हमें बनाया और हमें सुनने और बोलने की योग्यता दी; उसके बारे में हम सोचा करतें हैं कि क्या वह स्वयं से बात कर सकता है! परन्तु परमेश्वर बात करता है। उसने ऐसे तमाम तरीके चुने हैं कि वह हमसे बोले, बात करे और अपनी बात बताए।

परमेश्वर बाइबल के द्वारा बोलता है

परमेश्वर ने हमसे बात करने का प्राथमिक तरीका अपना लिखित वचन, अर्थात् बाइबल को चुना। यह तो असंभव सा प्रतीत

होता है कि जो पुस्तक लगभग दो हज़ार वर्ष पूर्व लिखी जा चुकी थी क्या वह व्यक्ति विशेष से उसके लिए परमेश्वर की योजना के बारे में बात कर सकती है। परन्तु बाइबल एक पुस्तक से कहीं बढ़कर है। यह तो स्वयं परमेश्वर की ओर से हमारे लिए सन्देश है। यह सत्य हमें आश्वस्त करता है कि वह हमसे बात कर सकती है और हम इसे समझ भी सकते हैं।

पवित्र आत्मा की प्रेरणा से बाइबल लिखी गई। पवित्र आत्मा त्रिएकत्व का तीसरा व्यक्ति है। यह ठीक पिता परमेश्वर तथा पुत्र परमेश्वर के सदृश्य परमेश्वर है। जो विशेषताएँ और गुण पिता व पुत्र में हैं वही इसमें भी हैं, इसमें सम्पूर्ण ज्ञान भी सम्मिलित है। वह प्रत्येक बात को जानता है। वह वर्तमान को जानता है, वह भूतकाल को भी जानता है। वह भविष्य को भी जानता है। यह आपको तब से जानता है जब आप पैदा भी नहीं हुए थे, बल्कि आपके माता-पिता के बनने से पूर्व अथवा जब किसी का अस्तित्व ही नहीं था तब से जानता है।

वह बाइबल का लेखक है। उसने इसके लिखे जाने की प्रेरणा दी व मार्गदर्शन किया। उसने इसके प्रमाणिक होने का निश्चय स्थापित किया (2 पतरस1:19-21)। यह मनुष्य जाति के लिए परमेश्वर की योजना का प्रकाशन है। न केवल उद्धार पाने के लिए यह आपकी अगुवाई करता है, परन्तु यह आगे अगुवाई करने में भी पूर्ण सक्षम है। पवित्र आत्मा ने बाइबल में वह सब रखा है जो आपको एक सफल मसीही जीवन जीने के लिए आवश्यक है।

आपके लिए कार्य

1 अपनी बाइबल में से 2 तीमुथियुस 3:16-17 पढ़िए और अपनी नोटबुक में इस प्रश्न का उत्तर लिखिए: परमेश्वर के

जन अथवा जो व्यक्ति परमेश्वर की सेवा करता है उसकी पवित्रशास्त्र किस प्रकार सहायता करता है?

पवित्रशास्त्र का आश्चर्यकर्म केवल इस बात में नहीं कि वह कैसे लिखा गया था, परन्तु इस बात में भी है कि वह किस प्रकार समझा गया क्योंकि पवित्र आत्मा आज भी जीवित और विद्यमान है। वही तो बाइबल लेखक का कर्ता था और वही इसको समझाने का कर्ता है।

पाठ दो में सीखे कुछ पवित्रशास्त्र के सन्दर्भों के विषय में विचार कीजिए—जिनमें यह आश्वासन दिया गया है कि पवित्र आत्मा हमारी अगुवाई करने में सक्षम है। उदाहरण के लिए, यूहन्ना 14 तथा 16 में मसीह की उस शिक्षा का स्मरण कीजिए जहाँ सहायक अथवा सान्तवनादाता—पवित्र आत्मा—के आने के विषय कहा गया (यूहन्ना 14:16; 16:12-15)। रोमियों 8:26-27 में दिए गए आश्वासन को स्मरण रखिए कि पवित्र आत्मा परमेश्वर के मन की बातें जानता है, और वह हमारी प्रार्थना की अगुवाई करेगा। मसीह ने तो यहाँ तक कहा कि पवित्र आत्मा उसकी शिक्षाओं को हमारे मन में बैठाएगा (यूहन्ना 14:26)। पवित्र आत्मा यह कैसे करता है? वचन के द्वारा, जिसका लेखक वह स्वयं है?

क्या कभी आपने पवित्रशास्त्र को पढ़ा और महसूस किया कि किसी पद या परिच्छेद ने आपको कचोटा है? हाँ, वह आपसे बोला और आपकी आवश्यकता को समझने में सहायता की, जिसे समझ पाना या उसका हल ढूँढ़ना आपके लिए मुश्किल था। ठीक ऐसे अवसर पर आपने वचन से अगुवाई पाई। हमारे अपने विचारों या सिद्धान्तों की पुष्टि के लिए वचन हमारी अगुवाई नहीं करता पर

जब हम पवित्रशास्त्र के द्वारा परमेश्वर के मन की बातें जानना चाहते हैं तो निश्चय अगुवाई मिलती है।

मसीह को निश्चय था कि पवित्र आत्मा उसके विषय में बोला और बताया, क्योंकि मसीह ने अक्सर पुराने नियम के सन्दर्भों का हवाला दिया और उन परिच्छेदों के बारे में बताया जो उससे सम्बन्धित थे। पवित्र आत्मा की सहायता के बिना हम सत्य अथवा मार्गदर्शन के प्रति चूक जाएँगे। (लूका 4:18 देखें)। अन्यों ने भी इस प्रकार के प्रकाशन का अनुभव किया है (जैसा कि पतरस ने प्रेरितों के काम 2:14-21 में किया)।

मैनुएल, जिसके विषय में आपने इस पाठ के आरंभ में पढ़ा, वह मेरा एक निकट का मित्र है। जो वाणी उसने सुनी थी वह परमेश्वर की वाणी थी, जो उससे यशायाह 52:11 के द्वारा बोल रही थी, हालाँकि इस सन्दर्भ के वचन पहिले किन्हीं और लोगों के लिए कहे गए थे। यह पवित्र आत्मा का एक उदाहरण है कि वह पवित्र शास्त्र के वचनों का प्रयोग बोलने के लिए करता और उस बोले गए वचन को समझाता है।

आपके लिए कार्य

2 मान लीजिए कि आप किसी जन को समझाने का प्रयत्न कर रहे थे कि पवित्र आत्मा हमसे बोलने के लिए पवित्रशास्त्र के वचनों का प्रयोग कर सकता है। आप इसी तरह के अपने जीवन के किसी उदाहरण को अपनी नोटबुक में लिखिए—आप किसी दूसरे के जीवन के उदाहरण या इस पाठ में के उदाहरण को भी लिख सकते हैं।

पवित्र आत्मा, हमारी अगुवाई उन सिद्धान्तों के अनुसार करेगा जो हमें बड़ी स्पष्टता से सिखाए गए हैं। वह स्वयं अपना विरोध नहीं करेगा।

यदि पवित्रशास्त्र के सिद्धान्त हमारी सहायता करेंगे कि हम परमेश्वर की योजना का अनुसरण करें, तब तो हमें यह समझना चाहिए कि ये सिद्धान्त बाइबल में किस रूप में दिए गए हैं। बाइबल, मात्र जीवन के विषय में विचारों का संकलन नहीं है। यह तो परमेश्वर का मनुष्य से और मनुष्य का परमेश्वर से बोलने का अभिलेख है। सिद्धान्त प्रस्तुत किए गए हैं और हम उनके अर्थों को मनुष्यों के जीवन पर उनके प्रभाव के लेखा-जोखा से समझ सकते हैं।

उदाहरण के लिए, मसीह ने दीनता अथवा नम्रता पर अन्तिम विजय पाने का सिद्धान्त सिखाया (मत्ती 5:5)। परन्तु दीनता है क्या? हम मूसा के जीवन-वृतान्त का अध्ययन करने के द्वारा समझ सकते हैं कि यह अन्य गुणों के साथ सन्तुलन बनाए रखने में कार्यकारी होता है (उदाहरण के लिए निर्गमन 12 अध्याय देखें)।

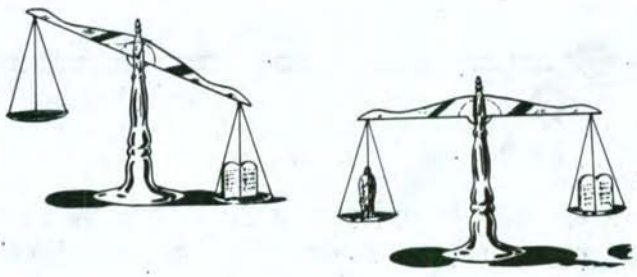

इस्राएल के दो राजाओं दाऊद और शाऊल के जीवनों का अध्ययन करने से हम पश्चात्ताप करने और दुःख भोगने के अन्तर को समझ सकते हैं। यह शाऊल के पाप की महानता के कारण

नहीं था, जो उसके हाथ से राज्य निकल जाने का कारण बना। यह तो वह सच्चाई थी कि उसने दुःखपूर्ण तरीके से व्यवहार किया, परन्तु न तो कभी भी अपने पाप से पश्चात्ताप किया और न ही अपनी बुरी चाल से ही फिरा। इसके विपरीत, दाऊद ने अपने सम्पूर्ण हृदय से पश्चात्ताप किया (उदाहरण के लिए 1 शमूएल 13:8-14; 15:17-25; 2 शमूएल 12 तथा भजन संहिता 51 की तुलना करें)।

आपके लिए कार्य

3 प्रेरितों के काम 5:40-42 तथा नीचे दिए गए पदों को पढ़िए। प्रेरितों के काम की घटना एक सिद्धान्त का उदाहरण है इन पदों में–

(अ) मत्ती 5:7
(ब) मत्ती 5:11
(स) मत्ती 6:37

हम कह सकते हैं, कि पवित्र आत्मा, सिद्धान्तों के अन्तर्गत हमारी अगुवाई करने हेतु वचन को लागू करता है।

आपके लिए कार्य

4 हमने तीन प्रकार के मार्गदर्शन के बारे में सीखा है जो हम पवित्रशास्त्र के द्वारा पाते हैं। नीचे दिए गए प्रत्येक सन्दर्भ को

पढ़िए और इनका उस विवरण से मिलान करें जो इस मार्गदर्शन का प्रतिनिधित्व करते हैं। रिक्त स्थान में सही कथन का अंक लिखिए।

1) एक व्यक्ति या समूह को सीधा आदेश दिया गया।
2) बर्ताव करने या व्यवहार का सिद्धान्त।
3) किसी के जीवन में सिद्धान्त का एक उदाहरण।

...(अ) यहोशू 6:4
...(ब) मत्ती 5:44
...(स) मत्ती 19:21
...(द) प्रेरितों के काम 7:54-60

परमेश्वर दूसरों के द्वारा बात करता है

परमेश्वर दूसरों को भी अपनी इच्छा बताने हेतु प्रयोग में लाता है। वह ऐसा करने के लिए मसीहियों अथवा ग़ैरमसीहियों को भी इस्तेमाल कर सकता है।

हम उन ढाँचों के अन्तर्गत रहते और काम करते हैं जो अधिकार पर आधारित होते हैं, जैसे सरकार, परिवार, व्यवसाय और कलीसिया। इनमें से प्रत्येक का एक विशेष क्षेत्र में मार्गदर्शन का उत्तरदायित्व है। प्रत्येक की पवित्रशास्त्र द्वारा पुष्टि एक माध्यम के रूप में की गई जिसके द्वारा परमेश्वर बात करता है। उदाहरण के लिए, छोटे बच्चों के माता-पिता उनका मार्गदर्शन करते हैं, और परमेश्वर का वचन कहता है, यह बच्चों के लिए परमेश्वर की इच्छा है कि वे आज्ञाकारी बनें (इफिसियों 6:1)। एक देश के शासकों के पास यह अधिकार है कि वे अपने देश के नागरिकों का ठीक ठीक मार्गदर्शन करें, और परमेश्वर का वचन

कहता है कि यह परमेश्वर की इच्छा है कि शासकों की आज्ञापालन की जाए (रोमियों 13:1)।

इन सम्बन्धों के अतिरिक्त ऐसे लोग भी हैं, जिन्हें परमेश्वर हमारे जीवनों में आने देता है। परमेश्वर के साथ एक लम्बी अवधि तक चलते रहने के कारण ये बुद्धिमान भी हो सकते हैं, बहुधा इनके परामर्श मूल्यवान होते हैं क्योंकि ये परमेश्वर के मार्गों को जानते हैं।

आपके लिए कार्य

5 अपनी बाइबल में से निर्गमन 18:13-26 पढ़िए। अपनी नोटबुक में निम्न प्रश्नों का उत्तर लिखिए।

(अ) मूसा की समस्या क्या थी (पद 13-17)?
(ब) मूसा को यित्रो ने क्या सलाह दी (पद 18-23)?
(स) परिणाम क्या हुआ (पद 24-26)

अन्ततः, राजा दाऊद, इस्राएल की प्रजा की गिनती लेने के कारण पाप में गिर ही गया, क्योंकि उसने योआब के परामर्श पर ध्यान नहीं दिया था (2 शमूएल 24:3-4, 10)। यित्रो और योआब को मूसा और दाऊद पर "अधिकार" नहीं था; वास्तव में मूसा अगुवा था और दाऊद राजा था। परन्तु उनके परामर्श का एक मूल्य था।

परमेश्वर तो स्कूल में दी जाने वाली परीक्षा या जाँच के द्वारा यह दिखाता है कि उसने आपको विशेष वरदान या योग्यताएँ दी हैं। वह स्कूल टीचर के द्वारा भी आपसे बात कर सकता है, क्योंकि टीचर बहुधा विशेष गुणों को पहिचान लेते हैं।

जब हम कोई सलाह प्राप्त करते हैं यदि वह हमसे मेल नहीं खातीं तो क्या होता है? कुछ सलाहों को हमें टाल देना चाहिए क्योंकि ये पवित्रशास्त्र के निर्देश के विरुद्ध होती हैं। उस व्यक्ति पर ध्यान देने की आवश्यकता है जिसने हमको सलाह दी है: हमारे प्रति उसके मन में कैसी भावनाएँ हैं? हमारे अन्दर यह दृढ़-विश्वास होना चाहिए कि परमेश्वर स्पष्टता से बात कर सकता है।

आपके लिए कार्य

6 केनेथ अपना कार्य कठोर मेहनत से करता है और सोचता है कि उसे कार्य के अनुरूप कम वेतन दिया जाता है। वह अपने मित्रों से पूछता है कि क्या करे। इफिसियों 6:5-8 में दिए गए निर्देशों के आधार पर उसे निम्न सलाहों में से कौन सी सलाह नहीं मानना चाहिए।

(अ) कार्ल ने उसे सलाह दी कि कम वेतन के अनुरूप वह कम काम करे और अपने मालिक के जाते ही वह भी चला जाया करे।

(ब) बॉब ने बताया कि उचित होगा कि वह अपने मालिक से बात करके अपनी शिकायत बताए।

(स) जिम ने सलाह दी कि वह कठोर मेहनत करना छोड़कर धीमे काम करे चूँकि उसे अच्छा वेतन नहीं मिल रहा है।

परमेश्वर बीते अनुभवों के द्वारा बात करता है

परमेश्वर के पीछे चलने में पहिले मिली अगुवाई परमेश्वर की वाणी को और भी अधिक स्पष्टता से सुनने में आपकी मदद

करेगी, फिर चाहे वह किसी भी माध्यम से बोलना क्यों न चुने। जब आप अपने बीते जीवन पर विचार करते हैं तो आपने यह जाना कि परमेश्वर विश्वासयोग्य रहा और वह बोला भी। सच्चे मन से परमेश्वर के पीछे चलते रहने में आप अपने जीवन से उसकी वाणी को पहिचान जाते हैं और अपने जीवन में उसकी अगुवाई का अनुभव और भी अच्छी तरह से करते हैं।

इसी प्रकार परमेश्वर ने पवित्रशास्त्र में वर्णित मनुष्यों के जीवन में विशेष सिद्धान्तों के अनुसार कार्य किया। वह आपके जीवन में भी इन्हीं विशेष सिद्धान्तों के अनुसार कार्य करेगा। पहिले तो आप भिन्न-भिन्न रूपों में परमेश्वर के कार्य को अपने जीवन में देख सकेंगे। तब आप परमेश्वर के कार्य करने का एक नमूना पाएँगे। अन्त में, परमेश्वर के पीछे चलने के अपने अनुभव से आप उन सिद्धान्तों को खोज निकालेंगे जिनके द्वारा वह कार्य कर रहा है। नीचे दिया गया उदाहरण इसका एक अच्छा नमूना है।

जब जिम ने बाइबल कॉलेज से अपना प्रशिक्षण पूरा करके उपाधि प्राप्त की, तब दो कलीसियाओं ने उससे कहा कि वह आकर उनका पास्टर बने। उसने प्रार्थना की, बाइबल पढ़ी तथा आत्मिक अगुवों से सलाह ली। कुछ भी स्पष्ट सा प्रतीत न हुआ उसे। यदि वह दोनों में से एक कलीसिया को चुन लेता तो पवित्रशास्त्र के किसी भी सिद्धान्त का उल्लंघन नहीं होता। उसके बाइबल कॉलेज के शिक्षकों ने सलाह दी कि वह दोनों में से एक को चुन ले; एक आत्मिक अगुवे ने परामर्श दिया कि दूसरी वाली कलीसिया को चुने। वह अधिक प्रतीक्षा नहीं कर सकता था और उसे चुनाव करना ही था। अतः उसने निर्णय लिया और कलीसियाओं को सूचित कर दिया।

आश्चर्य की बात तो यह थी कि उसके चुनने का भय उसके समर्पण में दृढ विश्वास के द्वारा बदल गया। उसे निश्चय हो गया कि वह परमेश्वर की इच्छा में था।

क्या जिम ने भाग्य पर भरोसा किया और सही चुनाव किया? नहीं। उसका चुनाव भाग्य पर निर्भर नहीं था...यह तो परमेश्वर की अगुवाई का परिणाम था। क्योंकि उपरोक्त सलाहों के होते हुए भी जिम परमेश्वर की इच्छा पूरी ईमानदारी के साथ करना चाहता था। वह पवित्र आत्मा के अनुसार चलता चला। उसके पास एक परिवर्तित मन था (रोमियों 12:1-2)। उसका निर्णय पवित्र आत्मा की अगुवाई के प्रत्युत्तर में किया गया था जिसमें उसके विवेकपूर्ण ज्ञान का हाथ नहीं था।

कई वर्ष बाद, जिम को फिर एक महत्त्वपूर्ण निर्णय लेना था। उसने पुनः परमेश्वर की ओर देखा, प्रार्थना की, सलाहों को सुना, भिन्न-भिन्न संभावनाओं पर ध्यान दिया। फिर वहाँ, स्वर्ग से कोई वाणी सुनाई नहीं दी। वह फिर ऐसे समय में पहुँच गया, जहाँ वह अधिक प्रतिक्षा नहीं कर सकता था और उसे निर्णय लेना ही था। उसने निर्णय लिया और पुनः उसका भय दृढ़ विश्वास में बदल गया क्योंकि उसने परमेश्वर का अनुसरण किया था।

जिम ने यह महसूस करना आरंभ किया कि परमेश्वर की इच्छा अनुसरण में एक सिंद्धान्त ज्यों का त्यों बना रहा। जब उसने परमेश्वर की ओर बड़ी ईमानदारी से देखा, तो परमेश्वर ने उसकी इस रूप में अगुवाई कि उसे स्वयं निर्णय लेना पड़ा। उसने देखा कि भजन संहिता 37:23 जो सिद्धान्त दिया गया है, "मनुष्य की गति यहोवा की ओर से दृढ़ होती है", यह उसके जीवन में पूरा हुआ था। वह उस पर निर्भर रह सकता था। वहाँ कोई ऐसी वाणी सुनाई नहीं दी जिसे वह पहिचान सकता था और फिर भी परमेश्वर बोल रहा था। जिम का निर्णय परमेश्वर की इच्छा के अनुरूप सही प्रत्युत्तर था।

आपके लिए कार्य

7 हमने अभी-अभी अध्ययन किया है कि परमेश्वर ने किस प्रकार उस व्यक्ति की अगुवाई की जो उसकी इच्छा पूरी करना चाहता था। आपके जीवन में परमेश्वर ने किस प्रकार अगुवाई की इस बारे में सोचिए। तब नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर अपनी नोटबुक में लिखिए।

(अ) उद्धार पाने में परमेश्वर ने आपकी अगुवाई किस प्रकार से की थी?

(ब) किस प्रकार के लोगों को आपका मार्गदर्शन करने के लिए प्रयोग किया?

(स) परमेश्वर के वचन में किस सन्देश ने आपका विशेष मार्गदर्शन किया?

(द) किन परिस्थितियों को परमेश्वर ने आपको नया बनाने में प्रयोग किया?

(य) क्या आपने अपने जीवन में अगुवाई के किसी नमूने या सिद्धान्त को देखा? वह क्या है?

परमेश्वर सीधे बात कर सकता है

अपने वचन, दूसरे लोगों और बीते अनुभवों के अलावा, परमेश्वर कभी-कभी हमसे सीधे बात करता है। कितनी बार परमेश्वर इस प्रकार से बात करना चुनता है? यदि हम अपने विवेक को इस रूप में लें कि यह परमेश्वर की वाणी का प्रतिनिधि है, तो हम कह सकते हैं कि कितनी ही बार परमेश्वर हमसे सीधे ही बातचीत करता है। स्मरण रखें कि उसका सन्देश, जो वह हमें देता है कभी भी उसका विरोधी नहीं होता जो वह पहले से ही बाइबल में कह चुका है।

आप कैसे जानेंगे कि जो वाणी आप सुनते हैं वह परमेश्वर की ही वाणी है? बाइबल में दो प्रकार की जाँच दी गई है जो एक दूसरे की पूरक हैं और आपस में सन्तुलन बनाए रखती हैं। पहली जाँच आत्मगत है। जैसे एक भेड़ गड़रिये की वाणी पहचानती है (यूहन्ना 10:4), आप भी अपने चरवाहे की वाणी को पहिचानेंगे (यूहन्ना 10:14-15)। जब आपने परमेश्वर की इच्छा जानना चाही थी, तब आपने अपने मन को परमेश्वर के वचन से भरा और पवित्र आत्मा का अनुसरण किया, तब आप जान सकते हैं कि यह तो परमेश्वर का बोलना है।

दूसरी जाँच पहले की जाँच को बल प्रदान करती है : परमेश्वर का निर्देशन सदा उसके अपने लिखित वचन की सहमति में होता है (यशायाह 8:20)।

आपके लिए कार्य

8 प्रेरितों के काम 10:9-33 पढ़िए तथा नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर अपनी नोटबुक में लिखिए।

(अ) किन दो रूपों में परमेश्वर ने पतरस से सीधे बात की थी (पद 9-16, 19-20)?

(ब) परमेश्वर का सन्देश किस रूप में पूरा हुआ (पद 14, 17-18, 22)?

(स) पतरस ने क्या किया (पद 21-23, 28)?

क्या कारण है कि कुछ लोग परमेश्वर की वाणी नहीं सुनते

विषयवस्तु 2. ऐसे लोगों के उदाहरणों को आपस में मिलाएं जो परमेश्वर के सन्देश को सुनने से वंचित रह गए—उन कारणों की खोज करना कि ऐसा क्यों हुआ।

सामान्यतः दो प्रमुख कारण हैं कि क्यों लोग परमेश्वर की वाणी सुनने अथवा निर्देशन पाने से चूक जाते हैं। एक कारण यह है कि ऐसे लोग परमेश्वर के बोलने के तरीके को ग्रहण नहीं कर सकते। दूसरा कारण है कि जो परमेश्वर ने कहा है उसका उन्होंने पालन नहीं किया।

परमेश्वर के तरीके का तिरस्कार

इब्रानियों 1:1-3 हमें बताता है कि परमेश्वर पहले जिस तरह मनुष्य से बोला अब उसने वह तरीका बदल दिया है। मसीह के आगमन के पूर्व तक वह हमारे पूर्वजों और नबियों के द्वारा बोला।

परन्तु उसने इस तरीके से बोलने को अब अपने पुत्र द्वारा बोलने से बदल दिया। **परमेश्वर कौन था** यह पूर्णरूपेण यीशु मसीह में विद्यमान है। परन्तु, चूंकि लोगों ने इस तरीके (यीशु मसीह) को ग्रहण नहीं किया इसलिए वे उस सन्देश से वंचित रह गए।

नामान एक बड़ा सेनापति था, वह प्रत्येक बात में एक सफल व्यक्ति था (2 राजा 5 देखें)। परन्तु उसके जीवन में एक अभिशाप था: उसे कोढ़ था, एक भयंकर बीमारी। परमेश्वर ने उससे बातचीत करने के लिए विभिन्न माध्यमों का इस्तेमाल किया और अन्त में उसे एलीशा नबी के पास जाने के लिए उभारा। नामान सोचता था कि स्वयं एलीशा आकर उससे बात करेगा, इसके विपरीत एलीशा का नौकर सन्देश लेकर आया (पद 9-12)। नामान के मन में सन्देश के प्रति शंका थी, क्योंकि वह सन्देश एक सन्देशवाहक लाया था, यह उसे अच्छा नहीं लगा। परन्तु जब उसने सन्देश को माना और उसके अनुसार किया तो वह चंगा हो गया (पद 13-14)।

कभी-कभी परमेश्वर बोलने के ऐसे तरीके इस्तेमाल करता है जिनके हम अभ्यस्त नहीं होते। यह तो परमेश्वर होने के नाते उसका अधिकार और विशेषाधिकार है। जो माध्यम वह प्रयोग में लाता है उसके कारण उसके सन्देश को सुनने व समझने से वंचित न रहें।

अनाज्ञाकारिता

दूसरा, कुछ लोग अनाज्ञाकारी होने के कारण परमेश्वर की अगुवाई पाने और उसकी वाणी को सुनने से चूक जाते हैं। हमने (पाठ 2) पहिले ही कहा कि परमेश्वर की वाणी सुनने के लिए आज्ञाकारी होना अति आवश्यक है। परन्तु अब फिर उस सिद्धान्त को दोहराता हूँ।

गिदौन, इस्राएल को गुलामी से छुड़ाने हेतु एक फौज़ तैयार कर रहा था। वह परमेश्वर से इस कार्य के संचालन हेतु आदेश ले रहा था। यदि उसने किसी भी समय आज्ञा का पालन न किया होता तो वह फिर परमेश्वर से यह अपेक्षा नहीं कर सकता था कि वह उसे अपने कार्य की योजना बताना ज़ारी रखे। परन्तु जैसे-जैसे एक-एक क़दम पर गिदौन परमेश्वर के आदेशों का पालन करता रहा वैसे-वैसे दूसरे क़दम के कार्य के प्रति उसे सन्देश प्राप्त होता रहा। अन्त में उसके पास चुनिन्दा तीन सौ पुरुषों की फौज़ थी, जिन्होंने हज़ारों मिद्यानियों को मौत के घाट उतार डाला (न्यायियों 7:1-25)।

गिदौन का अनुभव हमें इस सलाह का सुझाव देता है: यदि निर्देश पाने के लिए आपको परमेश्वर की वाणी सुनने में कठिनाई का सामना करना पड़ रहा है, तो परमेश्वर के वचन में से खोज कीजिए कि आप कहाँ पर असफल रहे?

आपके लिए कार्य

9 व्यक्ति जो परमेश्वर की अगुवाई पाने में चूक गया उसके विवरण का उस कारण से मिलान कीजिए कि उसने ऐसा क्यों किया।

1) माध्यम का तिरिस्कार करने के कारण
2) अनाज्ञाकारिता के कारण

...(अ) ओलाव जानता है कि वह उस मित्र को क्षमा करे जिसने उसके साथ बुरा व्यवहार किया, परन्तु ओलाव ने ऐसा नहीं किया। अब उसे लगता है कि आगे के जीवन में निर्देश पाने के लिए उसकी प्रार्थना का उत्तर उसे नहीं मिलता है।

...(ब) दान परमेश्वर की अगुवाई पाने को आतुर था। उसके माता-पिता भी प्रार्थना किया करते थे कि दान को सही अगुवाई मिले कि वह आगे क्या करे। उन्होंने उसे सलाह दी कि वह एक वर्ष तक काम करके आगे प्रशिक्षण लेने हेतु पैसा बचाए। परन्तु दान ने उनकी सलाह को ठुकरा दिया, उसने यह अपेक्षा नहीं की थी कि परमेश्वर उसके माता-पिता के द्वारा उससे बोलेगा।

...(स) लिन्डा सोचती थी कि वह जानती है कि अब परमेश्वर उससे क्या चाहता है कि वह करे। वह जानती थी कि परमेश्वर चाहता है कि अब वह एक बाइबल कक्षा को पढ़ाने के द्वारा सहायता करे, परन्तु फिर भी उसने ऐसा नहीं किया।

आश्वासन कि परमेश्वर बात करेगा

विषयवस्तु 3. उन सच्चाइयों पर मनन करना जो यह आश्वासन देती हैं कि परमेश्वर आपसे बात करेगा।

जो जन परमेश्वर की इच्छा पूरी करना चाहता है उसे इसलिए भयभीत होने की आवश्यकता नहीं कि वह परमेश्वर की वाणी सुनने में समर्थ नहीं है। बात करने और बताने की सामर्थ हम पर निर्भर नहीं होती, परन्तु यह तो परमेश्वर पर निर्भर है।

परमेश्वर बोलता है; वह आपसे बोलेगा। इसके लिए आपको दृढ़ विश्वास होना चाहिए। बाइबल में असंख्य ऐसे प्रमाण मौजूद हैं कि परमेश्वर बोला और सुना गया बल्कि उस समय भी जब मनुष्य उसकी वाणी नहीं सुन रहे थे (उदाहरण के लिए योना को, योना 1:3 में तथा शाऊल को, प्रेरितों के काम 9:1-6 में लीजिए)। वह निश्चय ही उससे बोलेगा जो उसकी सुन रहा है।

आपके लिए कार्य

10 नीचे दिए गए पवित्रशास्त्र के परिच्छेदों को पढ़ें और मनन करें। नीचे दिए गए प्रत्येक प्रश्न का उत्तर अपनी नोट बुक में लिखिए।

(अ) भजन संहिता 19:7-11 : परमेश्वर की व्यवस्था या वचन हमें क्या देता है (पद 11)?

(ब) भजन संहिता 23:1-3 : परमेश्वर क्यों हमारी अगुवाई करता है (पद 3)?

(स) भजन संहिता 25:8-10 : परमेश्वर हमें क्यों सिखाता है (पद 8)?

अपने उत्तरों को जांच लें

6 वह इनकार (तिरस्कार) कर देगा
(अ) कार्ल की सलाह, और
(स) जिम की सलाह। क्या आप बता सकते कि क्यों?

1 यह उसको प्रत्येक भले काम करने में लगाए रखेगा। (या इसी तरह का उत्तर।)

7 आपके उत्तर। मुझे आशा है कि इन प्रश्नों के उत्तर आपकी सहायता करेंगे जबकि आप अपने जीवन में परमेश्वर की अगुवाई पाने के लिए प्रयत्नशील हैं।

2 आपका उत्तर। आपने मैनुएल के अनुभव का वर्णन किया होगा अथवा ऐसी ही बात कभी आपके जीवन में भी घटी अथवा किसी के अनुभव को आप जानते हैं।

8 (अ) दर्शन के द्वारा (पद 10-16) तथा वाणी के द्वारा (पद 13, 15, 19)।

(ब) पतरस ने परमेश्वर की वाणी को पहिचान लिया (पद 14) तथा परिस्थितियों ने इसे प्रमाणित किया (पद 17-18, 22)।

(स) उसने परमेश्वर की वाणी का पालन किया (पद 23) तथा उन्हें ग्रहण किया, जिन्हें परमेश्वर ने ग्रहण करने को कहा था (पद 28)।

(आपके उत्तर इसी प्रकार के होने चाहिए। यह घटना परमेश्वर द्वारा सीधी बातचीत करने का एक अच्छा उदाहरण है।)

3 (ब) मत्ती 5:11

9 (अ) अनाज्ञाकारिता—(2)

(ब) माध्यम का तिरस्कार—(1)

(स) अनाज्ञाकारिता—(2)

4 (अ) (1) एक व्यक्ति या समूह को सीधा आदेश दिया गया।

(ब) (2) व्यवहार (बर्ताव) का सिद्धान्त।

(स) (1) एक व्यक्ति या समूह को सीधा आदेश दिया गया।

(द) (3) किसी के जीवन में सिद्धात का एक उदाहरण।

10 (अ) यह हमें ज्ञान या चेतावनी देता है।

(ब) वह अपने नाम के निमित्त अगुवाई करता है अथवा अपनी प्रतिज्ञा पूरी करता है।

(स) वह हमें सिखाता है क्योंकि वह भला और धर्मी है। (अथवा इसी तरह का उत्तर।)

5 (अ) वह स्वयं ही सब लोगों का न्याय कर रहा था और यह कार्य उसके अपने लिए बहुत बड़ा था।

(ब) यित्रो ने उसको सलाह दी कि अपने लिए योग्य पुरुषों को चुन ले कि वे तेरी सहायता करें।

(स) पुरुषों की नियुक्ति की गई और समस्या का हल हो गया; अब मूसा पूरी रीति से इस्राएलियों की अगुवाई करने में समर्थ था।

(आपके उत्तर इसी प्रकार के होने चाहिये।)

क्या यीशु परमेश्वर की योजना को जानता था?

...वह परमेश्वर का पुत्र था।

बढ़ई की दुकान पर एक सूचना पट्टी टंगी थी, "काम के लिए दुकान खुली है।" यह एक पारिवारिक व्यवसाय था जिसे पिता चलाया करता था और उसका छोटा लड़का उसका प्रशिक्षणार्थी था। यह दुकान ईमानदारी के लिए मशहूर थी; क्योंकि बढ़ई और उसका पुत्र जो नमूना ग्राहक द्वारा बताया जाता उसे वैसे का वैसा बना दिया करते थे। प्रशिक्षणार्थी अपने आप में विशेष था और उसने कार्य के प्रति पूरी दक्षता दिखाई उसमें महान प्रतिज्ञा के गुण मौजूद थे। उसके लिए एक ही सीमाबद्धता थी कि अभी वह लड़का ही था। जो कुछ भी उसने किया वह सब ठीक ठीक किया; परन्तु अभी भी सीखने के लिए बहुत कुछ बाकी था। इस सीखने वाले लड़के को जिस बात ने मशहूर कर दिया था वह उसकी योग्यता थी कि उसने अपनी सारी ताकत अपने कार्य में लगा दी थी। जब अन्य लोग पाप करने को झुकते प्रतीत हुए तब यह बढ़ई का पुत्र अपने अन्दर व्याप्त इच्छा के कारण सही काम करने में लगा हुआ था।

क्या यह चित्रण मसीह के बाल्यावस्था को निरूपित करता है? क्यों नहीं, मैंने इसलिए इसे लिखा है क्योंकि उसके बाल्यावस्था के बारे में बहुत थोड़ा सा कहा गया है। हम इतना ही जानते हैं: उसकी बाल्यावस्था वास्तविक थी।

जब मसीह मनुष्य बना तो उसने स्वभाविक जीवन की सीमाओं के प्रति स्वयं को सौंप दिया। जब वह एक शिशु था, उसका जीवन ख़तरे में था और उसके माता-पिता को उसको बचाने हेतु दूर देश को भागना पड़ा था। हालांकि वह परमेश्वर का सनातन पुत्र था फिर भी हेरोदेस राजा उसको घात करवा सकता था। परमेश्वर-पुत्र मसीह अनन्तकाल की योजना को निश्चित रूप में जानता था। परन्तु मनुष्य बनने में उसने मनुष्य के समान जीना, बोलना-बताना चुना ताकि वह मानवीयता का अनुभव करे और प्रार्थना में परमेश्वर से बातचीत करे।

जब हम उसके जीवन का अध्ययन करेंगे तो हम परमेश्वर की योजना और उसका पालन करने के अर्थ को और अधिकाई से सीखेंगे।

इस पाठ में आप सीखेंगे...

- मसीह ने अपनी सीमाओं के भीतर सीखा।
- जब मसीह बड़ा हो रहा था तब सीखा।
- मसीह ने तब सीखा जब उसने प्रार्थना की।
- मसीह ने अपने अनुभवों से सीखा।

यह पाठ आपकी सहायता करेगा...

- यह समझाना कि मसीह ने परमेश्वर की योजना को कैसे सीखा और पालन किया।
- उन तरीकों को बताना जिनके द्वारा आप उसके नमूने पर चल सकते हैं।

मसीह ने सीमाओं के भीतर सीखा

विषयवस्तु 1. उन बातों को पहिचानना जिन्हें मसीह ने सीमाबद्धता के अपने अनुभव से सीखा था।

मसीह को अपनी सीमाबद्धता का पूर्ण ज्ञान था। सृष्टि के परमेश्वर (यूहन्ना 1:3) ने स्वयं को उस शरीर से सीमित किया जो स्वयं उसने रचा था। उसने अपनी इच्छा से अपने ईश्वरीय ज्ञान, उपस्थिति तथा सामर्थ को सीमित किया था। उसने अनुभवों के द्वारा सीखने हेतु स्वयं को सौंपा। उसने अपने माता-पिता के प्रति समर्पित होकर बचपन के सीमित दायरों तथा निराशाओं में जीना सीखा। उसका बचपन भी वैसा ही था जैसा कि सामान्य मनुष्य का होता है, इसके अतिरिक्त अन्य आश्चर्यजनक बातों को सोचने का कोई कारण नहीं है। इसमें शक नहीं कि बाल्यावस्था में ही उसका परिचय अनुशासन से कराया गया था। जबकि वह बड़ा होने लगा तब भी वह अपनी सीमाओं से बाहर नहीं गया।

जब वह पिता के तुल्य हुआ और उसमें पिता के सारे गुण मौजूद थे फिर भी उसने आज्ञापालन की सीमा में स्वयं को सम्मिलित पाया (फिलिप्पियों 2:6-8)। उसने वह नहीं किया जो वह चाहता था, परन्तु जो परमेश्वर चाहता था वही किया (यूहन्ना 5:19-30)। उसने अनुभव से सीखा कि मनुष्य भिन्न-भिन्न दबावों से घिरा व दबा हुआ है। स्वाभाविक इच्छाएँ एक बात करने को ज़ोर देती हैं, वहीं पिता की इच्छा कोई दूसरा काम करने की ओर प्रेरित करती है।

उसकी परीक्षा लिए जाने के समय उसने अपने मानवीय जीवन की निर्बलताओं की गहराई को महसूस किया, फिर भी उसे मालूम था कि वह चुनाव के प्रति स्वतन्त्र नहीं कि पत्थरों को रोटी बनाए (लूका 4:1-4)। सृष्टिकर्त्ता के पास हमें बताने के लिए जीवन का अनुभव कैसा अनोखा था।

आपके लिए कार्य

1 मसीह ने अपनी इच्छा से स्वयं को सीमित किया जिससे कि वह हमारे अनुभव के साथ बाँट सके–

(अ) पाप
(ब) असफलता
(स) मानवीयता

जब मसीह बड़ा हो रहा था तब सीखा

विषयवस्तु 2. बाइबल में लिखे वृतान्तों से मसीह के बचपन के लिए परमेश्वर की इच्छा के बारे में निष्कर्षों को पहिचानना।

मसीह ज्ञान और बुद्धि में बड़ा हुआ। बाइबल में उसके जीवन के अनेक विशेष क्षेत्रों का वर्णन है जो उसके जीवन में हुए थे।

लूका 2:40 में उसके बचपन में बड़े होने का वर्णन किया गया है। यह इस बात का सटीक प्रमाण है कि परमेश्वर का हाथ उस पर था, क्योंकि बाइबल बताती है कि बालकपन से ही वह बुद्धि से परिपूर्ण था। फिर भी, उसने तब तक कोई आश्चर्यकर्म करके नहीं दिखाया जब तक कि उसने गलील में अपनी सेवा का आरंभ न किया (यूहन्ना 2:11)।

जब वह अभी बारह वर्ष का ही था, उसके माता-पिता उसे मन्दिर में फसह का पर्व मनाने के लिए ले गए (लूका 2:41-42)। यहूदी समाज के अनुसार वह उस आयु तक पहुँच रहा था जबकि उसे धार्मिक मामलों के लिए बालिग़ (व्यस्क) माना जा सकता था। फिर भी उसके लिए अभी भी अपने माता-पिता के अधीन रहना आवश्यक था।

शायद इस समय यीशु एक प्रकार की जाँच को महसूस कर रहा था जैसा कि हम भी बड़े होते समय अनुभव किया करते हैं। यह प्रश्न अक्सर हमारे मन में उठता है : व्यक्ति के जीवन में वह समय कब आता है जबकि वह अपने जीवन का लक्ष्य निर्धारित करे और अपने निर्णयों के प्रति उत्तरदायित्व को ग्रहण करे?

मसीह के जीवन में आत्मिक विकास के प्रति जागरुकता होना चाहिए थी अथवा मसीह के जीवन में परमेश्वर के प्रति विवेकशीलता। एक बात तो स्पष्ट है : इसने उसके जीवन में तनाव पैदा किया। उसने अपने आप में मन्दिर में ठहरे रहने का आकर्षण महसूस किया, फिर भी अपने माता-पिता के मार्गदर्शन के प्रति कर्त्तव्यशील रहकर (लूका 2:43-51)।

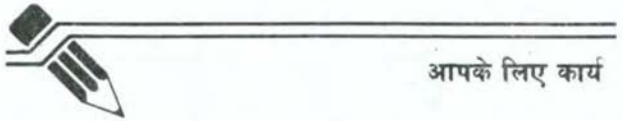

आपके लिए कार्य

2 लूका 2:41-51 पढ़िए। उस समय के अपने व्यवहार से यीशु यह दर्शाता है कि वह—

(अ) अपने निर्णय स्वयं ही ले सकता था क्योंकि उस पर किसी व्यक्ति का अधिकार नहीं था।

(ब) अपने माता-पिता के अधिकार में सीमित था फिर भी परमेश्वर की सेवा पूर्ण रूप से कर सकता था।

(स) अपने माता-पिता की सलाह और अगुवाई पाने के लिए बाध्य नहीं था।

यह दिलचस्प बात है कि लूका 2:40 में हम पढ़ते हैं कि मसीह बुद्धि से परिपूर्ण था तथा लूका 2:52 में वह बुद्धि और डीलडौल में बड़ा हुआ। इससे यह प्रतीत होता है कि बुद्धि एक वरदान है फिर भी व्यक्ति की परिपक्वता और विकास से जुड़ी हुई है। मसीह के बालक होने के नाते भी उसमें बुद्धि का समावेश हुआ। वह उसके मानसिक तथा आत्मिक विकास के लिए भी आवश्यक थी।

इसमें कोई शंका नहीं कि उस समय मसीह ने अपने लिए परमेश्वर की योजना को जाना और सीखा। जब उसने अपने पुत्रत्व को समझा, तब उसने पाया कि उसका सही स्थान मन्दिर में है। तथापि, उसके लिए परमेश्वर की इच्छा में मरियम और यूसुफ और इन तमाम वर्षों में उनका अनुशासन और शिक्षाएँ भी सम्मिलित की गई थीं। बारह वर्ष की आयु में उसने अपनी सेवा का सम्पूर्ण चित्र तो नहीं देखा था, परन्तु अपनी बारह वर्ष की अवस्था के अनुकूल जो वह जानता था उसकी प्रतिक्रिया प्रकट की। सच्चाई तो यह थी कि मसीह के लिए परमेश्वर ने अपना प्रशिक्षण पूरा नहीं किया था, न ही मसीह अभी अपनी सेवा के लिए तैयार ही था।

जैसा कि हम सच्चाइयों के द्वारा समझ में बढ़ते जाते हैं इसी प्रकार मसीह भी बढ़ता गया।

आपके लिए कार्य

3 परमेश्वर की इच्छा के निष्कर्ष (सारांश) को जिसे हम यीशु की बाल्यावस्था के बारे में दिए गए बाइबल के

विवरण—लूका 2:41-52 में देख सकते हैं—उस अक्षर पर गोला बनाएँ जिसमें परमेश्वर की इच्छा का सारांश पाया जाता है।

(अ) जो व्यक्ति अपने लिए परमेश्वर की इच्छा का खोजी है उसे अभी भी उसकी समझ में बढ़ने की आवश्यकता है।

(ब) व्यक्ति एक ही समय में परमेश्वर की इच्छा का पालन और सीमाओं में बंधा नहीं रह सकता।

(स) अंपनी इच्छा के बारे में परमेश्वर जो बुद्धि प्रदान करता है वह विकास या परिपक्वता से सम्बन्धित नहीं होती।

मसीह ने प्रार्थना करने के द्वारा सीखा

विषयवस्तु 3. उन शिक्षाओं का वर्णन करना जिन्हें आपने प्रार्थना के द्वारा सीखा, वे उसी प्रकार की हैं जैसा कि मसीह ने सीखा था।

मसीह ने न केवल तब सीखा जब वह बढ़ रहा था किन्तु उसने तब भी सीखा जब उसने प्रार्थना की। जैसा कि पिता से सम्बन्ध स्थापित करने हेतु हम प्रार्थना करते हें, वैसे ही यीशु मसीह प्रार्थना में पिता से निकट सम्बन्ध बनाए रखता था। जब कि बाइबल में उसके युवावस्था में प्रार्थना की आदत (तीस वर्ष की आयु तक का) का वर्णन नहीं किया गया, फिर भी यह बिलकुल स्पष्ट है कि उसने अपने प्रार्थना के जीवन को अपनी तीन वर्षीय सेवाकाल में एक आदत बना लिया था। उसने प्रार्थना के जीवन का विकास पहिले ही कर लिया था। प्रार्थना के द्वारा उसने परमेश्वर की योजना के विषय में क्या सीखा?

अनुशासन

मसीह ने प्रार्थना के अनुशासन के प्रति स्वयं को समर्पित किया था। प्रार्थना एक सरल अनुभव नहीं है; यह शरीर की अभिलाषाओं से जब-तब सहायता पाती है। सच तो यह है कि आत्मिक विजय जो आत्मा की वेदना से प्राप्त होती है, वह अक्सर हमारी देह में दुःख उठाने के मूल्य से जीती जाती है। हमारे शरीर इस तरह के मल्लयुद्ध और संघर्ष में भाग लेने से स्वयं को दूर रखने के प्रति प्रयत्नशील रहते हैं।

गतसमनी के बाग में यह सिद्धान्त मसीह की प्रार्थना के अनुभव में स्पष्ट रीति से प्रकट हुआ है। वहाँ हम मसीह को उसकी आत्मिक अर्न्तदृष्टि की परवाह किए बिना एक ऐसे शक्तिशाली संघर्ष के बीच पाते हैं कि पिता की न बदलने वाली इच्छा के प्रति वह क्या करे। उसने कहा, "हे मेरे पिता, यदि हो सके, तो यह दुःख रूपी कटोरा मुझ से टल जाए" (मत्ती 26:39)। उसकी पुकार ऐसी थी जैसे एक मनुष्य परमेश्वर के मार्ग को सीख रहा हो। उस तनाव के बीच, प्रार्थना की वेदना, उसके मानवीय शरीर की वेदना को प्रकट कर रही थी और उसका पसीना मानो लहू की बड़ी बड़ी बूँदों की नाईं भूमि पर गिर रहा था (लूका 22:44)।

आपके लिए कार्य

4 मत्ती 26:40-41 पढ़िए। शिष्य प्रार्थना नहीं कर रहे थे क्योंकि–

(अ) उन्हें निश्चय नहीं था कि प्रार्थना कैसे करना चाहिए।

(ब) उस समय उनके मन में प्रार्थना करने की इच्छा नहीं थी।

(स) उन्होंने शरीर की अभिलाषाओं पर मन लगाया और उन्हीं के वश में हो गए थे।

मानवीय देह सदा ही भौतिक सुख की खोज में रहती है। इसकी इच्छाए किसी को भी प्रार्थना करने, निवेदन और विनती करने के लिए अगुवाई प्रदान नहीं करेगी। मसीह ने इस सच्चाई को भलीभांति सीख लिया था, हालांकि उसका सिद्ध मानवीय स्वभाव था, और वह उस शाप से बिना दाग़, निर्दोष था जो आदम के पाप के कारण आया था।

निर्भरता

मसीह ने प्रार्थना में पिता पर निर्भर रहना सीखा। उसकी सेवकाई की प्रत्येक नई दिशा प्रार्थना में बिताए उसके लम्बे समय में उसे पहिले से प्राप्त हो जाती थी। जब उसे अपने बारह शिष्यों को चुनना था तो उसने पूरी रात प्रार्थना में बिताई थी। हालाँकि उसकी प्रार्थना के शब्द लिखे नहीं गए, फिर भी हम देखते हैं कि अगले दिन उसे इतना आत्मविश्वास था कि जिन बारह शिष्यों को उसने चुना था उन्हें नाम लेकर अपने पास बुलाया (लूका 6:12-16)।

हम यीशु की उस समय की प्रार्थना को सुन सकते हैं जो उसने मृत्यु और दुःख उठाने के पूर्व की थी। (यूहन्ना 17)। इस प्रार्थना में हम देखते हैं कि पिता से उसके व्यक्तिगत और प्रगाढ़ सम्बन्ध थे। उसकी प्रार्थना इतनी वास्तविक, इतनी व्यक्तिगत थी कि हम ऐसा महसूस कर सकते हैं कि पिता वहाँ मौजूद था। मसीह ने पिता को अपने सम्बन्ध (रिश्ते) का स्मरण दिलाया और यह भी कि जिन्हें पिता ने उसे दिया था उन पर उसने भरोसा किया। यह पूर्ण निर्भरता की प्रार्थना थी।

प्रभावकारी बातचीत

मसीह ने यह भी सीखा कि प्रार्थना परमेश्वर से बातचीत का एक पूर्ण प्रभावकारी और उत्तम तरीका है। जब उसने प्रार्थना की तो कार्य सम्पन्न हो गए। जब उसे जल में बपतिस्मा लेना था तो उसने प्रार्थना की और पवित्र आत्मा कपोत की नाईं उस पर उतरा (लूका 3:21-22)

उसने शिष्यों को, उनके प्रार्थना रहित जीवन के लिए झिड़का जब वे एक लड़के में से दुष्टआत्मा नहीं निकाल सके थे जिसने उस लड़के को बहुत सताया था (मरकुस 9:19, 28-29)। उसने कहा, कि विजय प्रार्थना के कारण ही मिली। उसकी सामर्थ उसकी प्रार्थनाओं द्वारा जाँची गई और प्रमाणित हुई।

उसने लाज़र को मृतकों में से जीवित करने हेतु प्रार्थना की (यूहन्ना 11:38-44)। उसने प्रार्थना में निरन्तर लगे रहकर पिता से सामर्थ्य और निर्देश प्राप्त किए। उसने सीखा कि परमेश्वर से बात करने हेतु प्रार्थना वास्तव में प्रभावकारी और पर्याप्त माध्यम है।

आपके लिए कार्य

5 हमने ऐसी तीन बातों का अध्ययन किया है जो मसीह ने प्रार्थना के द्वारा सीखी थीं। उन बातों पर विचार कीजिए जो आपने प्रार्थना के द्वारा सीखी हैं। अपनी नोटबुक में ऐसे अनुभवों का एक संक्षिप्त विवरण लिखिए अथवा उन क्षेत्रों के विषय, जिनमें आपको सीखने की आवश्यकता है:

(अ) अनुशासन
(ब) निर्भरता
(स) प्रभावकारी संसर्ग (बातचीत)

मसीह ने अपने अनुभव से सीखा

विषयवस्तु 4. उन विवरणों को चुनना जिनमें बताया गया है कि मसीह ने अनुभव के द्वारा क्या सीखा।

मसीह ने अनुभव के द्वारा सीखा। विभिन्न तरह का ज्ञान है जो एक व्यक्ति के कुछ अनुभव से प्रकट होता है। कभी-कभी ऐसा होता है कि व्यक्ति अपने ज्ञान से परे कुछ कर बैठता है तब उसे एक नए तरह का अनुभव होता है जो अलगाव का प्रतीक है।

परमेश्वर की पवित्रता अलगाव से चित्रित की गई है। परमेश्वर का पुत्र होने के नाते मसीह स्वयं को पापियों से जोड़ने नहीं आया था पर वह तो मनुष्यों से सम्पर्क साधने के लिए आया था। उसका उद्देश्य मनुष्य के अनुभवों को बाँटना था पर ठीक ऐसा करते हुए उसे अपनी पवित्रता को भी बनाए रखना था।

मनुष्य बनने के द्वारा मसीह क्या सीख सका जो वह पहिले नहीं जानता था?

परीक्षा पर विजय पाना

मसीह ने अपनी परीक्षा लिए जाने के अनुभव से सीखा। परीक्षा कोई ऐसी वस्तु नहीं थी जिसे उसने देखा था। यह तो वह सामर्थ थी जो उसने महसूस की थी जो कुछ भी करवा सकती थी। जंगल में उसकी परीक्षा लिए जाने के अनुभव का अनुसरण कीजिए (लूका 4:1-13)।

वह आत्मा के द्वारा जंगल में ले जाया गया और चालीस दिन तक उसने न कुछ खाया न पीया। चालीस दिन के दौरान उसने भिन्न-भिन्न परीक्षाओं का सामना किया जो शैतान ने उस पर डाली थीं। चालीस दिन के पश्चात उसने तीन बड़ी परीक्षाओं का सामना किया जिनका वर्णन बाइबल में किया गया है (शायद ये उसकी पहली और अन्तिम परीक्षाएँ थीं)। वह भूखा, थका हुआ

और शरीर में निर्बल था। वह अपनी मानवीय सीमाओं को महसूस कर रहा था। जिन कार्यों के लिए उसकी परीक्षा ली गई थी वे कार्य पूरी रीति से ग़लत नहीं थे, विशेषकर पत्थरों को राटी बनाने का कार्य।

अनन्तकाल के लिए संसार की सम्पूर्ण आशा मसीह की इस योग्यता पर निर्भर थी कि मसीह भूखा, थकावट, निर्बलता अथवा किसी भी परिस्थिति के बावजूद पिता परमेश्वर की इच्छा को जाने और उसकी इच्छा को पूरा करे। इस प्रकार का विरोध ही परीक्षा का अनुभव है।

उसकी विजय की तुलना अन्यों की असफलता से कीजिए। एसाव दिन भर शिकार की थकान से खाली हाथ लौटा था और उसी समय याकूब दाल पका रहा था। एसाव से न रहा गया और उसने याकूब से खाने के लिए दाल मांगी (उत्पत्ति 25:27-34) और अपने पहलौठे का अधिकार खो दिया। इस्राएलियों की सारी मण्डली को मिस्र की गुलामी से निकलकर जंगल में चलते हुए अभी ज्यादा दिन नहीं हुए थे कि भोजन के कारण कुड़कुड़ाने लगे और मात्र अपने पसन्द का भोजन पाने हेतु वे मिस्र को वापस लौटना चाहते थे (निर्गमन 16:1-3)।

यीशु ने अनुभव से सीखा। उसने स्वभाविक (प्रकृतिक) देह (शरीर) और मस्तिष्क की कमज़ोरी व चचलता को सीखा। उसने वचन की सामर्थ की पर्याप्तता को भी सीखा जो परीक्षा का सामना करने में समर्थ है। निर्बलताओं के प्रति उसमें धीरज था परन्तु वह पाप को सहन नहीं कर सकता था (इब्रानियों 4:15)।

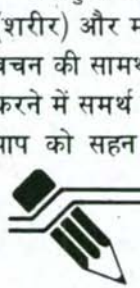

आपके लिए कार्य

6 मसीह का परीक्षा का अनुभव हमें दर्शाता है कि—

(अ) परीक्षाएँ ठीक उस समय हमारे ऊपर आती हैं जब हम उन पर विजय पाने के लिए बहुत ही कमज़ोर होते हैं।

(ब) हम परमेश्वर के वचन के उपयोग के द्वारा परीक्षा पर विजय पा सकते हैं।

(स) परीक्षा पर विजय पाना उस समय भी संभव है जब हम निर्बल और थक गए हैं।

आज्ञापालन

मसीह ने अपने दुःख उठाने के द्वारा आज्ञापालन सीखा। स्वर्ग में पुत्र के लिए एक बात करने के लिए है अर्थात् स्वयं को पिता के प्रति समर्पित करना। पृथ्वी पर मनुष्य के लिए आवश्यक है कि वह आज्ञाकारी बनें। मनुष्य की आज्ञाकारिता परमेश्वर के प्रति समर्पण है—जब इस संसार व शैतान की समस्त शक्तियाँ, तमाम परिस्थितियाँ, मनुष्य के विपरीत हों तब ही परमेश्वर के लिए मनुष्य का समर्पण सही आज्ञापालन है।

इस प्रकार का आज्ञापालन दुःख उठाने से ही सीखा जाता है। (इब्रानियों 5:8)। और कोई दूसरा मार्ग या उपाय नहीं है।

सर्वसामर्थी के लिए विरोध का अर्थ क्या हो सकता था? जीवन देने वाले के लिए मृत्यु का क्या अर्थ हो सकता था? चंगा करने वाले यहोवा के लिए दुःख-दर्द का क्या अर्थ हो सकता था? उस अनन्त स्रोत वाले के लिए आवश्यकता का क्या अर्थ हो सकता था? क्या कोई व्यक्ति नाप सकता है कि यदि समुद्र में से एक कप पानी ले लिया जाए तो क्या समुद्र पर कोई असर पड़ेगा?

परन्तु मसीह के लिए जो देहधारण करके मनुष्य बना—स्वयं में सीमितताओं का अनोखा अनुभव था। इस तरीके से उसने मनुष्य बनकर परमेश्वर के आज्ञापालन को सीखा था।

आपके लिए कार्य

7 अपने दुःख भोगने के अनुभव से मसीह ने आज्ञापालन सीखा क्योंकि–

(अ) उसे दुःख भोगने का इससे पूर्व कुछ भी ज्ञान नहीं था।

(ब) उसने मनुष्य बनकर परमेश्वर की इच्छा पूरी की, स्वर्ग में परमेश्वर का पुत्र होकर नहीं।

(स) मनुष्य बनने के पूर्व वह पिता की इच्छा के अधीन नहीं था।

8 हमने ऐसे कई तरीकों का अध्ययन किया है जिनमें मसीह ने अपने लिए परमेश्वर की रूपरेखा को सीखा और उसका अनुसरण किया। प्रत्येक वाक्य को पढ़ें जिनमें इन तरीकों में से किसी एक का वर्णन किया गया है। तब अपनी नोटबुक में नीचे दिए गए वाक्यों को इस रूप में पूरा करें जिनमें यह बताया गया है कि किस प्रकार आप उसके नमूने को अपने जीवन में लागू कर सकते हैं।

(अ) मसीह ने अपनी मानवीय सीमाओं में बन्धे रहकर भी परमेश्वर की सिद्ध इच्छा को पूर्ण किया। मैं भी अपनी सीमाओं में रहकर जो मेरे अनुभवों का हिस्सा है, परमेश्वर की इच्छा पूरी कर सकता हूँ: ....(अपनी नोटबुक में इसे पूरा करें)।

(ब) मसीह ने प्रार्थना के अनुशासन में रहकर परमेश्वर की इच्छा को सीखा था। मैं प्रार्थना के अनुशासन के द्वारा परमेश्वर की इच्छा जान सकता हूँ: ... (इसे पूरा करें)।

(स) मसीह ने परीक्षा, भूख, थकावट, दर्द अथवा दुःख सहने के बावजूद परमेश्वर की इच्छा का पालन किया। मैं इस प्रकार की परीक्षा, भूख, थकावट, दर्द, या दुःख उठाने के द्वारा परमेश्वर की इच्छा का पालन कर सकता हूँ: ... (पूरा करें)।

पृथ्वी पर आने से पूर्व मसीह परमेश्वर का पुत्र था। पृथ्वी पर आने से पूर्व वह सब कुछ जानता था परन्तु स्वर्ग पर वापस जाते समय वह एक भिन्न प्रकार का ज्ञान लेकर गया। वह स्वर्ग पर हमारा महायाजक बनकर गया कि पिता के समक्ष हमारा प्रतिनिधित्व करे (इब्रानियों 12:2)।

क्या ही उत्साहजनक एवं प्रेरणादायक है यह! कैसा अनूठा उदाहरण! मसीह हमसे पहले गया। उसने अपने लिए परमेश्वर की रूपरेखा (योजना) को सीखा। वह विजयी है।

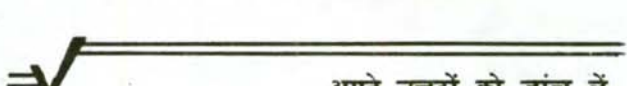

अपने उत्तरों को जांच लें

5 आपके उत्तर। क्या आप मसीह के प्रार्थनामय जीवन में कुछ सिद्धान्तों को पाते हैं जिन्हें आप परमेश्वर की रूपरेखा जानने व उस पर चलने के लिए अपने ऊपर लागू कर सकते हैं?

1 (स) मानवीयता।

6 (स) हम परमेश्वर के वचन को इस्तेमाल करने के द्वारा परीक्षा पर विजय पा सकते हैं।

(द) चाहे हम निर्बल या थके हारे क्यों न हों यह संभव है कि हम परीक्षा पर जयवन्त हो सकते हैं।

2 (ब) अपने माता-पिता के अधिकार की सीमा में था फिर भी परमेश्वर की सेवा कर सकता था।

7 (ब) मनुष्य होकर परमेश्वर की इच्छा पूरी की, न कि स्वर्ग में परमेश्वर का पुत्र होकर।

3 (अ) जो व्यक्ति अपने लिए परमेश्वर की इच्छा जानना चाहता है उसे उसकी समझ में बढ़ने की अभी भी आवश्यकता है।

8 आपके उत्तर। मुझे आशा है कि आप ऐसे कई तरीकों को जान सके हैं जिनमें आप मसीह का नमूना अपने जीवन के लिए ले सकते हैं।

4 (स) अपनी दैहिक अभिलाषाओं (शारीरिक इच्छाओं) को अपने ऊपर शासन करने दिया।

मैं भविष्य में कैसे पहुँचूँ?

...मैं यह जानना चाहता हूँ कि क्या करूँ।

मिस्टर रोबिन्सन के व्यापार में भारी घाटा हुआ; अनेक वर्षों में पहली बार ही उन्होंने इतने सारे रुपयों का नुकसान सहा था। समस्या तो यह थी कि उन्हें यह नहीं मालूम पड़ रहा था कि ऐसा क्यों हो रहा था। उनकी कम्पनी खरीदने के लिए उन्हें एक प्रस्ताव मिला। क्या वह तुरन्त नकद पैसा पाने के लिए बेच दें अथवा भविष्य में लाभ पाने की आशा से रोके रहें? यदि वह भविष्य को जान सकता होता!

मिस्टर रोबिन्सन ने भी वही किया जो दूसरों ने किया था। वह एक भविष्य-बताने वाले के पास गया। यदि वह भविष्य को जान सकता तो वह वैसा ही करेगा। भविष्य बताने वाले ने दावा करते हुए कहा कि मैं "देखता" हूँ कि एक बेईमान कर्मचारी, जो उसके निकट का व्यक्ति है जिस पर उसे भरोसा है, शीघ्र ही वह उसके व्यापार का मालिक बनने का प्रयत्न करेगा। वास्तव में, भविष्य बताने वाले ने यह कहा था कि यही व्यक्ति अस्थाई रूप से उसके व्यापार में हानि का कारण था।

मिस्टर रोबिन्सन ने ठीक वही किया जो भविष्य बताने वाले ने कहा था। वह मिस्टर केज़ी पर बुरी तरह बिगड़ उठे, जो उनका व्यापार में निकट का सहयोगी था। उसने मिस्टर केज़ी पर अनेक

वर्षों से भरोसा किया था, परन्तु अब उसने सोचा कि भविष्य बताने वाला ग़लत हो ही नहीं सकता।

उसी रात, मिस्टर रोबिन्सन अपने चर्च में गए। वहाँ पवित्र आत्मा ने उन्हें कायल किया। उसने भविष्य बताने वाले के पास जाने हेतु पश्चात्ताप किया तब मिस्टर केज़ी को बुलाया कि उससे अपने बुरे व्यवहार के लिए क्षमा माँगे। पर यह क्या, उसका दिल दहल गया क्योंकि मिस्टर केज़ी ने आत्म हत्या कर ली थी! बाद में, यह भी सिद्ध हो गया कि मिस्टर केज़ी एक ईमानदार व्यक्ति था और कंपनी के घाटे में उसका कुछ भी हाथ न था।

मनुष्य में क्या बात है जो हमेशा उसे अपना भविष्य जानने को प्रेरित करती है? क्या यह ग़लत है? इस पाठ में आप यह खोज कर पाएँगे कि परमेश्वर किस प्रकार चाहता है कि आप जानें कि उसने भविष्य के लिए क्या प्रकट किया है।

इस पाठ में आप सीखेंगे...

- भविष्य के लिए परमेश्वर की योजना।
- परमेश्वर क्यों अपने प्रकाशन को सीमित रखता है।
- आज वर्तमान के लिए परमेश्वर की योजना।

यह पाठ आपकी सहायता करेगा...

- सही मनोवृत्ति से भविष्य पर दृष्टिपात करना।
- यह समझाना कि परमेश्वर क्यों भविष्य की कुछ बातें तो दिखाता है और बाकि नहीं।
- अपने जीवन के लिए परमेश्वर की प्रतिदिन की योजना पर चलना।

भविष्य के लिए परमेश्वर की योजना

विषयवस्तु 1. भविष्य के प्रति परमेश्वर के प्रकाशन के अभिप्राय और उसकी सन्तुष्टि को बताना।

यह समझना अति आवश्यक है कि मनुष्य प्राणी ही ऐसी सृष्टि है जो यह संकेत देता है कि वह भविष्य के बारे में सोच सकता है। जानवर सहज बोध से अपने भविष्य के लिए भोजन एकत्रित किया करते हैं, परन्तु मनुष्य भविष्य के बारे में सोचता है और उसे अपने अभिप्रायों के लिए वश में करने का प्रयत्न भी करता है। मनुष्य ने स्वतः भविष्य के विषय में सोचने हेतु अपनी योग्यता को विकसित नहीं किया, यह योग्यता तो उसे परमेश्वर की ओर से दी गई है। यह उसके स्वभाव का एक हिस्सा है क्योंकि उसकी सृष्टि परमेश्वर के स्वरूप में की गई।

भविष्य को जानने का ख़तरा मनुष्य की इच्छा में निहित नहीं है। ख़तरा तो उस सच्चाई में निहित है कि कभी-कभी भविष्य के प्रति मनुष्य का ज्ञान उसे बुद्धिमानी-पूर्ण कार्य कराने के स्थान पर नासमझी के काम कराता है।

भविष्य के बारे में जानने के लिए प्रार्थना करना तथा परमेश्वर की इच्छा जानने के लिए प्रार्थना करने में अन्तर है। सामान्यतः हम भविष्य के बारे में जानना चाहते हैं ताकि हम निर्णय ले सकें कि क्या करना है। परन्तु जब हम परमेश्वर की

इच्छा को जानना चाहते हैं तो यह इसलिए कि जो वह हमसे चाहता है वह कर सकें।

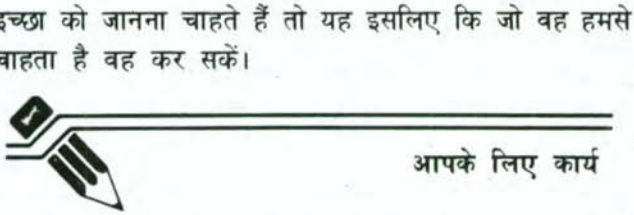

आपके लिए कार्य

1 निम्न में से कौन सा कथन भविष्य की सही मनोवृत्ति को दर्शाता है?

(अ) **मैं भविष्य के बारे में जानना चाहता हूँ इसलिए क्या कार्यवाही करना है इस बारे में मैं निर्णय ले सकता हूँ।**

(ब) मैं परमेश्वर की योजना को जानना चाहता हूँ ताकि जो वह मुझ से चाहता है वह कर सकूँ।

परमेश्वर ने क्या प्रकाशित (प्रकट) किया

परमेश्वर ने हम पर भविष्य की कुछ बातें प्रकट करना चुना। भविष्य में होने वाली बातों, बाइबल की अन्तिम पुस्तक, यूहन्ना को दिए गए प्रकाशन में इस रूप में प्रकट होती हैं जैसे दृश्यपटल पर आने वाले दृश्यों की श्रृंखला हो।

कई बार तो यूहन्ना विस्तार से देखे गए दृश्यों का वर्णन करता है। फिर भी, जो कुछ उसने लिखा, उसकी व्याख्या करते समय बाइबल के विद्वान भविष्य में होने वाली बातों के प्रति एक मत नहीं हैं। हो सकता है कि जब परमेश्वर भविष्य को दिखाता है तो वर्तमान समय के कारण उसे ग्रहण करना मुश्किल होता है।

हम कैसे कल्पना कर सकते हैं कि यीशु मसीह का स्वमेव इस पृथ्वी पर द्वितीय आगमन वास्तविक होगा अथवा वह एक हज़ार वर्ष तक धार्मिकता से राज्य करेगा (प्रकाशित वाक्य 1:7, 20:1-6)? इसमें आश्चर्य नहीं कि यूहन्ना द्वारा किए गए अनेक वर्णन अवास्तविक लग सकते हैं। क्योंकि हम इन घटनाओं को देखने हेतु

सक्षम नहीं हैं इसलिए उसके सन्देश के अर्थ को ठीक-ठीक समझ पाना हमारे लिए कठिन होता है।

यूहन्ना के सन्देश की स्पष्ट बातें हैं: जब परमेश्वर का समय (दिन) आएगा तो संसार बदल जाएगा। मनुष्य-निर्मित सभ्यता नष्ट हो जाएगी परन्तु मनुष्य जीवित बचा रहेगा। मसीह हस्तक्षेप करेगा और अपने राज्य की स्थापना करेगा।

दुष्ट का न्याय होगा और यदि कुछ भी बुराई शेष रहेगी तो उसे पृथ्वी पर से दूर कर दिया जाएगा। बुराई का सृष्टा शैतान दण्डित किया जाएगा और सदाकाल के लिए निकाल दिया जाएगा।

हम बदल जाएंगे!.हमें महिमामय देह दी जाएगी, हमारा ज्ञान सिद्ध ज्ञान होगा। उद्धार का कार्य पूरा हो जाएगा। आप व्यक्तिगत रूप में सिद्ध होंगे। आप परमेश्वर की सिद्ध इच्छा के अन्तर्गत भी पाए जाएंगे। स्वामी के रूप में मसीह जो हमारा बनाने वाला सृजक है वह आप में अपना कार्य पूरा कर चुकेगा; उसका राज्य पूर्ण होगा।

यह समझना सरल है कि क्यों परमेश्वर ने हमें पहले ही से अधिक या सब कुछ नहीं बताया। हमारे लिए यह कल्पना करना कठिन होता है कि उसने हम से क्या कहा था।

आपके लिए कार्य

2 प्रत्येक सत्य कथन के अक्षर पर गोला बनाएँ।

(अ) भविष्य के बारे में यूहन्ना द्वारा किया गया वर्णन अपरिचित है क्योंकि यह अवास्तविक है।

(ब) प्रकाशित वाक्य की पुस्तक बताती है कि यीशु मसीह स्वमेव व्यक्तिगत रूप में पृथ्वी पर लौटेगा।

(स) चूँकि हम भविष्य के विषय में ज्ञान का ग़लत प्रयोग कर सकते हैं, इसलिए परमेश्वर ने यही चुना कि हमें न बताए।

(द हमारे लिए परमेश्वर की योजना में सम्पूर्ण सिद्धता सम्मिलित है।

प्रकाशन के लिए परमेश्वर का अभिप्राय

भविष्य के बारे में थोड़ा ही जानने पर भी हम परमेश्वर की "सहायता" कर सकते हैं। इस सम्बन्ध में बाइबल के उदाहरण उत्पत्ति 16 अध्याय में पढ़ें—अब्राम और हाज़िरा की कहानी।

यीशु ने अपने लिए परमेश्वर की योजना के असीम-अधारभूत आनन्द को देखा था। यह आनन्द जो उसके आगे रखा था उसी ने उसे क्रूस और उसकी निन्दा को सहने योग्य बनाया था (इब्रानियों 12:2)। शैतान की योजना थी कि मसीह के अधिकार में जो भविष्य का ज्ञान था (संसार के सब राज्य मसीह के हो जाएँगे) उसका प्रयोग करके वह मसीह को यह निश्चय दिलाए कि इन राज्यों को प्राप्त करने का एक सरल तरीका है। वह मसीह से केवल यह चाहता था कि वह झुककर उसको दण्डवत करे (लूका 4:5-8)। परन्तु मसीह ने शैतान के प्रस्ताव को ठुकरा दिया और अपने लिए निर्धारित किए गए परमेश्वर के मार्ग पर चला।

परमेश्वर ने हमें भविष्य के विषय में दिखाया जिससे कि वर्तमान में कठिनाइयों का सामना करने के लिए सहायता मिले। उसने हमारे लिए जो लक्ष्य निर्धारित किया है उसे पाने में जो सबसे असंभव बात है—सिद्ध बनना—इस कारण हमें चाहिए कि प्रतिदिन सहायता पाने हेतु उसकी ओर देखें। इसके लिए वह हमें अपनी सामर्थ से भरता है और आज्ञापालन के लिए अनुग्रह भी प्रदान करता है।

आपके लिए कार्य

3 निम्न वाक्य को पूरा करें। परमेश्वर हमें भविष्य के बारे में दिखाता है ताकि हम ....

....

परमेश्वर क्यों अपने प्रकाशन को सीमित करता है

विषयवस्तु 2. परमेश्वर क्यों भविष्य के निमित्त अपने प्रकाशन को सीमित करता है इसकी व्याख्याओं को चुनना।

परमेश्वर हमें प्रत्येक बातें एक ही बार में क्यों नहीं दिखा देता? क्या वह हम पर भरोसा नहीं कर सकता? प्रश्न यह नहीं है कि उसका हम पर कितना भरोसा है परन्तु प्रश्न यह है कि हमारा भरोसा उस पर कितना है।

यदि हमने भविष्य के लक्ष्य तक पहुँचने के लिए उन सब आवश्यक क़दमों पर ध्यान दिया है, तो हम कुछ को स्वीकार कर लेंगे और दूसरी बातों को नज़रअन्दाज़ कर देंगे। इस प्रकार पीछे हटने के द्वारा हो सकता है कि हम परमेश्वर की योजना के योग्य न ठहरें। **ज़ल्दबाज़ी** करने और कुछ आवश्यक माँगों का तिरस्कार करने के नमूने को हम कुछ मनुष्यों के जीवन से देखें जिनका वर्णन बाइबल में मिलता है।

यहोशू ने यरीहो पर विजय पा ली थी। अब केवल 'ऐ' नगर को जीतना शेष रह गया था। वह शीघ्र ही इस काम को भी समाप्त कर लेना चाहता था अतः उसने प्रभु परमेश्वर की अगुवाई पाए बिना ऐ पर आक्रमण कर दिया। परिणाम दुःखद व भयंकर हुआ (यहोशू 7:2-5)।

दाऊद राजा ने वाचा के सन्दूक (पवित्र सन्दूक जिसमें इस्राएल से की गई परमेश्वर की वाचा की प्रति रखी थी) को शीघ्र ही यरूशलेम को ले जाने का प्रयत्न किया। उसका लक्ष्य तो ठीक था। उसने कार्यकुशलता भी दिखाई परन्तु सन्दूक को जिस निश्चित तरीके से उठाकर ले जाया जाना था उसके स्थान पर उसने उस सन्दूक को बैलगाड़ी पर रखवा दिया (निर्गमन 25:12-14; यहोशू 3:2-4)। पुनः परिणाम, परमेश्वर के राज्य की उन्नति का कारण नहीं बना पर विनाश का कारण बना (2 शमूएल 6:6-8)।

जब पतरस को मालूम हुआ कि यीशु मध्यस्थ के रूप में क्रूस पर स्वयं बलिदान बनने जा रहा है तो वह यह ग्रहण नहीं कर सका था (मत्ती 16:22)। वह मसीह के उस अनुभव में मसीह के साथ चलने के बजाय तलवार से लड़ना चाहता था (यूहन्ना 18:10-11)।

ऐसा कहने का क्या अर्थ होता है," मैं अपने लिए परमेश्वर की इच्छा जानना चाहता हूँ"–इसका अर्थ यह है : "मैं परमेश्वर की योजना जानना चाहता हूँ ताकि यह निर्णय कर सकूँ कि मुझे क्या करना है।" परमेश्वर ने जो कुछ प्रकट किया है हमें उसकी सीमाओं को स्वीकार करना चाहिए तथा इस बात का निश्चय होना चाहिए कि परमेश्वर की इच्छा को जानने के निमित्त हमारे अभिप्राय सही हैं।

आपके लिए कार्य

4 परमेश्वर ने भविष्य के प्रति अपने प्रकाशन को क्यों सीमित किया इसका सबसे महत्त्वपूर्ण कारण यह है, क्योंकि–

(अ) भविष्य के प्रति हमारा ज्ञान इसे बदल नहीं सकेगा।

(ब) हम अक्सर ज़ल्दबाजी करने का प्रयत्न करते हैं अथवा बीच में उठाए जाने वाले क़दमों का तिरस्कार कर देते हैं।

(स) कभी-कभी हमारे लिए यह समझना कठिन होता है कि भविष्य में क्या होगा।

5 2 पतरस 3:10-11 पढ़िए। अपनी नोटबुक में यह लिखिए कि यह पद हमें क्यों बताता है कि उस ज्ञान के प्रति कि आकाश और पृथ्वी नाश किए जाएँगे हमें क्या करना चाहिए?

आज के लिए परमेश्वर की रूपरेखा (योजना)

विषयवस्तु 3. उन बातों और तरीकों का वर्णन करना जिनमें आप प्रत्येक दिन परमेश्वर की योजना के अनुसार चल सकते हैं।

आज आपके जीवन के लिए परमेश्वर की क्या इच्छा है? वह क्या चाहता है कि आप करें?

आत्मिक अनुभव कई तरह के होते हैं। मसीह में विशेष प्रकार के अनुभव केवल एक ही बार के अनुभव के प्रतीक हैं। इनमें से एक नया जन्म का अनुभव है, क्योंकि परमेश्वर अनन्तकाल का उद्धार देता है।

दूसरे प्रकार के अनुभव कभी-कभी होने वाले अनुभव प्रतीत होते हैं। जैसे कि सृष्टि की रचना एक-एक दिन के अनुसार हुई, वैसे ही ये मौसमी अनुभव हमारे आत्मिक जीवनों के लिए विशेष अवसर के लिए होते हैं। आत्मिक नवजागरण का एक विशेष समय—इनमें से एक अनुभव है। हम आत्मिक जागृति के चिरस्थायी होने वाले अनुभव में बने नहीं रहते। हम "वर्षा" की अपेक्षा करते हैं—आत्मिक नवजागरण—वर्षा के दिनों में वर्षा। परमेश्वर इन मौसमों के स्वरूप को अपने आत्मा और वचन की सेवा से स्वच्छ बनाता है।

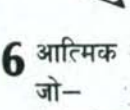

आपके लिए कार्य

6 आत्मिक अनुभव जो कि मौसमी है वह एक ऐसा अनुभव है जो—

(अ) नियत समयों पर होता है।

(ब) केवल एक बार होता है।

(स) लगातार हुआ करता है।

परन्तु केवल एक बार होने वाले तथा मौसमी अनुभवों के साथ ऐसे भी अनुभव हैं जो दिन प्रतिदिन के आधार पर होते हैं। परमेश्वर ने हमें एक ऐसे संसार में रखा है जिसमें उसने प्रतिदिन का चक्र निर्धारित किया है। क्योंकि हम दिन प्रतिदिन जीते हैं,

इसलिए उसने कुछ विशेष आत्मिक सिद्धान्त व नियम नियत किए हैं जिन्हें हमें दिन प्रतिदिन मानना है।

आइए देखें, प्रत्येक दिन के करने के लिए परमेश्वर हमसे क्या चाहता है तब देखें कि वह कौन सी प्रतिज्ञाएँ करता है।

पुराने नियम काल में जब मन्दिर (पवित्र स्थान) अथवा तम्बू प्रभु-परमेश्वर की उपस्थिति का स्थान था तब यही आराधना का केन्द्र हुआ करता था। इस पवित्रस्थान में याजक व लेवीय कहलाने वाले विशेष पुरुषों को सेवा-टहल हेतु निश्चित कार्य सौंपे जाते थे। इन कार्यों को प्रतिदिन पूरा करना होता था। प्रतिदिन के कर्तव्यों के प्रति आज्ञाकारी होने की प्रक्रिया अति आवश्यक थी, नहीं तो महान वार्षिक पर्वों को मनाना निरर्थक हो जाता।

यह तब की बात है जब जकर्याह पवित्र-स्थान (मन्दिर) में प्रतिदिन याजक पद के अपने कर्तव्यों को पूरा किया करता था तब

जिब्राएल स्वर्गदूत ने उससे कहा कि उसके एक पुत्र होगा जो परमेश्वर की प्रजा को आने वाले प्रभु के लिए तैयार करेगा (लूका 1:8-17)। यह उन दिनों की बात है, जबकि बूढ़ी हन्नाह जो एक नबिया थी मन्दिर में प्रतिदिन आकर प्रार्थना किया करती थी और उसे महान् सौभाग्य प्राप्त हुआ। उसने बालक यीशु के अर्पण को स्वयं अपनी आँखों से देखा और जगत के उद्धारकर्त्ता के दर्शन पाकर धन्यावाद करते हुए कृतार्थ हुई! (लूका 2:36-38)।

हमें प्रतिदिन क्या करना है?

पिन्तेकुस्त के दिन के बाद कलीसिया ने महान सफलता का अनुभव किया (प्रेरितों के काम 2:40-41)। विश्वासियों का व्यवहार उनके प्रतिदिन के कार्यों से आंका गया, इसके द्वारा उन पर परमेश्वर की आशीष बनी रही। प्रतिदिन की उनकी आत्मिक आराधना ठीक उसी प्रकार की थी जैसे पुराने नियम काल में याजकगण औपचारिक आराधना किया करते थे। उनका नमूना क्या था? इस की जाँच प्रेरितों के काम 2:44-47 से करें।

पहिली बात तो यह थी कि वे प्रतिदिन अपने भाइयों से अपने सम्बन्ध ठीक रखते थे। वे एक निकट की संगति में बने रहे (पद 44, 46)।

परमेश्वर के किसी जन से सही सम्बन्ध न रखने के अतिरिक्त अन्य कुछ भी कारण परमेश्वर की वाणी सुनने में बाधक नहीं बनता। आपके अन्दर पाई जाने वाली कड़वाहट, बदला लेने की भावना, ईर्ष्या अथवा अन्य बुरी भावनाएँ निश्चय ही परमेश्वर से बातचीत करने की आपकी योग्यता को कम कर देती हैं। प्रतिदिन अपने सम्बन्धों को जाँच लेना उत्तम होता है। बाइबल बताती है कि यदि सम्बन्ध बिगड़ गए हैं, तो उसी दिन सूरज ढलने से पहले अपने सम्बन्ध ठीक कर लें (इफिसियों 4:26)।

आपके लिए कार्य

7 अपनी नोटबुक में उन व्यक्तियों की सूची बनाएँ जो प्रतिदिन के जीवन में आपके लिए महत्त्वपूर्ण हैं। क्या इनमें से प्रत्येक के साथ आपके सम्बन्ध ठीक हैं? प्रतिदिन इनको जांचने की आदत बना लें और सही सम्बन्ध बनाए रखने के लिए जो आवश्यक है वह करें।

प्रेरितों के काम 2:46 में वर्णित एकता के अतिरिक्त उनमें उत्साह और साहस भरपूरी से था। इब्रानियों 3:13 हमें सीधा निर्देश देता है कि हम एक दूसरे की सहायता और उत्साहित करें।

एक दूसरे से सही सम्बन्धों के कारण ही हम प्रचार, सेवा और एक दूसरे की सहायता कार्य में संलग्न हो सकते हैं। रोमियों 12:1-2 के अनुसार नये हुए मन से आपको यह सब करने के अनेक अवसर प्राप्त होंगे।

दूसरी बात, उन्होंने प्रतिदिन परमेश्वर की स्तुति की (पद 46-47)। परमेश्वर के सन्तानों के लिए स्तुति करना प्रतिदिन का कार्य होना चाहिए। यह आज्ञापालन के बलिदान स्वरूप आरंभ किया जा सकता है, परन्तु परमेश्वर की भलाई के आनन्द के रूप में इसका अन्त होना चाहिए।

तीसरी बात, वे प्रतिदिन अपने समर्पण को नया बनाया करते थे। प्रेरितों के काम 2 में जो नमूना दिया गया वह दर्शाता है कि विश्वासीगण किस प्रकार अपने समर्पण को कार्यरूप देकर प्रकट किया करते थे। मसीह ने कहा कि जो कोई उसके पीछे चलना चाहता है उसे "प्रतिदिन अपना क्रूस उठाना होगा" (लूका 9:23)। इसके द्वारा मसीह कह रहा था कि प्रतिदिन हमें अपने आपको यह

स्मरण दिलाने की आवश्यकता है कि हम परमेश्वर के हैं। इस प्रकार के व्यवहार अथवा मन के बन जाने से सब कुछ परमेश्वर की महिमा के लिए किया जाएगा।

दाऊद ने यह सीखा था कि समर्पण में परमेश्वर के लिए वे बातें भेंट स्वरूप चढ़ाना सम्मिलित हैं जो उसने करने के लिए शपथ खाई है (भजन संहिता 61:8)

चौथी बात, वे प्रतिदिन की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए परमेश्वर पर निर्भर रहते थे। यही हमारा भी नमूना होना चाहिए। हमसे यह प्रार्थना करने को कहा, "आज की रोटी जो हमें आवश्यक है वह दे" (मत्ती 6:11)

आपके लिए कार्य

8 उस अक्षर पर गोला बनाएँ जिसमें किसी कार्य का वर्णन है जो प्रतिदिन के लिए आज्ञापालन का एक चक्र है।

(अ) एक लम्बे समय के लिए उपवास करना।
(ब) परमेश्वर की स्तुति और धन्यवाद करना।
(स) अपने आपको परमेश्वर को समर्पित करना।
(द) दूसरे से अपने सम्बन्ध ठीक रखना।
(य) नया जन्म का अनुभव पाना।

(र) प्रतिदिन की आवश्यकताओं के लिए परमेश्वर पर भरोसा रखना।

उपरोक्त बातों को करने से परमेश्वर की इच्छा पर चलना हमारे लिए कठिन नहीं होता।

उसने क्या प्रतिज्ञा की है? उसने कहा है कि वह अपने अनुग्रह से मिलने वाले लाभ को प्रतिदिन नया बनाएगा और हमारी सहायता करेगा (भजन संहिता 68:19)। हम आज के लिए उसके प्रावधानों का भरपूरी से प्रयोग करने के द्वारा दूसरे दिन (कल) मिलने वाले प्रावधानों को समाप्त नहीं करते हैं। उसका भण्डार अगम और अतुल है।

यही परमेश्वर का चक्र है...परमेश्वर ने इसे स्थापित किया है। प्रथम मानव आदम के लिए भी यही ठहराया गया था। इस्राएल जाति की आराधना सभाओं (उपासना पर्वों) में यही चक्र था। यह नये नियम की कलीसिया में भी था। और इस प्रतिदिन के चक्र में परमेश्वर हमारी अगुवाई करता है।

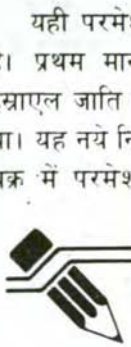

आपके लिए कार्य

9 हो सकता है कि आपने महसूस किया हो कि इस पाठ में बताए गए चार कारणों में से एक या अधिक के द्वारा आपको भी परमेश्वर की आज्ञा मानना आरंभ करने की आवश्यकता है। अपनी नोटबुक में नीचे दिए गए वाक्यों को पूरा करें जिनमें प्रतिदिन के आज्ञापालन के क्षेत्रों का विवरण दिया गया है।

(अ) (अध्ययन के प्रश्न 7 के सन्दर्भ में।) मुझे प्रतिदिन (प्रश्न सात में दी गई सूची) इन लोगों से अपने सम्बन्ध की जाँच कर लेना आवश्यक है।

(ब) प्रतिदिन परमेश्वर की स्तुति करने के लिए मैं यह तरीका अपनाऊँगा .....

(स) प्रतिदिन परमेश्वर के प्रति अपने समर्पण को नया बनाने का अर्थ है कि मुझे .....

(द) मुझे परमेश्वर पर भरोसा रखने की इसलिए आवश्यकता है कि वह मेरी प्रतिदिन की यह आवश्यकता पूरी करे .....

अब आपने **परमेश्वर की योजना–आपका चुनाव** को पूरी रीति से जान लिया है। यह हमारे लिए अत्यन्त प्रसन्नता का विषय है कि आप हमारे विद्यार्थी हैं और आशा करते हैं कि आप इन्टरनेशनल कॉरेस्पोन्डेन्स इन्स्टीट्यूट द्वारा और भी अधिक पाठ्यक्रमों का अध्ययन करेंगे। आपने जो सीखा है उसे व्यवहार में लाने हेतु परमेश्वर आपकी सहायता करें।

अपने उत्तरों को जांच लें

5 हमें प्रभु को समर्पित पवित्र जीवन जीना चाहिए। (आपका उत्तर भी इसी तरह का होना चाहिए।)

1 (ब) मैं परमेश्वर की योजना को अपने लिए जानना चाहता हूँ ताकि वह कर सकूँ जो वह चाहता है कि मैं करूँ।

6 (अ) नियतकालिक समयों पर।

2 (अ) ग़लत
(ब) सत्य
(स) ग़लत
(द) सत्य

7 आपका उत्तर। क्या कुछ है जिसे आपको क्षमा करना चाहिए। क्या आपको किसी से यह कहना चाहिए कि वह आपको क्षमा करे? यदि किसी से आपके सम्बन्ध टूट या बिगड़ गए तो यह जानने के लिए कि ऐसे में क्या किया जाना चाहिए–प्रभु से सहायता माँगें।

3 (अ) आपका उत्तर। मैं इसलिए ऐसा कहूँगा कि हमें आनंद मिले और वर्तमान परिस्थिति में कैसे प्रत्युत्तर दूँ इसे जान सकूँ।

8 (ब) परमेश्वर की स्तुति और धन्यवाद करना।
(स) अपने आपको परमेश्वर को समर्पित करना।
(द) दूसरों से अपने सम्बन्ध ठीक रखना।
(र) प्रतिदिन की आवश्यकताओं के लिए परमेश्वर पर भरोसा रखना।

4 (ब) हम अक्सर ज़ल्दबाज़ी करते हैं और तुरन्त उठाए जाने वाले कदमों को नज़रअन्दाज़ कर देते हैं।

9 आपका उत्तर। मुझे आशा है कि आपने उन व्यावहारिक तरीकों का वर्णन किया होगा जिनका आप अपने जीवन में सिद्धान्तों के रूप में पालन कर सकते हैं।

अन्तिम दो शब्द

यह एक विशेष प्रकार की पुस्तक है जिसे ऐसे लोगों ने लिखा है जिन्हें आपकी चिन्ता है। ये वास्तव में प्रसन्न लोग हैं, जिन्होंने अनेक प्रश्नों और समस्याओं के सटीक उत्तर अपने जीवन में पाए–जिनका सामना संसार में प्रायः प्रत्येक व्यक्ति किया करता है। ये प्रसन्नचित्त लोग विश्वास करते हैं कि परमेश्वर उनसे चाहता है कि जो उत्तर उन्होंने प्राप्त किए हैं उन्हें दूसरों को बताएँ। ये लोग विश्वास करते हैं कि आपको कुछ ऐसी महत्त्वपूर्ण जानकारी की आवश्यकता है जिससे कि आप भी अपने प्रश्नों और समस्याओं के उत्तर प्राप्त कर लें कि तथा जीवन का ऐसा मार्ग पा जाएँ जो आपके लिए सबसे उत्तम हो।

उन्होंने इस पुस्तक को इस लिए तैयार किया कि आपको यह महत्त्वपूर्ण जानकारी दें। आप इस पुस्तक को निम्नलिखित आधारभूत सत्यों पर आधारित पाएँगे:

1. आपको एक उद्धारकर्त्ता की आवश्यकता है। रोमियों 3:23, यहेजकेल 18:20 पढ़िए।
2. आप स्वयं अपना उद्धार नहीं कर सकते। तीमुथियुस 2:5, यूहन्ना 14:6 पढ़िए।
3. परमेश्वर की इच्छा है कि संसार का उद्धार हो जाए। यूहन्ना 3:16-17.
4. परमेश्वर ने यीशु को भेजा जिसने अपने प्राण दिए ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे वह उद्धार पाए। ग़लतियों 4:4-5, 1 पतरस 3:18 पढ़िए।
5. बाइबल हमें उद्धार का मार्ग बताती है और सिखाती है कि मसीही जीवन में कैसे बढ़ा जाए। यूहन्ना 15:5, यूहन्ना 10:10, 2 पतरस 3:18 पढ़िए।

6. आप स्वयं अपने अनन्तकाल की नियति (अन्त) का निर्णय करते हैं। लूका 13:1-5, मत्ती 10:32-33, यूहन्ना 3:35-36.

यह पुस्तक आपको अपनी नियति निर्धारण के विषय में बताती है और यह आपको ऐसे अवसर प्रदान करती है कि आप अपने निर्णय को प्रकट कर सकें। यह पुस्तक, अन्य पुस्तकों से भिन्न भी है क्योंकि यह आपके वह अवसर भी प्रदान करती है कि आप उन लोगों से सम्पर्क साध सके जिन्होंने इसे तैयार किया है। यदि आप कोई प्रश्न पूछना चाहते हैं या अपनी आवश्यकता व्यक्त करना चाहते हैं या जो भी आप महसूस करते हैं वह आप उन्हें लिखकर बता सकते हैं।

पुस्तक के अन्तिम पृष्ठ पर निर्णय रिपोर्ट या निवेदन कूपन पाएँगे। जब आप अपने जीवन में निर्णय लेते हैं तो बताए गए अनुसार इस कार्ड को भरकर भेज दीजिए। तब आप अधिक मार्गदर्शन प्राप्त करेंगे। आप इस निवेदन कूपन का प्रयोग प्रश्न पूछने या अपनी प्रार्थना व निवेदन अथवा अधिक जानकारी प्राप्त करने के लिए भी प्रयोग में ला सकते हैं।

यदि इस पुस्तक के साथ आपको कोई कार्ड या कूपन प्राप्त न हो तो ऐसी स्थिति में अपने आई.सी.आई प्रशिक्षक को लिखें और आपको व्यक्तिगत उत्तर प्राप्त होगा।

उत्तर पृष्ठ

परमेश्वर की योजना– आपका चुनाव

इन्टरनेशनल कॉरेसपोन्डेन्स इन्स्टीट्यूट

पोस्ट बैग नं० 1, एन्ड्रूज गंज
नई दिल्ली-110049

नीचे दिए रिक्त स्थान में साफ अक्षरों में भरें :

आपका नाम .....

आपका आई.सी.आई. विद्यार्थी क्रमांक .....

आपका पता .....

.....

प्रान्त ..... पिन कोड .....

आयु ..... लिंग ..... धर्म .....

व्यवसाय ..... तिथि .....

महत्त्वपूर्ण

यह आपके 'उत्तर-पृष्ठ' हैं। कृपया इन्हें सावधानीपूर्वक खींचकर बाहर निकाल लें और इन्हें भरकर हमें भेज दीजिए। हम इनको जांचेंगे और फिर आपको एक सुन्दर प्रमाण-पत्र भेजेंगे। और इसके द्वारा हम आपका आगामी पाठ्यक्रम में नामांकन भी कर सकेंगे।

पाठ 1-4

सही या गलत

निम्नलिखित कथन या तो सही हैं या गलत। सही उत्तर के सामने (✓) निशान लगायें।

1. परमेश्वर हमारे कार्य जानता है पर हमारे विचार नहीं।

... अ) सही ... ब) गलत

2. लोगों के लिए परमेश्वर की योजना में विविधता सम्मिलित है।
   ... अ) सही ... ब) गलत
3. लोग दुर्घटनावश या यूं ही मसीही बन जाते हैं।
   ... अ) सही ... ब) गलत
4. स्वर्ग में जाने के पश्चात् ही हम परमेश्वर की योजना में प्रवेश पाते हैं।
   ... अ) सही ... ब) गलत
5. हमारे असफल हो जाने के पश्चात् हम परमेश्वर से सहायता पाने की अपेक्षा नहीं कर सकते।
   ... अ) सही ... ब) गलत
6. विरोध होना हमें यह दिखा सकता है कि हम परमेश्वर की योजना का अनुसरण कर रहे हैं।
   ... अ) सही ... ब) गलत
7. जाँच व परीक्षाएँ हमारे विश्वास की बढ़ती में सहायक हो सकती हैं।
   ... अ) सही ... ब) गलत

एक से अधिक चुनाव

निम्न प्रश्नों में दिए गए उत्तरों में एक उत्तर सही है। सही उत्तर वाले अक्षर पर (✓) चिन्ह लगाएं।

8. हमारे लिए परमेश्वर का सही स्तर यह है कि हम निम्न के समान बनें।
   ... अ) यीशु के शिष्य ... ब) यीशु मसीह
   ... स) आत्मिक लोग जिनकी हम प्रशंसा करते हैं।
9. यह सच्चाई कि यीशु के सब शिष्य एक दूसरे से भिन्न थे निम्न सिद्धांत को बताता है–
   ... अ) ज्ञान ... ब) विविधता ... स) स्तर
10. पौलुस प्रेरित का जीवन हमें दर्शाता है कि–
    ... अ) असफलताएं परमेश्वर की योजना का अनुसरण करने हेतु असंभव नहीं बनाती।

... ब) वे जो कभी असफल नहीं हुए परमेश्वर को प्रसन्न कर सकते हैं।

... स) जो असफल हो गया उस व्यक्ति के लिए बहुत ही कम आशा है।

11. हमारे लिए परमेश्वर की योजना में हम वास्तविक रूप में तब प्रवेश पाते हैं जब–

... अ) परमेश्वर के वचन और पवित्र आत्मा की आज्ञा पालन करते हैं।

... ब) परमेश्वर हमसे क्या चाहता है इसकी खोज करने से।

... स) परमेश्वर की इच्छा दूसरों को समझाने से।

12. यीशु ने कहा कि उसका दूर चले जाना शिष्यों के लिए अच्छा होगा क्योंकि–

... अ) अन्य विश्वासी उनका और अधिक आदर करेंगे।

... ब) वे उन्हें तुरन्त प्रचार करना आरम्भ करना होगा।

... स) पवित्र आत्मा आएगा कि उनका मार्गदर्शन करे।

13. हम जानते हैं कि परमेश्वर हमारी अगुवाई करना चाहता है क्योंकि–

... अ) उसने हमें पवित्र आत्मा दिया है।

... ब) हम उसको खोजने में ईमानदार हैं।

... स) उसकी इच्छा जानना अत्यन्त कठिन है।

14. रोमियों 12:1-2 कहता है कि हमारा मन परिवर्तन होना चाहिये इसका मतलब है कि हमें चाहिये–

... अ) पूर्ण रूप से बदले हुए।

... ब) जो करना है उसके लिए बताया गया।

... स) अन्य विश्वासियों के समान नहीं।

15. हम परमेश्वर जो चाहता है (अपेक्षाएं) उन्हें पूर्ण करने में समर्थ हैं क्योंकि–

... अ) हम समझ सकते हैं कि वे क्या हैं।

... ब) परमेश्वर की सामर्थ वास्तव में हमसे कार्य करती है।

... स) हमारी शक्ति पूर्ण करने में संभव बनाती है।

16. यिर्मयाह ने कुम्हार के घर जो आत्मिक सबक सीखा वह यह था–
... अ) जहां असफलता होती है, वहां परमेश्वर कार्य करना बंद कर देता है।
... ब) असफलताएं परमेश्वर के अनुग्रह को सीमित करती है।
... स) परमेश्वर का अनुग्रह असफलताओं पर विजय पाता है।

17. परमेश्वर हमारे विश्वास की जांच करता है क्योंकि–
... अ) वह यह जानना चाहता है कि हम उस पर भरोसा करते हैं कि नहीं।
... ब) हमें यह जानने की आवश्यकता है कि हम उस पर कितना भरोसा रखते हैं।
... स) वह यह देखना चाहता है कि कहीं हम बाहरी सहायता पर तो निर्भर नहीं हैं।

18. यीशु ने कठिनाईयों का सामना करने के लिये शिष्यों की अगुवाई की क्योंकि शिष्यों को आवश्यकता थी कि–
... अ) अपनी असफलताओं के लिये दण्ड पायें।
... ब) पूर्ण रूप से यीशु पर निर्भर रहना सीखें।
... स) उसके सामने यह सिद्ध करें कि वे कितने शक्तिशाली हैं।

19. जब हम अपने पापपूर्ण मानवीय स्वभाव के कारण विरोधों का सामना करते हैं तो यह दर्शाता है कि हम परमेश्वर को प्रसन्न करने की कोशिश कर रहे हैं क्योंकि–
... अ) हमारा शरीर उन बातों की अभिलाषा करता है जो संसार देता है।
... ब) संसार उनसे घृणा करता है जो परमेश्वर के हैं।
... स) शरीर व आत्मा एक दूसरे का विरोध करते हैं।

विद्यार्थी जाँच–भाग-2

पाठ 5-8

सही या गलत

निम्नलिखित कथन या तो सही हैं या गलत। सही उत्तर के सामने (✓) चिन्ह लगाएं–

1. बाइबल कहती है कि हम "मसीह में" पवित्र और दोषरहित हैं।
   ... अ) सही ... ब) गलत
2. परमेश्वर "मसीह में" हमारी स्थिति से अधिक हमारे कार्यों को अधिक महत्त्वपूर्ण समझता है।
   ... अ) सही ... ब) गलत
3. परमेश्वर अविश्वासियों के द्वारा हमसे बोल सकता है।
   ... अ) सही ... ब) गलत
4. हमें यह निश्चय हो सकता है कि परमेश्वर हमारी अगुवाई करेगा।
   ... अ) सही ... ब) गलत
5. चूंकि मसीह परमेश्वर का पुत्र था अतः उसे सीखने के लिए मनुष्य जैसे अनुभव से नहीं गुजरना पड़ा।
   ... अ) सही ... ब) गलत
6. परमेश्वर ने भविष्य के विषय कुछ बातें हमें दिखाई हैं।
   ... अ) सही ... ब) गलत
7. कुछ कारण हैं जिन से लोग भविष्य के बारे में जानना चाहता है वे गलत हैं।
   ... अ) सही ... ब) गलत

एक से अधिक चुनाव

प्रत्येक प्रश्न में एक ही उत्तर सही है। सही उत्तर पर (✓) चिन्ह लगाएं।

8. हम पर दृष्टि डालते समय परमेश्वर निम्न में से एक को सबसे प्रमुख स्थान देता है–
   ... अ) हमारे उद्देश्य और व्यवहार।
   ... ब) प्रतिदिन के जीवन में हम कैसा बर्ताव करते हैं।
   ... स) हमारे लिए मसीह का कार्य।
9. हम परमेश्वर की योजना में निम्न में से एक के द्वारा महत्त्वपूर्ण बने रह सकते हैं।
   ... अ) हमें बदलने हेतु उसे निरन्तर अपना कार्य करने देना।
   ... ब) मसीह के कार्य में अपना भाग जोड़ना।
   ... स) आज्ञाकारी के लिए प्रतिक्षारत बने रहना जब तक कि हम अधिक न जान लें।

10. हमें पाप पर विजय मिल सकती है क्योंकि–
... अ) हमारे अन्दर ठीक काम करने की तीव्र इच्छा है।
... ब) मसीह ने हम पर से पाप के अधिकार को तोड़ दिया।
... स) पाप मात्र एक विचार या एक धारणा है।

11. परमेश्वर हमसे अपनी योजना के विषय प्राथमिक रूप से निम्न के द्वारा बोलता है–
... अ) दूसरों की सलाह।
... ब) अगुवों के आदेश।
... स) परमेश्वर के वचन।

12. सम्बन्ध का उदाहरण अधिकार पर आधारित होता है जिसके द्वारा परमेश्वर बोल सकता है कि व्यक्ति को उसका क्या होना चाहिए–
... अ) शासन ... ब) मित्रगण ... स) पड़ौसी

13. जब हम यह कहते हैं कि परमेश्वर अपनी योजना उत्तरोत्तर (प्रगतिशीलता में) हम पर प्रकट करता है तो इसका मतलब है कि अक्सर वह हमें अपनी योजना दिखाता है–
... अ) एक समय में एक कदम।
... ब) जैसा कि यह अन्त में होगी।
... स) सब कुछ एक ही साथ में।

14. बाइबल में यीशु के बाल्यकाल का विवरण दर्शाता है कि–
... अ) परमेश्वर के पूर्णरूपेण प्रसन्न करने के पूर्ण व्यक्ति को पूरी तरह बढ़ा हो जाना चाहिए।
... ब) लोग जो आत्मिक रूप से जागरूक हैं उन्हें किसी भी तरह के मानवीय अधिकार के प्रति झकना नहीं चाहिए।
... स) कभी-कभी सीमाबद्धताएं परमेश्वर की योजना का भाग होती हैं।

15. इब्रानियों 5:8 के अनुसार मसीह ने नियमानुसार आज्ञापालन सीखा–
... अ) विजय ... ब) दुःख सहने ... स) सफलता

16. परीक्षा पर विजय पाने का सबसे अच्छा उदाहरण निम्न अनुभव में वर्णित है–
    ... अ) यह सीखना कि हममें कौन सी कमजोरियां व असफलताएं हैं।
    ... ब) परिस्थितियों के बावजूद परमेश्वर की इच्छा का अनुसरण करना।
    ... स) यह खोज करना कि हम परमेश्वर की इच्छा में कहां चूक गए।

17. परमेश्वर भविष्य की सारी बातें हमें नहीं दिखाता क्योंकि–
    ... अ) भविष्य की घटनाओं के वर्णन सरलता से समझे नहीं जा सकते।
    ... ब) भविष्य की घटनाओं का प्रतिदिन के जीवन जीने में कोई मूल्य नहीं है।
    ... स) हम फिर जल्दबाजी करने लगेंगे या बीच के कदम नहीं उठाना चाहेंगे।

18. परमेश्वर हमें भविष्य की विशेष बातें दिखाता है ताकि हम–
    ... अ) वर्तमान परिस्थितियों का आशा के साथ सामना कर सकें।
    ... ब) यह निर्णय कर सकें कि भविष्य की घटनाएं कैसे घटेंगी।
    ... स) उन कदमों को उठाने से बच सकें जिन्हें हम सोचते हैं कि अनावश्यक हैं।

19. परमेश्वर की इच्छा को पूर्ण करने का सबसे आधारभूत रूप यह है कि–
    ... अ) किस व्यवसाय को चुनें इस बारे में सही निर्णय ले सकें।
    ... ब) प्रतिदिन के लिए परमेश्वर की इच्छा को उसी दिन पूरा करें।
    ... स) भविष्य के प्रकाशन हेतु परमेश्वर पर निर्भर रहें।

यदि आपने यीशु को उद्धारकर्त्ता करके ग्रहण (स्वीकार) किया है तो कृपया संक्षेप में बताइये।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

इन्टरनेशनल कॉरेस्पोन्डेन्स इन्स्टीट्यूट
पोस्ट बैग नं० 1, एन्ड्रूज गंज
नई दिल्ली-110 049

यहाँ से काटकर आई.सी.आई. प्रशिक्षक को भेजिए

निर्णय रिपोर्ट और निवेदन कूपन

इस पाठ्यक्रम का अध्ययन पूरा करने के बाद ..... मैंने प्रभु यीशु मसीह में अपना उद्धारकर्ता और प्रभु जानकर विश्वास किया है। मैं अपने हस्ताक्षर करके व पता लिखकर यह कूपन लौटा रहा/रही हूँ, जिसके दो कारण हैं। पहिला, मसीह के प्रति अपने समर्पण की साक्षी हूँ, दूसरा अपने आत्मिक जीवन में सहायता पाने हेतु और अध्ययन सामग्री प्राप्त कर सकूँ।

नाम _____

पूरा पता _____

_____

हस्ताक्षर _____

क्या आप जानना चाहेंगे...

- अपने जीवन के लिए परमेश्वर की योजना को मालूम करना?
- यह जानना कि परमेश्वर क्या चाहता है कि आगे मैं क्या करूँ?
- परमेश्वर की योजना के अनुसार अपने जीवन की रूपरेखा बनाना?
- भविष्य का सामना आश्वासन और आत्म-विश्वास के साथ करना?

यदि हाँ, तो 'परमेश्वर की योजना—आपका चुनाव' पुस्तक विशेष रूप से आपके लिए लिखी गई है। जो व्यवहारिक सुझाव इसमें दिए गए हैं उनसे आपको यह जानने में सहायता मिल सकती है कि परमेश्वर अपनी योजना के विषय किस प्रकार बोलता है और उसे आप अपने जीवन में किस प्रकार पूरी कर सकते हैं।

यह पुस्तक दिलचस्प स्वतः शिक्षण प्रणाली का प्रयोग करती है जिससे सीखने में आसानी हो। जब आप इसका अध्ययन करना आरंभ करते हैं तो दिए गए निर्देशों का पालन करते जाइए और फिर स्वयं की जांच कीजिए।

इन्टरनेशनल कारेसपोन्डेन्स इन्स्टीट्यूट
पोस्ट बैग नं. 1, एन्ड्रयूज गंज
नई दिल्ली-110 049